सुविचार
अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य- ये पांच कारण शिक्षा पाने के रास्ते में रुकावट पैदा करते हैं।

Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज़ Published from Ranchi

Ranchi ● Thursday, 08 February 2024 ● Year : 02 ● Issue : 22 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

12
श्रद्धा कपूर ने शेयर किया फोटो, दिया...

SHARE

संसेक्स	:	72,152.00
निफ्टी	:	21,930.50

SARAFA

सोना	:	5,960
चांदी	:	76.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

श्रीनगर में टारगेट किलिंग 2 युवकों को मारी गोली

SRINAGAR : जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में बुधवार की शाम 7 बजे के करीब आतंकियों ने टारगेट किलिंग को अंजाम दिया। हब्बा कदल इलाके में सिख समुदाय के दो लोगों को एके सीरीज राइफल से गोली मारी गई। अमृतसर के रहने वाले अमृत पाल (31) की मौके पर ही मौत हो गई। अमृतसर के ही रहने वाले रोहित (25) को पेट के बायीं तरफ गोली लगी है। उसका एसएमएचएस अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना के बाद सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी है और हमलावरों की तलाश जारी है।

केजरीवाल की 17 फरवरी को कोर्ट में पेशी

NEW DELHI : दिल्ली शराब नीति केस में जांच कर रही ईडी की शिकायत पर कोर्ट ने केजरीवाल को समन भेजा है। इससे पहले जांच एजेंसी ने सीएम अरविंद केजरीवाल को 5 बार समन भेजा था। केजरीवाल इन समन को राजनीति से प्रेरित बताकर अभी तक ईडी के सामने पेश नहीं हुए। इसे लेकर ईडी ने 3 फरवरी को दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में शिकायत दर्ज कराई थी, जिस पर कोर्ट ने केजरीवाल को समन भेजकर 17 फरवरी को पेश होने को कहा है। उधर, कोर्ट में ईडी की शिकायत को लेकर दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा- भाजपा और मोदी अपने विरोधियों को खत्म करने के लिए ईडी का इस्तेमाल कर रहे हैं। केजरीवाल इस लिस्ट में नंबर एक पर हैं। ईडी ने केजरीवाल को 5वां समन भेजकर 2 फरवरी को बुलाया था। इससे पहले 17 जनवरी, 3 जनवरी, 21 दिसंबर और 2 नवंबर को भी केजरीवाल को समन भेजा जा चुका है। शराब नीति केस में ही केजरीवाल के नंबर दो रह चुके दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया और आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह जेल में हैं।

अब आत्मनिर्भर होने का समय : सीडीएस

NEW DELHI : चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने कहा है कि अब भारत में अत्यधिक सक्षम आत्मनिर्भर 'डिफेंस स्पेस इकोसिस्टम' के निर्माण का समय है। उन्होंने भारतीय उद्योग जगत से देश की अंतरिक्ष संपत्तियों की सुरक्षा के लिए काउंटर-स्पेस क्षमताओं को बढ़ाने पर काम करने का आह्वान किया। उन्होंने जोर देकर कहा है कि चूंकि देश अमृत काल से गुजर रहा है, इसलिए अंतरिक्ष संवर्धन से लेकर अन्वेषण तक सरकार ने राष्ट्र के लिए बड़े लक्ष्यों की कल्पना की है। सीडीएस चौहान बुधवार को दिल्ली कैंट के मानेकशॉ सेंटर में तीन दिवसीय अंतरिक्ष संगोष्ठी का उद्घाटन करने के बाद संबोधित कर रहे थे।

फिर पांच दिनों की ईडी रिमांड पर हेमंत सोरेन

कोर्ट में हुई पेशी, हेमंत सोरेन जिंदाबाद से गूंजा परिसर

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और कथित जमीन घोटाला मामले में गिरफ्तार हेमंत सोरेन को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों ने बुधवार को भारी सुरक्षा के बीच पीएमएलए कोर्ट में पेश किया। ईडी के विशेष जज दिनेश राय ने हेमंत सोरेन को फिर पांच दिन की ईडी रिमांड पर भेज दिया है। ईडी ने कोर्ट से 7 दिन की रिमांड मांगी थी, लेकिन विशेष जज ने सिर्फ 5 दिन की हिरासत दी। हेमंत सोरेन के वकील ने पीएमएलए कोर्ट में दलील दी कि 5 दिन की रिमांड में 120 घंटे पूछताछ की गई। 20 जनवरी और 31 जनवरी को भी ईडी की टीम ने हेमंत सोरेन से पूछताछ की। दो दिन में करीब 16 घंटे तक उनके मुवक्किल से पूछताछ चली। ऐसे में अब और पूछताछ का कोई आधार नहीं बनता है।

हेमंत सोरेन को लेकर ईडी अफसर पहुंचे कोर्ट : इससे पहले कड़ी सुरक्षा में हेमंत सोरेन को लेकर ईडी के अधिकारी पीएमएलए कोर्ट पहुंचे। कोर्ट परिसर में पहले से सुरक्षा व्यवस्था कड़ी थी। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता और कार्यकर्ता हेमंत सोरेन के आने से पहले ही कोर्ट परिसर में पहुंच गए थे। जैसे ही हेमंत सोरेन वहां पहुंचे, झामुमो नेता और कार्यकर्ता हेमंत सोरेन जिंदाबाद के नारे लगाने लगे।

सीआरपीएफ ने सुरक्षा घेरा बनाकर कोर्ट रूम पहुंचाया : पूरा कोर्ट परिसर हेमंत सोरेन जिंदाबाद से गुंजायमान हो गया। भीड़ को देखते हुए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जवानों ने सुरक्षा घेरा बनाकर हेमंत सोरेन को कोर्ट रूम तक पहुंचाया। कोर्ट में सुनवाई शुरू हुई। जज ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुनाया।

- भारी सुरक्षा के बीच पीएमएलए कोर्ट में पूर्व सीएम को किया गया पेश
- ईडी ने कोर्ट से 7 दिन की रिमांड मांगी थी, जज ने 5 दिन की हिरासत दी
- 5 दिनो की रिमांड में हेमंत सोरेन 120 घंटे पूछताछ कर चुकी है ईडी

सीआरपीएफ के सुरक्षा घेरे में ईडी कोर्ट पहुंचे झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन।

हेमंत के दिल्ली आवास में छापेमारी के दौरान मिले थे जमीन से संबंधित दस्तावेज

पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और बरियातू के बड़गाई अंचल के राजस्व निरीक्षक (हल्का कर्मचारी) भानु प्रताप प्रसाद के जमीन के दस्तावेज से संबंधित कई कागजात ईडी को मिले हैं। ईडी को भानु प्रताप प्रसाद के आवास से मिले दस्तावेज से संबंधित कई कागजात ईडी को हेमंत सोरेन के दिल्ली आवास पर छापेमारी के दौरान मिले हैं। ईडी इस नये तथ्य पर भी अनुसंधान कर रहा है। इसकी जानकारी ईडी ने हेमंत सोरेन को सात दिनों की रिमांड पर मांगे जाने के दौरान बुधवार को कोर्ट को दी है। हालांकि, हेमंत सोरेन की ओर से रिमांड का विरोध करते हुए महाधिवक्ता राजीव रंजन ने ईडी के विशेष न्यायाधीश दिनेश राय की कोर्ट को बताया था कि रिमांड के दौरान ईडी हेमंत सोरेन को बेसमेंट में रख रही है, जहां खिड़की नहीं है। दिन-रात सुरक्षा कर्मियों का कड़ा पहरा उनके ऊपर लगा रहता है। गिरफ्तारी के पूर्व भी आठ-आठ घंटे दो बार ईडी उनसे पूछताछ कर चुकी है। इसके बाद पांच दिन में 120 घंटा पूछताछ कर चुकी है। इसलिए अब ईडी को और रिमांड पर हेमंत को ना दिया जाये। इस पर ईडी की ओर से बताया गया कि हेमंत सोरेन की सुरक्षा को लेकर ईडी ने काफी पुख्ता इंतजाम किये हैं। उनके कमरे में एसी भी लगा दिया गया है। ईडी की ओर से कोर्ट को हेमंत सोरेन और व्यवसायी विनोद सिंह के साथ ट्रांसफर पोस्टिंग से संबंधित व्हाट्सएप चैट भी मिला है। व्हाट्सएप चैट में आईएएस अधिकारियों के ट्रांसफर पोस्टिंग के सबूत ईडी को मिले है।

कोलकाता में योगेश के ठिकानों पर छापा

RANCHI : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता हेमंत सोरेन की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रहीं हैं। रांची स्थित प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की विशेष अदालत में पेशी से पहले पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में उनके करीबियों के यहां बुधवार को छापेमारी हुई। मामला शेल कंपनी के जरिए मनी लाउंडरिंग से जुड़ा है। मामला शेल कंपनी से जुड़ा है, जिसके तार झामुमो नेता और सूबे के पूर्व मुखिया से जुड़े हैं, ऐसा बताया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, रांची में वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में बंगाल की राजधानी कोलकाता के मुदियाली में रेड करने के लिए रांची से ईडी की टीम पहुंची। रांची की टीम ने मुदियाली में योगेश अग्रवाल नामक कारोबारी के घर दबिश दी है। छापेमारी करने के लिए पहुंची ईडी की टीम में एक महिला समेत कुल अधिकारी हैं।

ईडी के हाथ लगा विनोद का व्हाट्सएप चैट, कई खुलासे होने की संभावना

RANCHI : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को जांच के दौरान सत्ता के आला नेताओं के करीबी रहे विनोद सिंह का व्हाट्सएप चैट हाथ लगा है। इसमें कई खुलासे होने की संभावना है। किसी को डीसी तो किसी को डीडीसी बनाने का आफर दिया गया है। इतना ही नहीं इसके लिए डिमांड भी की गई है। इससे साफ है कि बिनोद सिंह आईएएस अधिकारियों की ट्रांसफर पोस्टिंग भी करवा रहा था। ईडी को जो चैट हाथ लगा है वह जून 2020 का है। चैट में कोई रिप्लाई नहीं मिला है। बताया गया है कि विनोद सिंह के ठिकाने पर छापेमारी के दौरान ईडी को जेएसएससी की नियुक्ति परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों के एडमिट कार्ड की फोटो कॉपी भी मिली है। उल्लेखनीय है कि छह फरवरी को ईडी ने आर्किटेक्ट विनोद सिंह को ईडी ऑफिस में पूछताछ के लिए बुलाया था। दस्तावेजों की जांच और पूछताछ करने के बाद ईडी ने उन्हें वापस भेज दिया था।

चंपाई सोरेन ने विभिन्न विभागों के साथ की हाईलेवल मीटिंग

उपभोक्ताओं को अब 125 यूनिट बिजली मिलेगी फ्री : मुख्यमंत्री

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि बिजली सब्सिडी में जल्द बढ़ोतरी की जाएगी। बिजली उपभोक्ताओं को अब 100 यूनिट की बजाय 125 यूनिट बिजली मुफ्त देने के साथ सभी वंचित टोलों में बिजली पहुंचाई जाएगी। इस संबंध में ऊर्जा विभाग को प्रस्ताव तैयार करने का उन्होंने निर्देश दिया। मुख्यमंत्री बुधवार को झारखंड मंत्रालय में वित्तीय वर्ष 2023-24 के राजस्व प्राप्ति और व्यय को लेकर विभिन्न विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव, सचिव के साथ उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक कर रहे थे। इस मौके पर उन्होंने विभिन्न विभागों के बजटीय प्रावधान और वास्तविक प्राप्ति तथा खर्च की जानकारी ली। उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं की भी समीक्षा करते हुए अधिकारियों को के आवश्यक निर्देश दिए।

कार्यों में तेजी लाने का निर्देश : मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को विभिन्न योजनाओं के कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया, ताकि यहां की ज्यादा से ज्यादा जनता को इसका लाभ दे सकें। मुख्यमंत्री ने जनहित से जुड़ी तमाम योजनाओं को समय पर पूरा करने को भी कहा। उन्होंने स्वीकृत योजनाओं का कार्य जल्द शुरू करने और लंबित योजनाओं को पूर्ण करने का भी निर्देश दिया।

- जनहित से जुड़ी तमाम योजनाओं को समय पर पूरा करने का दिया निर्देश
- जनहित से जुड़ी तमाम योजनाओं को समय पर पूरा करने का दिया निर्देश

अधिकारियों के साथ बैठक करते सीएम चंपाई सोरेन।

वित्तीय प्रबंधन को करें बेहतर

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को वित्तीय प्रबंधन को और भी बेहतर बनाने को कहा। उन्होंने कहा कि चालू वित्तीय वर्ष की समाप्ति में अब दो महीने से कम का समय बचा है। ऐसे में सभी विभाग अपने बजट की राशि के खर्च में तेजी लाएं ताकि जो लक्ष्य निर्धारित है, उसे पूरा कर सकें। मुख्यमंत्री ने बैठक में विभागवार केंद्र प्रायोजित योजनाओं के उपलब्धियां की जानकारी ली। वित्त विभाग ने मुख्यमंत्री को बताया कि केंद्र सरकार से केंद्र प्रायोजित योजनाओं के लिए जो राशि मिली है, उसे खर्च करने के लिए सभी विभागों को आवश्यक निर्देश दिए जा चुके हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस राशि के खर्च के बाद अतिरिक्त राशि उपलब्ध कराने के लिए केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने दिए ये अहम निर्देश

- सभी सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों की उपस्थिति सुनिश्चित करने का निर्देश।
- सरकार द्वारा धान क्रय को लेकर किसानों को समय पर राशि का भुगतान सुनिश्चित करें।
- हरा राशन कार्डधारियों को हर महीने अनाज देने और पीडीएस डीलरों के कमीशन बढ़ाने की प्रक्रिया जल्द पूरी करें।
- जनजातीय भाषाओं के लिए शिक्षक नियुक्ति की प्रक्रिया जल्द पूरी हो।
- 12वीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों को गुरुजी क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराने की पहल जल्द शुरू होनी चाहिए।
- यूनिवर्सल पेंशन स्कीम के लिए 50 वर्ष की आयु सीमा पूरी करने वाली महिलाओं के चयन का अभियान शुरू करने का दिया निर्देश।

चंपाई मंत्रिमंडल का विस्तार 16 को

- चार साल से खाली पड़ा 12वां मंत्री पद को कांग्रेस अपने कोटे से भर सकती है
- सीता सोरेन व बसंत सोरेन में से किसी एक को बनाया जा सकता मंत्री या उप मुख्यमंत्री

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन सरकार के मंत्रिमंडल का विस्तार 16 फरवरी को दोपहर तीन बजे होगा। यह जानकारी बुधवार को राजभवन ने दी है। पांच फरवरी को विधानसभा में फ्लोर टेस्ट पास करने के बाद आठ फरवरी को दिन के 2.30 बजे शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन की तैयारी की गयी थी लेकिन अब समय बदल दिया गया है। मुख्यमंत्री ने तारीख आगे बढ़ाने के लिए राजभवन से आग्रह किया है। अब यह शपथ ग्रहण समारोह 16 फरवरी को होगा। बताया गया है कि मंत्री पद के सबसे प्रबल दावेदारों में पोड़ैयाहाट विधायक प्रदीप यादव, सिमडेगा विधायक भूषण बारा, मनिका विधायक रामचंद्र सिंह, बेरमो विधायक जयमंगल सिंह अनुप, महगामा विधायक दीपिका सिंह पांडेय और झरिया विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह हैं। इन छह दावेदारों में से तीन नामों पर मुहर लगनी है।

महिला से सात दिन तक रेप, गर्म दाल से जलाया

दिल्ली में पीड़ित का कुक दोस्त गिरफ्तार

AGENCY NEW DELHI : दिल्ली में दार्जीलिंग की एक महिला के साथ उसके दोस्त ने दिल्ली में 7 दिन तक रेप किया। आरोपी ने न केवल पीड़ित को पीटा, बल्कि गर्म दाल डालकर टॉर्चर भी किया। घटना 30 जनवरी को सामने आई थी। दिल्ली के नेब सराय पुलिस स्टेशन में कॉल आया था, जिसमें बताया गया कि एक महिला को उसका पति पीट रहा है। इसके बाद पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची। यहां

पीड़ित महिला को बचाया और एम्स पहुंचाया। महिला के शरीर पर चोट के 20 निशान पाए गए। पुलिस ने आरोपी को 2 फरवरी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान पारस (28) के रूप में हुई है। वह उत्तराखंड का रहने वाला है और दिल्ली में एक होटल में कुक था।

हरदा फैक्ट्री ब्लास्ट में मृतकों की संख्या 11

HARDA : मध्यप्रदेश के हरदा में पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट के करीब 26 घंटे बाद रेस्क्यू ऑपरेशन पूरा कर लिया गया है। इस हादसे में 11 लोगों की मौत हुई है। 217 लोग घायल हो गए, इनमें फैक्ट्री के 51 मजदूर शामिल हैं। 184 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। इधर, बुधवार को सीएम डॉ. मोहन यादव हरदा पहुंचे। जहां उन्होंने जिला अस्पताल जाकर घायलों का हाल जाना। सीएम ने कहा कि इस मामले में ऐसी कार्रवाई करेंगे कि लोग याद रखेंगे। हरदा हादसे के करीब 31 घंटे बाद एसपी संजीव कुमार कंचन को हटा दिया गया है। उन्हें पुलिस मुख्यालय में सहायक पुलिस महानिरीक्षक पद पर पदस्थ किया गया है।

पुलिस-उग्रवादियों में मुठभेड़, दो जवान शहीद

चतरा में घात लगाए उग्रवादियों ने जवानों पर की फायरिंग, दो जवान घायल, एक रांची एयरलिफ्ट

CRIME REPORTER CHATRA : चतरा जिले के वशिष्ठ नगर थाना क्षेत्र में बुधवार की शाम पुलिस और टीएसपीसी के उग्रवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में दो जवान बलिदान और दो घायल हो गए। शहीद जवानों में कांस्टेबल सिकंदर सिंह और सुकन राम शामिल है। जबकि दो जवान घायल हुए है। इसमें गंभीर रुप से घायल आकाश सिंह को एयरलिफ्ट कर रांची लाया गया। आकाश सिंह को आर्किड अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जबकि एक जवान का इलाज चतरा में चल रहा है।

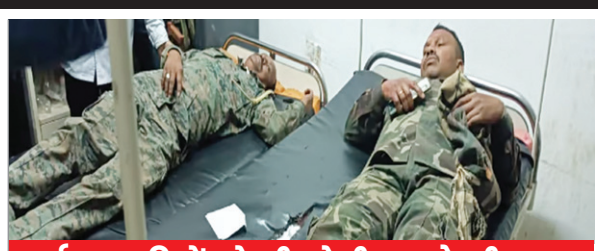

कई उग्रवादियों को भी गोली लगने की सूचना

सदर थाना और जोरी बॉर्डर पर स्थित बैरियोतरी जंगल में मुठभेड़ हुई। सभी जवान वन विभाग की संयुक्त टीम के साथ गमहारतरी गांव से लौट रहे थी। अभियान में कई उग्रवादियों को भी गोली लगने की सूचना है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। एसडीपीओ संदीप सुमन ने बताया कि अफीम विनष्टीकरण और नक्सल विरोधी अभियान पर निकले सुरक्षाबलों पर लौटने के दौरान घात लगा कर बैठे उग्रवादियों ने फायरिंग की। प्रथम द्रष्टया टीएसपीसी दस्ते की ओर से मुठभेड़ को अंजाम देने की बात सामने आई है।

चतरा जिले में नक्सली मुठभेड़ के दौरान दो जवानों के शहीद होने की खबर से मर्माहत हूं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा परिजनों को यह दुख सहने की शक्ति दें। हमारी सरकार शहीदों के परिवारों के साथ खड़ी है, और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। मैंने घायल जवानों को बेहतर चिकित्सा उपलब्ध करवाने का निर्देश दिया है। उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

चंपाई सोरेन, सीएम।

राज्यसभा में बोले पीएम- मोदी 3.0 विकसित भारत की नींव को मजबूत करने में पूरी शक्ति लगा देगा

पांच वर्षों में देश कई क्षेत्रों में उन्नति करेगा : प्रधानमंत्री

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को तीसरी बार सत्ता में वापसी पर विश्वास जताते कहा कि मोदी 3.0 विकसित भारत की नींव को मजबूत करने में पूरी शक्ति लगा देगा। प्रमुख घोषणाओं में उन्होंने सौर ऊर्जा के जरिए मुफ्त बिजली, बुलेट ट्रेन, सभी के लिए पाइप से गैस, हर घर में पाइप से पानी और सभी के लिए आवास उपलब्ध कराने की बात कही।

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर राज्यसभा में चर्चा का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उनके अगले कार्यकाल के पांच वर्षों में देश कई क्षेत्रों में उन्नति करेगा। अगले पांच सालों में खेल के क्षेत्र में दुनिया में भारत के युवाओं की ताकत पहचानी जाएगी। सार्वजनिक परिवहन की कायापलट होगी। रूफटॉप सॉलर से लोगों को मुफ्त बिजली मिलेगी। बुलेट ट्रेन और वंदे भारत का विस्तार होगा। सेमीकंडक्टर जगत में मेड इन इंडिया की गूंज होगी। इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में देश अग्रणी होगा। हमारे गांव के छोटे-छोटे किसानों द्वारा उत्पादित सुपरफूड मोटा अनाज विश्व बाजार में उपलब्ध होगा। ड्रोन किसानों के लिए नई ताकत बनेगा और पशुपालन एवं मछली पालन बढ़ेगा। प्रधानमंत्री ने सहकारी संघवाद को अपनी सरकार की प्राथमिकता बताया और कहा कि देश का विकास राज्यों के विकास के साथ ही संभव है। वे विश्वास दिलाते हैं कि अगर राज्य एक कदम चलता है तो हम दो कदम चलते हैं।

यूसीसी लागू करने वाला देश का पहला राज्य बना उत्तराखंड

UTTERAKHAND : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार द्वारा पेश किया गया समान नागरिक संहिता उत्तराखंड 2024 विधेयक (यूसीसी) सदन में पारित हो गया। विधानसभा में यूसीसी बिल पास होने के बाद उत्तराखंड समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। इधर समान नागरिक संहिता 2024 विधेयक सदन में पारित होने के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की मौजूदी में विधायकों ने जश्न मनाया और मिठाइयां बांटीं। उत्तराखंड विधानसभा में सीएम पुष्कर सिंह धामी ने यूसीसी पर कहा, संविधान के सिद्धांतों पर काम करते हुए हमें समान नागरिक संहिता की जरूरत है। अब समय आ गया है कि हम वोट बैंक की राजनीति और राजनीतिक व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठें और एक ऐसे समाज का निर्माण करें जो बिना किसी भेदभाव के समान और समृद्ध हो।

अमीरात में पहले हिंदू मंदिर का 14 को मोदी करेंगे उद्घाटन

NEW DELHI : संयुक्त राष्ट्र अमीरात (यूएई) की राजधानी अबूधाबी का पहला हिंदू मंदिर पूरी तरह से बनकर तैयार है। इस मंदिर में विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 14 फरवरी को पूरा होगा। उसी दिन बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण (बीएपीएस) संस्था के प्रमुख संत स्वामी महाराज के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंदिर का उद्घाटन करेंगे। रेगिस्तान में मंदिर निर्माण की कल्पना 27 वर्ष पूर्व बीएपीएस संस्था के प्रमुख संत स्वामी महाराज ने की थी। नई दिल्ली के अक्षरधाम स्थित बीएपीएस रिसर्च इंस्टीट्यूट के सहायक निदेशक साधु ज्ञानानंद स्वामी ने हिन्दुस्थान समाचार को बताया कि वैसे तो संस्था ने विश्व के कई देशों में 1100 से अधिक मंदिर बनवाए हैं लेकिन अरब मुस्लिम देश में हिंदू मंदिर का निर्माण अपने में ऐतिहासिक है।

पाक में धमाका, 25 की मौत, 42 से अधिक घायल

आम चुनाव से एक दिन पहले दो विस्फोट

AGENCY NEW DELHI : पाकिस्तान में गुरुवार को होने वाले आम चुनाव से पहले अशांत बलूचिस्तान प्रांत में दोहरे विस्फोटों में कम से कम 25 लोगों की मौत। जबकि धमाके में 42 से अधिक लोगों के घायल हो गए। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, पहली घटना में, पिशिन जिले में निर्दलीय उम्मीदवार असफंदयार खान काकड़ के कार्यालय के बाहर एक भीषण विस्फोट में 17 लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। एक घंटे से भी कम समय के बाद, किला अब्दुल्ला क्षेत्र में जमीयत उलेमा

इस्लाम के चुनाव कार्यालय के बाहर एक और बम विस्फोट हुआ, जिसमें आठ लोगों की जान चली गई और 12 अन्य घायल हो गए। बलूचिस्तान के पंजगुर के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अब्दुल्ला जहरी ने बताया कि उम्मीदवार असफंदयार खान काकड़ के चुनाव कार्यालय के बाहर एक बैग में बम रखा गया था जिसमें टाइमर लगा था।

BRIEF NEWS

बाइक सवार नकाबपोशों ने की फायरिंग, ठेकेदार से मांगी लेवी

CHATRA : जिले के टंडवा थाना क्षेत्र में चार नकाबपोशों ने उत्तराठी गांव में लेवी की मांग करते हुए फायरिंग की घटना को अंजाम दिया और टीपीसी का पर्चा छोड़ा। हालांकि, इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। जानकारी के अनुसार टंडवा थाना क्षेत्र में मंगलवार शाम दो बाइक से आए चार नकाबपोशों ने उतराठी गांव में चल रहे सड़क निर्माण कार्यों को बाधित किया। साथ ही हवाई फायरिंग कर ठेकेदार से लेवी मांगी। घटना की सूचना पर बुधवार सुबह पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की छानबीन शुरू की। आशंका है कि टीपीसी के नाम पर अपराधियों ने घटना को अंजाम दिया हो। फिलहाल, जांच-पड़ताल कर रही है।

दो सड़क हादसों में महिला की मौत, दो घायल

GIRIDIH : जिले के बगोदर थाना क्षेत्र में बुधवार को दो सड़क दुर्घटनाओं में एक महिला की मौत हो गई जबकि दो अन्य घायल हो गए, जिसमें एक मैट्रिक की छात्रा है। घायलों का इलाज बगोदर ट्रॉमा सेंटर में चल रहा है। जिस गाड़ी से महिला की मौत हुई उसे भी पुलिस ने जब्त कर लिया है। पहली घटना जीटी रोड औंरा की है। यहां रोड पार कर रही वृद्ध महिला को मालवाहक वैन ने रौंद दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। मृतका का नाम बुंदिया देवी है और वह बखरीटोला की रहने वाली थी। दूसरी घटना बगोदर-सरिया रोड की है। यहां भी रोड पार कर रही मैट्रिक की छात्रा को एक बाइक सवार ने टक्कर मार दिया, जिससे मैट्रिक की छात्रा हेमंती कुमारी घायल हो गई। बाइक चालक बगोदर का रहने वाला अजीत कुमार यादव भी घायल हो गया। दोनों का इलाज बगोदर के ट्रॉमा सेंटर में किया गया।

मुफ्ती सलमान ने गलोस ऑटो इस्पा का किया उद्घाटन

RANCHI : राजधानी रांची के कांटा टोली चौक स्थित गलोस ऑटो इस्पा का उद्घाटन मुफ्ती सलमान कासमी, झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता, एफ टी उर्दू अखबार के अंस्थापक हाफिज अबुबकर द्वारा संयुक्त रूप से फीता काट कर किया गया। इस अवसर पर सेंटर के संचालक शाहनवाज आलम, रजी अहमद ने बताया कि वाशिंग सेंटर में चार पहिया व दो पहिया वाहनों की वाशिंग आधुनिक तरीके से की जाएगी। अंदर से लेकर बाहर तक की वाशिंग उचित मूल्य पर की जाती है। हाफिज अबुबकर ने कहा कि इस रोड में वाशिंग सेंटर की जरूरत थी। वहीं कांग्रेस प्रवक्ता खुर्शीद हसन रूमी ने कहा कि आसपास के क्षेत्रों के बेरोजगार युवक युवतियां इस तरह के छोटे-मोटे व्यावसायिक प्रतिष्ठान खोलकर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। मौके पर शाहनवाज आलम, रजी अहमद, मुफ्ती शहाबुद्दीन, सोहेल, मेराज उद्दीन,मिन्हाज, मो अली, मो ओसामा, आफताब, मो अनस, सिबगतुल्लाह, हाफिज सईद समेत काफी संख्या में शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सोनाहातू में विवि व उच्च तकनीक अस्पताल का हो निर्माण : एनपीपी

RANCHI : राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान में दूसरे जिलों से मरीज उपचार के लिए आते हैं। 1960 के बाद अब तक उच्च तकनीक का अस्पताल झारखंड राज्य में नहीं बना है। मरीजों की बढ़ती संख्या से डॉक्टर नर्स पैथोलॉजी सफाई कर्मी अनुपात में कम है। शहर में बढ़ती प्राइवेट अस्पताल के कारण सरकारी अस्पताल भ्रष्टाचार का कारण बन रही है। चिकित्सा, स्वास्थ्य शिक्षा एवं परिवार कल्याण मंत्रालय झारखंड सरकार द्वारा अब तक उपरोक्त विषय पर संज्ञान नहीं लिया गया। रांची विश्वविद्यालय एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी में पढ़ाई सिर्फ शहर के छात्र एवं छात्राओं के लिए उपयुक्त है। उच्च शिक्षा एवं चिकित्सा पर विशेष ध्यान देना सरकार की प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए। विश्वविद्यालय की संख्या 10 तक होनी चाहिए तभी ग्रामीण छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्त होगी।

सिमडेगा से रांची जा रही यात्री बस में पुलिस ने की छापामारी

20 किलो अवैध गांजा के साथ मां-बेटी को पुलिस ने धर दबोचा

PHOTON NEWS KHUNTI : तोरपा थाना पुलिस ने मंगलवार को सिमडेगा से रांची जा रही मंत्री नामक यात्री बस (जेएच 01 इएफ 8997) में छापामारी कर दो महिला गांजा तस्करों को गिरफ्तार कर उनके पास से दस किलो अवैध गांजा बरामद किया है। गिरफ्तार दोनों मां-बेटी हैं।

तोरपा के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी खिस्टोफर केरकेट्टा ने बुधवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि पुलिस अधीक्षक अमन कुमार को गुप्त सूचना मिली थी कि दो महिलाएं मंत्री से भारी मात्रा में

बरामद गांजे के साथ जानकारी देती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

गांजा लेकर रांची की ओर जा रही हैं। सूचना के सत्यापन और आवश्यक कार्रवाई के लिए तोरपा के एसडीपीओ के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर तोरपा थाना क्षेत्र के कुल्डा जंगल के पास बस को रोक छापामारी कर गीता देवी और उसकी बेटी पिंकी कुमारी को 20 किलो गांजा के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार दोनों महिलाएं गांगूटोली थाना जलडेगा जिला सिमडेगा की रहने वाली है, पर काफी अर्से से दोनों पंजाब के करतारपुर में रहती हैं।

एसडीपीओ न बताया कि 20 किलो गांजा दस-दस किलो के सीलबंद पैकेट में भरा था। एसडीपीओ ने बताया कि गांजा का गंध नहीं आये, इसके लिए बैग में कुछ सूखी मछलियां रख दी गई थी। गिरफ्तार महिलाओं ने पुलिस को बताया कि वे पिछले तीन वर्षों से इस धंधे में शालि हैं। ओडिशा से सस्ती दर पर गांजा खरीदकर पंजाब मं उसे अधिक कीमत में बेचती थी। उनके पास सें दो स्क्रीन टच मोबाइल और एक बैंक पासबुक भी बरामद किया गया है।

सद्वीक चौक पर दिनदहाड़े अधेड़ महिला की गोली मारकर हत्या

PHOTON NEWS PALAMU : जिला मुख्यालय मेदिनीनगर शहर थाना क्षेत्र के सद्वीक चौक से सटे इलाके में बुधवार की दिनदहाड़े एक अधेड़ महिला की गोली मारकर हत्या कर दी गयी। घटना सद्वीक चौक से शाहपुर जाने वाली सड़क पर स्थित मुकेश भोजनालय में हुई। महिला की पहचान नमिता देवी (55) के रूप में हुई है। नमिता इसी थाना क्षेत्र के शास्त्रीनगर-भट्ठी मुहल्ला की निवासी थी।

जानकारी के अनुसार करीब तीन दशक पहले नमिता के पूर्व पति श्याम बिहारी चन्द्रवंशी की भी नावाहाता इलाके में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। इधर कुछ वर्ष पूर्व मुख्य बाजार एरिया में नमिता के पुत्र छोटू पासवान की भी गोली मारकर मौत की नींद सुला

नमिता देवी की फाइल फोटो।

दी गयी थी।

जानकारी के अनुसार बुधवार की दोपहर करीब दो बजे नमिता देवी हर दिन की तरह सद्वीक चौक से दो सौ मीटर दूर शाहपुर जाने वाली सड़क पर स्थित मुकेश भोजनालय में बैठी हुई थी। नमिता के साथ उसके पुत्र विक्की पासवान भी बैठा हुआ था। बातचीत दोनों में हो रही थी। इसी क्रम में भगवा गमछा ओढे दो युवक वहां पहुंचे और दुकान में घुसकर नजदीक से सटाकर नमिता देवी की कनपटी में गोली मार दी। लहुलुहान स्थिति में नमिता को इलाज के लिए एमआरएमसीएच में भर्ती किया गया। यहां उसे डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। हालांकि इसके बाद भी परिजन उसे इलाज के लिए नारायण मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल में ले गए। यहां भी उसे मृत पाया गया। शव को पोस्टमार्टम के लिए पुनः एमआरएमसीएच ले जाया गया।

डीएसपी मणिभूषण ने जानकारी दी कि अपराधियों की संख्या दो थी। सीसीटीवी फुटेज में दोनों दिखे हैं। दुकान तक पैदल थे। गोली मारने के बाद भाग निकले। घटना का कारण स्पष्ट किया जा रहा है। जल्द खुलासा किया जायेगा।

गुमला पुलिस ने अफीम की फसल को किया नष्ट दो आरोपी गिरफ्तार

GUMLA : भरनो के करंज थाना क्षेत्र अन्तर्गत भंडार लोंडरा जोंगा गड़हा टांड़ में अफीम की अवैध खेती किए जाने के मामले में पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। गिरफ्तार लोगों में स्थानीय युवक विजय मुंडा और लोहरदगा के पेशरार थाना क्षेत्र के पुंदाग नवाटोली निवासी दिलीप मुंडा शामिल है। इस संबंध में एसपी हरविंदर सिंह ने पत्रकार वार्ता में बताया कि 5 फरवरी को पुलिस को यह सूचना मिली कि करंज थाना क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम भण्डार लोण्डरा में जोगा गड़हा के पास टांड़ में अवैध रूप से अफीम की खेती की गई है। ग्रामीणों से पता चला कि रामकिशोर मुण्डा एवं परमेश्वर मुण्डा की जमीन में विजय मुण्डा और दिलीप मुण्डा ने एक एकड़ जमीन में अवैध रूप से अफीम की खेती की गई है। इसके बाद फसल को नष्ट कर दिया गया। इस संबंध में दण्डाधिकारी के लिखित आवेदन पर करंज थाना में कांड दर्ज किया गया।

दुमका : सड़क दुर्घटना में दो युवकों की मौत, एक गंभीर

घटना स्थल पर मृत पड़े युवक। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS DUMKA : हंसडीहा थाना क्षेत्र के दुमका-भागलपुर स्टेट हाईवे पर बुधवार को ट्रक की चपेट में आने से बाइक पर सवार दो युवकों की मौत हो गई। घटना के बाद ट्रक चालक भागने में सफल रहा। मृतक की पहचान साधु मिर्धा (24) और विकास मिर्धा (21) के रूप में की गई। मृतक जरमुंडी थाना क्षेत्र अंतर्गत सरमारा गांव निवासी बताया जाता है। वहीं घायल युवक की पहचान रामगढ़ थाना क्षेत्र के रेड़ा गांव निवासी राकेश मिर्धा के रूप में हुई है।

जानकारी के अनुसार एक बाइक पर तीन युवक सवार होकर हंसडीहा से दुमका जा रहे थे। इसी दौरान अज्ञात ट्रक एक अन्य वाहन को ओवरटेक करने के क्रम में मुरको पुल के समीप बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दिया। टक्कर हो जाने से बाइक सवार दोनों युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।

घटना की जानकारी मिलते ही हंसडीहा थाना से थाना प्रभारी जितेंद्र साहू अपने दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे तथा घायल युवक को अपने पुलिस वेन में बिठाकर इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सरैयाहाट भेज दिया गया।

प्रधानाध्यापक की लापरवाही से छूटी एक और बच्चे की मैट्रिक परीक्षा, नहीं मिला एडमिट कार्ड

PHOTON NEWS PALAMU : जिले के तरहसी प्रखंड के स्त्ररोंनत उच्च विद्यालय सेलारी में प्रधानाध्यापक अजय दुबे की लापरवाही से चौथे बच्चे की मैट्रिक परीक्षा छूट गई है। कुंदन पासवान पिता रगु पासवान का अबतक एडमिट कार्ड नहीं बनकर आया है। उसे 10 फरवरी को परीक्षा लिखनी है। इससे पहले इसी स्कूल के मैट्रिक के तीन बच्चों का एडमिट कार्ड बनकर नहीं आया था। वे भी परीक्षा से वंचित हो गए हैं।

परीक्षा से वंचित कुंदन पासवान का रो रो कर बुरा हाल है। उसने अपने पिता से कहा कि उसकी एक साल की पढ़ाई बर्बाद हो गयी। इस मामले को लेकर परिवार वालों ने शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों से शिकायत करने की बात कही है।

छात्रा कुंदन ने माता-पिता को बताया कि प्रधानाध्यापक द्वारा दो महीने बाद फिर से परीक्षा दिलाने की बात कह रहे हैं, लेकिन रेगुलर छात्र के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। कुंदन पासवान ने बताया कि 6 फरवरी तक उसे एडमिट कार्ड नहीं मिला था। इंतजार के बाद 7 फरवरी को विद्यालय में एडमिट कार्ड लेने गया तो प्रधानाध्यापक द्वारा बताया गया कि उसका एडमिट कार्ड नहीं आया है, लेकिन तुम्हें दो महीने बाद हम परीक्षा दिलवा देंगे।

क्या कहते हैं डीईओ मनोज कुमार

पूरे प्रकरण में डीईओ मनोज कुमार ने बताया कि मैट्रिक की परीक्षा शुरू हो गई है। प्रधानाध्यापक द्वारा सात फरवरी तक एडमिट कार्ड नहीं देना समझ से परे है। प्रधानाध्यापक की इसमें घोर लापरवाही नजर आ रही है। पूरे प्रकरण में जांच कर दोषी शिक्षक पर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि नियमानुसार परीक्षा से 10 दिन पूर्व एडमिट कार्ड दे देने का प्रावधान है।

धनबाद में 10 से शुरू होगा फाइलेरिया उन्मूलन अभियान

PHOTON NEWS DHANBAD : जिले में 10 फरवरी से 25 फरवरी तक फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम चलाया जाएगा। इसके तहत 24 लाख लोगों को दवा खिलाई जाएगी। स्वास्थ्य विभाग ने इसको लेकर तैयारी भी शुरू कर दी है।

स्वास्थ्य विभाग ने जानकारी देते हुए बताया कि सभी सरकारी और निजी स्कूलों और अस्पतालों में फाइलेरिया रोधी दवा खिलाई जाएगी। इतना ही नहीं 10 से 25 फरवरी के बीच कई जगहों पर दवा वितरण केंद्र बनाकर दवा खिलाई जाएगी। दवा खिलाने को लेकर स्वास्थ्य विभाग ने शिक्षा विभाग के साथ बैठक करके स्कूलों को चिन्हित किया गया है। स्कूल के शिक्षकों को भी इसके लिए प्रशिक्षण दिया गया है। इस कार्यक्रम के तहत दो वर्ष से ऊपर के बच्चों से लेकर 60 वर्ष के बुजुर्गों तक को फाइलेरिया रोधी दवा खिलाई जाए। फाइलेरिया को लेकर स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए जायेगा।

10 फरवरी को सदर अस्पताल प्रांगण में दवा खिलाकर मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम की शुरूआत की जाएगी। दवा खाने को लेकर लोगों से सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन ने दवा खाने की अपील की है।

अमन शाहदेव की अध्यक्षता में किया गया पिल्लर मेंम्बरों का सम्मेलन

कार्यक्रम में उपस्थित आजसू कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : आजसू पार्टी काँके प्रखंड सामिति के बैनर तले बुधवार को पिठौरिया मे पिल्लर मेंम्बरों का सम्मेलन प्रखंड अध्यक्ष लाल अमन शाहदेव के अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम का संचालन काँके प्रखंड सचिव सुरेन्द्र महतो ने किया। बैठक में आजसू पार्टी के केंद्रीय प्रवक्ता डॉ देवशरन भगत, केन्द्रीय उपाध्यक्ष हसन असांरी, केंद्रीय महासचिव राजेंद्र मेहता, राँची जिला अध्यक्ष संजय कुमार महतो, राँची जिला कार्यकारीअध्यक्ष हकीम असांरी, राँची जिला महिला अध्यक्ष विणा देवी, पार्वती देवी, मिना देवी, केन्द्रीय स्दसय रूपलाल महतो, कलिम असांरी, किशोर महतो मौजूद हुए। मौके पर कांके प्रखंड के सभी सभी पिल्लर मेंम्बरों को प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान रितेश कुमार दिपक और महेश महतो ने अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ आजसू पार्टी का दामन थामा।

मौके पर पार्टी के दामन थामने के बाद रितेश कुमार दीपक ने कहा कि, आजसु पार्टी और सुदेश महतो से प्रेरित होकर आजसु का दामन थामा। आजसु पार्टी माटी की पार्टी है। सभी वर्गो, समुदाय को एक साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। आज राज्य की हालत बत से बत्तर हो चुकी है। राज्य का मुखिया भ्ष्टाचार के आरोप में जेल जाता है। गठबंधन की सरकार राज्य को लूटने में लगी है। लेकिन निश्चित तौर पर आने वाली चुनाव में राज्य की जनता इन लुटेरी सरकार से गिन गिन कर हिसाब लेगी और माननीय सुदेश महतो के नेतृत्व में सरकार बनेगी। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से महमूद अंसारी, आनंद महतो, मनोज महतो, मुर्तजा खाना, लोकेश महतो, लखन महतो, बबली कुमारी, कमला देवी, रूपाश्री गाड़ी, संगीता देवी, सरिता देवी, प्रिती देवी, अजित कच्छप, गोविंद महतो की अहम भूमिका रही।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी से मिला मुस्लिम प्रतिनिधि खुर्शीद हसन रूमी

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड राज्य के मुस्लिम प्रतिनिधियों का एक समिति कांग्रेस सांसद श्री राहुल गांधी से न्याय यात्रा के दौरान इरबा में मिला। और उनसे झारखंड सरकार में मुसलमान के दयनीय स्थिति के बारे में बताया। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता खुर्शीद हसन रूमी ने राहुल गांधी से कहा के राज्य में हज कमिटी, वक्फ बोर्ड, उर्दू अकादमी, मदरसा बोर्ड, माइनॉरिटी फाइनेंस कॉरपोरेशन का गठन नहीं हुआ है। साथ ही कहा कि झारखण्ड सरकार के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के द्वारा झारखण्ड राज्यकृत प्रारम्भिक विद्यालय शिक्षक प्रोन्नती नियामावली-2024 का ड्राफ्ट तैयार किया गया है। उक्त नियामावली के, परिभाषाओं के (1) का (1) एवं (1) में उल्लेख है कि इण्टरमिडिएट प्रशिक्षित एवं स्नातक प्रशिक्षित सहायक शिक्षक एवं उर्दू सहायक शिक्षक के पद को मरणशील (उ्‍ल्लॅ उॅंशि) कर दिया जाएगा और इस पद पर अब कोई नई नियुक्ति नहीं कि जाएगी। यह नियामावली लागू होने से वर्ष 1999 में बिहार सरकार के

राहुल गांधी से मुलाकात करते मुस्लिम प्रतिनिधि। ● फोटोन न्यूज

प्राथमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा प्राथमिक एवं मध्य विद्यालय के लिए सृजित किये गए 4401 उर्दू शिक्षक के पद वर्तमान में रिक्त 3712 उर्दू शिक्षक के पद को सरेण्डर कर दिया जाएगा, जो कहीं से भी न्यायोचित नहीं है और उर्दू भाषी अल्पसंख्यक समुदाय के साथ अन्याय है। आप से आग्रह होगा कि उर्दू शिक्षक के पद को मरणशील (उ्‍ल्लॅ उॅंशि) करने के प्रावधान को हटाये जाने पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए तथा 4401 उर्दू प्रारम्भिक शिक्षक के खाली पड़े 3712 उर्दू शिक्षक के पदों को 1-5 एवं वर्ग 6-8 में विभाजित कर प्रारम्भिक शिक्षक नियुक्ति नियामावली- 2012 के अनुसार बहाली पर आवश्यक दिशा निर्देश जारी किया जाय। श्री राहुल गांधी ने रूमी के बातों को गंभीरता से सुना और झारखंड प्रदेश के प्रभारी गुलाम अहमद मीर को इस मामले को देखने को कहा। वहीं मंजूर अहमद अंसारी ने कहा के आप ओबीसी की चर्चा करते हैं लेकिन ओबीसी में मुस्लिम अल्पसंख्यकों के लिए ना ही सरकार में और ना ही संगठन में कोई प्रतिनिधित्व दी गई है। प्रतिनिधि समिति में एक्स एमपी फुरकान अंसारी, मंजूर अहमद अंसारी, अनवार अहमद अंसारी, सईद अहमद, रोशन लाल भाटिया, खुर्शीद हसन रूमी, और जयप्रकाश गुप्ता शामिल थे।

कोयलांचल में राजनीतिक जमीन तलाश रही है नेशनल पीपुल्स पाटी

PHOTON NEWS GIRIDIH/DHANBAD : झारखंड राज्य में तकरीबन 10 वर्षों से जेपीएससी एवं जेएसएससी की प्रतियोगी परीक्षा में जमकर धांधली हुई है। कुछ पर तो जांच चल रही है। लाखों छात्रों के भविष्य पर दाव लगा हुआ है। आयोग के अध्यक्ष-रजिस्ट्रार भी शक के घेरे में है। छात्रों ने पैसे लेकर प्रश्न पत्र लीक करने का भी आरोप लगाया है। छात्र आंदोलन के लिए मजबूर हैं। हाल में ही कर्मचारी चयन आयोग कार्यालय में काफी छात्रों और प्रशासन के बीच संघर्ष देखा गया। लाठीचार्ज की नौबत आई। 15 से अधिक छात्रों पर प्राथमिक की दर्ज किया गया।

आक्रोशित छात्रों का समूह जिले में बना। स्थानीय -नियोजन को लेकर काफी आंदोलन हुआ। भाषा आंदोलन से शुरू होकर नियोजन स्थानीयता पर काफी राजनीति का हिस्सा रहा। कोयलांचल को अगर राजनीतिक पृष्ठभूमि से देखा जाए तो काफी रोचक है। विधानसभा सीटों में देखा जाए तो भारतीय जनता पार्टी, इंडियन नेशनल कांग्रेस, झारखंड मुक्ति मोर्चा का काफी वर्चस्व है। लेकिन गठबंधन ने युवा नेताओं एवं इच्छा रखने वाले जन नेताओं का मनोबल तोड़ने का काम पार्टी करती है। नेशनल पीपुल्स पार्टी के वरिय पदाधिकारी एवं नेताओं ने कोयलांचल की राजनीति को महसूस करते हुए लोकसभा चुनाव प्रत्याशी उतारने का मन बना रहा है।

धनबाद, गिरिडीह, हजारीबाग लोकसभा तकरीबन 60 सालों से रोचक बना हुआ है। झारखंडी भाषा-खतियान संघर्ष समिति भी चुनाव के मूड पर है। स्थानीय को अगर किसी राजनीतिक दल प्रत्याशी घोषित करती है तो चुनाव- 2024 काफी रोचक रहेगा। स्थानीय मुद्दा के साथ नेशनल पीपुल्स पार्टी काफी दिनों से झारखंड की राजनीतिक गर्मी को महसूस कर रहे हैं।

संगठन 18 से अधिक जिलों में बना हुआ है। कहीं ना कहीं संगठन के नेता चाहते हैं कि जनाधार वाले सीट पर चुनाव लड़ाया जाना चाहिए। मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनरैड संगमा एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष आदिवासी बहुल क्षेत्र में अपना प्रत्याशी उतारने के पक्षधर हैं। अब देखना है 2024 चुनाव कितना जनादेश किस राजनीतिक दल के पक्ष में लाता है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की झारखंड में हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर कड़िया मुंडा ने कहा-

विपक्ष लाख कोशिश करे, 2024 में भाजपा की ही होगी सरकार

PHOTON NEWS KHUNTI : भाजपा के दिग्गज नेता और खूंटी से आठ बार सांसद रहे पद्मभूषण कड़िया मुंडा ने कहा कि विपक्ष लाख कोशिश कर ले लेकिन 2024 में केंद्र में भाजपा की ही सरकार बनेगी। पूरे देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लहर चल रही है। उन्हें हरा पाना फिलहाल संभव नहीं है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की झारखंड में हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर मुंडा ने कहा कि राहुल गांधी के झारखंड दौर से कांग्रेस को कोई फायदा होनेवाला नहीं है।

मुंडा ने अनिगड़ा स्थित आवास पर हिन्दुस्थान समाचार से

बातचीत में कहा कि सिर्फ बड़े नेताओं के आने से चुनाव नहीं जीता जा सकता। हां, इतना जरूर है कि बड़े नेताओं के आने से कार्यकताओं में उत्साह का संचार होता है और काम करने के लिए उन्हें संजीवनी मिलती है। कांग्रेस अपने संगठन और काम के बल पर आज तक चुनाव नहीं जीती है। उन्होंने कहा कि खूंटी में भाजपा का किला काफी मजबूत है।

भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलिहातू नहीं जाने के संबंध में कड़या मुंडा ने कहा कि राहुल गांधी ने यहां के जनजातीय समाज को अपमानित किया है। मिशनरियों से राहुल गांधी के मिलने के संबंध में कड़िया मुंडा ने कहा कि राहुल बेचारा क्या करेगा, पूरी मिशनरी परेशान है। डिलिस्टिंग को लेकर रांची में भी रैली हुई लेकिन सफल नहीं हुई। उन्होंने कहा कि डिलिस्टिंग के मुद्दे को जिस तरह से मीडिया हवा बन रहा है, वह गलत है। यदि कांग्रेस डिलिस्टिंग के मामले पर कुछ बोलती है, तो उसका सीधा फायदा भाजपा को मिलेगा।

हेमंत सोरेन पर टिप्पणी करते हुए कड़िया मुंडा ने कहा कि हेमंत दावा करते हैं कि उनके पिता शिबू सोरेन ने अलग राज्य की लड़ाई लड़ी और झारखंड मिला। कड़िया ने कहा कि उनके पिता ने झारखंड की लड़ाई तो कभी लड़ी नहीं, झारखंड आंदोलन को बेचा जरूर है। इसके बाद भी कहते हैं कि उनके पिता झारखंड के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि इनका चरित्र ही है कि वे दूसरे की कमाई को अपनी कमाई बताते हैं। उन्होंने कहा कि भारत लोकतांत्रिक देश है, यहां बोलने का सबको अधिकार है। इसलिए बोलने दीजिए।

नगर प्रशासक की वादा खिलाफी के विरोध में ऑटो चालकों ने किया प्रदर्शन

PHOTON NEWS KODERMA : झुमरीतिलैया नगर प्रशासक के वादा खिलाफी के विरोध में झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन के अंतर्गत ऑटो चालक संघ ने बुधवार को नगर पर्षद कार्यालय पर आक्रोश प्रदर्शन किया। वहां नगर प्रशासक के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। दसके बाद नगर प्रशासक ने 12 फरवरी तक यूनियन के सभी मांगों को पूरा करने का भरोसा दिलाया। यूनियन ने चेतावनी दिया कि अगर निर्धारित समय के अंदर मांगें पूरी नहीं होगा तो उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होगें।

प्रदर्शन में मनमानी टैक्स वसूली बंद करो, ऑटो स्टैंड की व्यवस्था करो, टैम्पो चालकों के साथ दुर्व्यवहार बंद करो आदि नारे लगाए जा रहे थे। प्रदर्शन के बाद टैम्पो चालक संघ के अध्यक्ष मो रफीक की अध्यक्षता में हुई सभा को संबोधित करते हुए सीटू नेता प्रेम प्रकाश ने कहा कि नगर पर्षद सिर्फ टैक्स वसूलती है, लेकिन सुविधा के नाम पर कोई व्यवस्था नहीं है। झुमरीतिलैया में कहीं भी टैम्पो स्टैंड नहीं है, महिला पैसेंजर्स शौचालय के लिए तरस जाती है। लेकिन टैक्स दोनों तरफ वसूला जा रहा है। देश में बेरोजगारी चरम पर है, जिसके कारण पढ़ें लिखे युवा ऑटो और टोटो चलाने के लिए मजबूर है।

BRIEF NEWS

पीटीसी प्रशिक्षण में 109 पुलिसकर्मी हुए फेल

RANCHI : पीटीसी प्रशिक्षण में 109 पुलिसकर्मी फेल हो गये। गौरतलब है कि झारखंड पुलिस मुख्यालय ने जेएपीटीसी पदमा, जंगल वॉरफेयर स्कूल नेतरहाट, टीटीसी जमशेदपुर, सीटीसी मुसाबनी और जैप 10 में कुल 353 सिपाही स्तर के पुलिसकर्मियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित की थी। इस प्रशिक्षण में 244 पुलिसकर्मी पास हो गये। जबकि 109 पुलिसकर्मी फेल हो गये। आईजी ट्रेनिंग ने इससे संबंधित आदेश जारी किया है। जारी आदेश में कहा गया है कि पुलिसकर्मियों से संबंधित एसपी और इकाई प्रधान को निर्देश दिया जाता है कि इस परीक्षाफल के अनुरूप जिलादेश अंकित कर परीक्षाफल संबंधित पुलिसकर्मियों को सूचित करना सुनिश्चित की जाये।

राजीव अरूण एक्का सीएम के अपर मुख्य सचिव के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त

RANCHI : राज्य सरकार ने सदस्य राजस्व पर्षद रांची के पद पर पदस्थापित राजीव अरूण एक्का (अतिरिक्त प्रभार मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव झारखंड, अपर मुख्य सचिव वन विभाग तथा अपर मुख्य सचिव पंचायती राज विभाग) को मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त कर दिया है। बता दें कि पूर्व सीएम हेमंत सोरेन के कार्यकाल में उन्हें सीएम के अपर मुख्य सचिव के पद पर नियुक्त किया गया था। लेकिन उनके इस्तीफा देने के राज्य में नये सीएम चपाई सोरेन हुए। उन्होंने अपना प्रधान सचिव विनय कुमार चौबे को नियुक्त किया है। इसके बाद से ही यह संशय था कि राजीव अरूण एक्का के पास क्या अपर मुख्य सचिव का प्रभार रहेगा की नहीं। इस संबंध में कार्मिक विभाग ने अधिसूचना जारी कर दिया है।

नव प्रोन्नत दस आइएएस को मिलेगी प्रोन्नति

RANCHI : नव प्रोन्नत दस आइएएस अधिकारियों को संयुक्त सचिव से अपर सचिव रैंक में प्रोन्नति मिलेगी। ये सभी अधिकारी नौ साल की सेवा संयुक्त सचिव रैंक में पूरी कर चुके हैं इसलिए इनको प्रमोशन मिलना है। कार्मिक विभाग इन अधिकारियों को प्रमोशन देने की तैयारी कर रहा है। जल्द ही विभागीय प्रोन्नति समिति की बैठक के बाद इस पर अग्रतर कार्रवाई की जायेगी। सीएम की मंजूरी मिलने के बाद आदेश भी जारी किया जायेगा। बता दें, कि बता दें कि झारखंड प्रशासनिक सेवा से आइएएस में प्रोन्नति देने के बाद 5 जनवरी को ही इनकी पोस्टिंग की गयी थी। इन अधिकारियों को मिलेगा प्रमोशनः विधानचंद्र चौधरी, शैलेंद्र कुमार लाल, राजीव रंजन, सुनील कुमार, विजय कुमार गुप्ता, कृष्ण कुमार सिंह, सत्येंद्र कुमार, रंजीत कुमार लाल, मनोज कुमार रंजन। सभी अधिकारी विभिन्न विभागों में संयुक्त सचिव स्तर पर पदस्थापित हैं।

ड्रॉपआउट बच्चों का डेटा कलेक्ट कर रहा सीआरपी

RANCHI : झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के निर्देश पर क्लस्टर रिसोर्स पर्सन (सीआरपी) स्कूल जाकर ड्रॉपआउट बच्चों का डेटा कलेक्ट कर रहे हैं। इन ड्रॉपआउट बच्चों को चिन्हिंत कर उनका फिर से स्कूल में नामांकन कराया जाएगा। वहीं यू-डीआईएसई पोर्टल में जिन बच्चों का नाम रजिस्ट्रर्ड नहीं है, उनका भी डेटा तैयार किया जायेगा। इसकी जानकारी सीआरपी-बीआरपी एसएस संघ के केंद्रीय अध्यक्ष कृष्णा प्रसाद ने दी है। डीआईएसई पोर्टल के अनुसार, रांची में 10,388 छात्रों ने ड्रॉपआउट किया है। हालांकि इन छात्रों का नामांकन 2022-23 में हो गया है। पोर्टल पर डेटा अपलोर्ड नहीं होने के कारण ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या में बढ़ोतरी दिख रही है। कृष्णा प्रसाद ने बताया कि यू-डीआईएसई पोर्टल पर छात्रों का डेटा हर साल अपडेट किया जाता है। लेकिन रांची में 2023-24 सत्र के लिए केवल 70 प्रतिशत डेटा अपडेट किया गया है। कहा कि सीआरपी दौरे के दौरान पता चला कि ड्रॉपआउट के रूप में सूचीबद्ध बच्चों में से कुछ का नाम दूसरे स्कूलों में नामांकित हैं।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

पीएम का दावा बड़ी साजिश की ओर इशारा कर रही : सुप्रियो भट्टाचार्य

झामुमो का हमला, कहा- अब अदालतों को बचना है तो लोकतंत्र को पहले बचाना होगा

PHOTON NEWS RANCHI : झामुमो ने लोकसभा और राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस बार 400 पार की बातों को लेकर बड़ा हमला किया है। पार्टी महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि देश अब लोकसभा चुनाव की ओर तेजी से बढ़ चला है। वर्तमान में संसद सत्र चल रहा है। देश के प्रधानमंत्री ने पहले लोकसभा और अब राज्यसभा में कई बातें कहीं। जिसमें पहला अबकी बार, 400 के पार। मजे की बात यह है कि देश अभी जिस दौर से गुजर रहा है। यह किसी से छिपी नहीं है। चारो ओर संघर्ष ही संघर्ष नजर आ रहा है। प्रधानमंत्री का यह बयान एक बड़ी सोच और साजिश की ओर बहुत कुछ इशारा कर रहा है। वह सोच है भारत में लोकतंत्र को समाप्त करना। इसकी पुष्टि खुद भारत के सर्वोच्चय न्यायालय ने चंढ़ीगढ़ मेयर चुनाव को लेकर कर दी है। बड़ी अदालत ने कहा कि लोकतंत्र की हत्या हो रही है, हम चुप नहीं रह सकते हैं। ऐसे में यह भी स्पष्ट है कि लोकतंत्र का हत्यारा कौन है। निश्चित तौर पर भाजपा है। जिस प्रसंग में वो बातें कही वो मेयर चुनाव के पीठासीन पदाधिकारी और वर्तमान पार्षद के बारे में कही गयी। ये बातें करीब 2023 से चल रही है। लोकतंत्र की हत्या महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार और ताजा-ताजा झारखंड में हुई। उन्होंने कहा कि चिंता की बात नहीं है। उन्होंने कहा कि झारखंड और पड़ोसी बिहार में भाजपा एक अंक में सिमट जाएगी। बंगाल में पीएम सपना देखते रहे। वहां भी ऐसा ही हश्र होगा। उक्त बातें उन्होंने पार्टी कार्यालय में आयोजित एक प्रेस वार्ता के दौरान कही।

प्रेस कांफ्रेंस कर पत्रकारों से बातचीत करते सुप्रियो भट्टाचार्य।

आज की स्थिति आपातकाल से भी भयावह, मीडिया अब आंदोलनकारियों को भ्रष्टाचारी बता रहा है : उन्होंने कहा कि आज की स्थिति आपातकाल से भी भयावाह है। आज सबसे डरावना काम केंद्रीय जांच एजेसियां कर रही है। उस समय तो इतना मीडिया नहीं था और जो भी मीडिया था, वह लोगों को आंदोलनकारी बताता था। अब जो मीडिया है वह आंदोलनकारी को भ्रष्टाचारी बताता है। कहीं कोई आधार नहीं होता है , मगर मीडिया ट्राइल पहले हो जाता है और जो आधार है, जिस पर चार्टशीट है, वह न केवल विधानसभा में बैठता है, लोकसभा और राज्यसभा में बैठता है, मंत्री, उपमुख्यमंत्री बन जाता है। केवल और केवल गारंटी होना चाहिए कि वह भाजपा का हो। भाजपा में नहीं है तो वह भ्रष्टाचारी है, वह देशद्रोही है, वह पाकिस्तानी है। क्योंकि अब तो यह विधानसभा में बोला गया। उच्चत्तम न्यायालय जो इस बात को कह रहे हैं, उनको सोचना चाहिए कि यह अदालत को बचाना है या नहीं।

राजभवन में हुआ लोकतंत्र की हत्या का नंगा नाच

भट्टाचार्य कहा कि प्रधानमंत्री संसद में बोल रहे हैं, सुप्रीम कोर्ट अपने कक्ष में बोल रहा है। उनका स्पष्ट इशारा है कि चुनाव एक और अवसर होगा, नतीजा तय है। लोकतंत्र की हत्या का नंगा नाच यहां हुआ है। जब एक मुख्यमंत्री राजभवन जाते हैं और उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। अब तो लगता है कि हम अपनी फरियाद लेकर भी उच्च न्यायालय और उच्चत्तम न्यायालय में जाएं, ऐसा ना हो वहां पहले से नाटा मल्लिक बैठा हो और हमें सीधे फांसी पर लटका दे। क्योंकि जो जल्लाद का काम होता है, वह अब भाजपा का पीठासीन पदाधिकारी कर रहा है। बहुत बड़ी-बड़ी बातें यहां के भाजपा नेताओं ने कही। उनकी बातों से यह स्पष्ट हो गया कि जो विपक्ष है, वह उसके टारगेट में है। अब वह विक्टिम नहीं है, टारगेट में है और अब टारगेट को सूट करना है। टारगेट का काम तमाम कर देना है। यह परिकल्पना किसी ने नहीं की थी।

राज्य में 11-12 फरवरी को हो सकती है बारिश

घने कुहासे के साथ बढ़ेगी ठंड, छाएंगे बादल

विभागीय वेधशाला	अधिकतम तापमान (°C)	सामान्य से परिवर्तन	24 घंटे में परिवर्तन	न्यूनतम तापमान (°C)	सामान्य से परिवर्तन	24 घंटे में परिवर्तन	0830 से 1730 तक दर्ज वर्षा (mm में)
राँची (हिन्)	24.2	-1.9	-1.5	13.7	+1.7	-1.7	000.0
जमशेदपुर	29.2	+0.2	+0.2	19.0	+4.4	+2.0	000.0
डाल्टेनगंज	27.2	-0.3	+1.5	13.6	+2.4	-2.3	000.0

बुधवार सात फरवरी को कुछ ऐसा रहा तापमान।

PHOTON NEWS RANCHI : राजधानी रांची सहित पूरे झारखंड में मौसम में लगातार बदलाव देखने को मिल रहा है। प्रदेश के कई जिलों में आंशिक बारिश हो रही है। मंगलवार को भी पलामू, जामताड़ा और संथाल परगना के कई जिलों में बारिश हुई, जिसकी वजह से राज्य का ठंड का असर देखने को मिल रहा है। रांची में सुबह से ही धूप निकला हुआ है। ऐसा पिछले दो दिनों से देखने को मिल रहा है। हालांकि, दिन में धूप के बाद शाम में कनकनी का एहसास हो रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक, राज्य के कई हिस्से में एक बार फिर बादल छाएंगे और बारिश हो सकती है। मौसम विज्ञान केंद्र रांची के वरीय वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि राज्य में बारिश का एक बार फिर बारिश का दौर आने वाला है। इससे एक बार फिर मौसम का मिजाज बदल सकता है। रांची और आसपास के इलाकों में आंशिक बादल के साथ हल्की बारिश हो सकती है। 11 और 12 फरवरी को गरज के साथ हल्की बारिश की संभावना है। वहीं सुबह-सुबह और देर रात कोहरा से अभी राहत नहीं मिलने वाली है। अगले दो दिनों में न्यूनतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है।

न्यूनतम तापमान में आएगी गिरावट

मौसम विभाग के मुताबिक शनिवार से न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री तक की गिरावट हो सकती है। इससे एक बार फिर ठंड अपना असर दिखाएगी। 9 और 10 फरवरी को सुबह में कोहरा या धुंध और बाद आंशिक बादल छाए रह सकते हैं। राजधानी रांची और उसके आसपास के इलाकों में 12 फरवरी तक सुबह में कोहरा रह सकता है।

आरपीएफ ने 39 किलो गांजा ट्रेन से किया जब्त

CRIME REPORTER RANCHI : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने हटिया रेलवे स्टेशन के ट्रेन से 39 किलो गांजा बरामद किया है। आरपीएफ से बुधवार को मिली जानकारी के अनुसार दक्षिण पूर्व रेलवे के रांची मंडल में आरपीएफ मंडल सुरक्षा आयुक्त इंचार्ज पवन कुमार के निर्देश पर शराब और गांजा तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे लगातार अभियान के क्रम में गुप्त सूचना के आधार पर(ट्रेन संख्या 18309) जम्मूतवी एक्स्प्रेस में हटिया पहुंचने पर ट्रेन के अंदर तीन ट्रॉली बोगी संदेहास्पद अवस्था में पाया गया। आसपास उसका कोई मालिक न मिलने पर उसे खोलकर देखा तो उसके अंदर गांजा मिला। बरामद गांजा का वजन करीब 39 किलो पाया गया। गांजा जा अनुमानित मूल्य तीन लाख नब्बे हजार आंका गया है। तत्काल मामले की सूचना सहायक सुरक्षा आयुक्त आरपीएफ रांची को दी गई' बाद मे सहायक सुरक्षा आयुक्त अशोक कुमार सिंह की ओर से गांजा को जब्त कर तमाम कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद उसे राजकीय रेल पुलिस हटिया को सौंप दिया गया।

रांची में तैनात कई पुलिस अधिकारियों का तबादला

RANCHI : रांची जिले में तैनात विभिन्न पुलिस अधिकारियों का बड़े पैमाने पर ट्रांसफर पोस्टिंग किया गया। जिसकी सूची जिले के वरीय पुलिस अधीक्षक ने जारी कर दिया है। अफसरों को जल्द जल्द अपने नये स्थान पर योगदान देने को कहा गया है। इस सूची में वैसे अफसरों का नाम शामिल है जो एक ही जगह पर लंबे समय से पदस्थापित थे। जारी अधिसूचना में लिखा गया है कि झारखंड सरकार के पत्रांक- 6352, दिनांक 27-12-2023 के माध्यम से प्राप्त निर्देश के आलोक में दिनांक 31-01-2024 को संपन्न राज्य स्थापना पर्षद की बैठक में लिये गये निर्णय के तहत एक ही जिला इकाई में 3 वर्ष या इससे अधिक समयावधि से पदस्थापित रांची जिला बल पुलिस निरीक्षकों को स्थांतरित किया जाता है। रांची वरीय पुलिस अधीक्षक द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक पुलिस निरीक्षक अरुण कुमार को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो रांची में स्थांतरित किया गया है। वहीं, पुलिस अधीक्षक अभाष कुमार को विशेष शाखा, रांची बृज कुमार को गढ़वा जिला, प्रवीन कुमार को रेल धनबाद, विनय कुमार सिंह को झारखंड पुलिस अकादमी हजारीबाग, रवि ठाकुर को देवघर और जॉन मुर्मू को झारखंड स्थांतरित किया गया है।

अकाउंटेंट संजय हत्याकांड : बिल्डर कमल भूषण की बेटी को भेजा गया जेल, शूटरों को दिए थे पैसे

हत्याकांड के मुख्य आरोपी राहुल कुजूर की पत्नी है यामिनी, कबूली अपनी जुर्म

CRIME REPORTER RANCHI : बिल्डर कमल भूषण (मृत) के अकाउंटेंट संजय सिंह की हत्या मामले में पुलिस ने कमल भूषण की बेटी यामिनी को जेल भेज दिया। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने यामिनी को मगंलवार को गिरफ्तार कर लिया था। आरोप है कि संजय हत्याकांड को अंजाम देने वाले भाड़े के हत्यारे को यामिनी ने ही नगद रुपये उपलब्ध करवाए थे। यामिनी कमल भूषण हत्याकांड के मुख्य आरोपी राहुल कुजूर की पत्नी है और कमल भूषण की पुत्री भी है। संजय सिंह की हत्या मामले की तफ्तीश शूटरों के गिरफ्तार होने के बाद भी जारी थी। पुलिस की जांच में यह बात सामने आयी कि संजय सिंह की हत्या में यामिनी की संलिप्तता भी रही थी। यामिनी ने ही आरोपी राहुल और रोहित कुजूर के कहने पर संजय की हत्या करने वाले शूटरों को पैसा दिया था। गिरफ्तारी के बाद हुई पूछताछ में यामिनी ने पुलिस के समक्ष शूटरों को पैसे देने की बात स्वीकार की है।

पुलिस की गिरफ्त में बिल्डर कमल भूषण की बेटी यामिनी।

क्या है मामला : जमीन कारोबारी कमल भूषण के अकाउंटेंट संजय सिंह की अपराधियों ने पांच जुलाई 2023 रातू रोड गलैक्सिया मॉल के सामने काली मंदिर लेन में गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में पुलिस ने अपराधी संदीप कुमार प्रसाद, आकाश कुमार वर्मा, विवेक कुमार शर्मा, सुशीला कुजूर, साहिल बाड़ा के अलावा सोनू कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। इस मामले के मुख्य आरोपी राहुल कुजूर और डब्लू कुजूर जेल से ही साजिश रची थी। इससे पहले 30 मई 2022 को जमीन कारोबारी कमल भूषण की हत्या भी राहुल कुजूर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कर दी थी। सुखदेव नगर थाना क्षेत्र के मधुकम निवासी जमीन कारोबारी कमल भूषण की दो साल पहले अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। दरअसल राहुल कुजूर ने जमीन कारोबारी की पुत्री यामिनी से शादी कर ली थी। इसको लेकर दोनों के बीच दुश्मनी शुरू हो गयी थी। इसी क्रम में जमीन कारोबारी ने राहुल की हत्या करने की धमकी दी थी। इसी वजह से राहुल ने शूटरों के जरिए कमल की 30 मई 2022 को रातू रोड में गोली मारकर हत्या करवा दी थी।

शादी की सालगिरह पर हेमंत सोरेन से मिलने ईडी ऑफिस पहुंचीं पत्नी कल्पना, किया इमोशनल पोस्ट

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पीएमएलए कोर्ट में पेशी से पहले उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ऑफिस में जाकर मुलाकात की। शादी की सालगिरह पर सुबह-सुबह इमोशनल ट्वीट करने के बाद कल्पना मुर्मू सोरेन पति से मिलने के लिए ईडी ऑफिस गईं। सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने हेमंत सोरेन के साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर भी शेयर की है। इसमें दोनों संताली परिधान में हैं। यह किचेन में ली गई तस्वीर है। कल्पना सोरेन ने हेमंत सोरेन के सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट किया कि आज हमारी शादी की सालगिरह है, लेकिन हेमंत जी परिवार के साथ नहीं हैं। अपने बच्चों के साथ नहीं हैं। कल्पना ने आगे लिखा है कि उन्हें पूरा विश्वास है कि हेमंत सोरेन सभी षड्यंत्रों को पराजित कर विजेता बनकर अपने परिवार के बीच लौटेंगे।

हेमंत जी ने झुकना स्वीकार नहीं किया : कल्पना

कल्पना मुर्मू सोरेन ने एक्स पर लिखा, झारखंड के अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए हेमंत जी ने झुकना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने षड्यंत्र से लड़ने और उसे हराने के लिए अपने आप को समर्पित करना बेहतर समझा।कल्पना आगे लिखतीं हैं, आज हमारी शादी की 18वीं सालगिरह है, पर हेमंत जी परिवार के बीच नहीं हैं। बच्चों के साथ नहीं हैं। विश्वास है वो इस षड्यंत्र को हरा विजेता बनकर हम सभी के साथ शीघ्र होंगे। कल्पना मुर्मू सोरेन ने इस पोस्ट में यह भी लिखा है, मैं एक वीर झारखंडी योद्धा की जीवनसाथी हूं। आज के दिन मैं भावुक नहीं होऊंगी। हेमंत जी की तरह ही विषम परिस्थितियों में भी मुस्कुराते हुए उनके साहस और संघर्ष की शक्ति बनूंगी। हेमंत सोरेन के हैंडल से पोस्ट किए गए इस मैसेज के नीचे उन्होंने अपना नाम भी लिखा है- कल्पना मुर्मू सोरेन।

बाल कैदियों को देश सेवा का मौका, अग्निवीर व पुलिस में भर्ती के लिए किया जाएगा तैयार

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में बाल कैदियों का जीवन संवारने की अनूठी पहल शुरू हुई है। बचपन में किसी अपराध की वजह से जेल जाने वाले बच्चे बाहर निकलने के बाद अपराध की दुनिया में वापस न लौटें, एक बेहतर शहरी की जिंदगी गुजारें। इसकी पहल की गई है। धनबाद जिले के बरमसिया भूदा स्थित बाल सुधार गृह में बंद कैदियों को अग्निपथ योजना के तहत सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। झारखंड पुलिस की बहाली में भी शामिल होने के लिए इन्हें तैयार किया जा रहा है। बाल सुधार गृह के नोडल ऑफिसर कर्नल जेके सिंह ने बताया कि बाल कैदियों को देश सेवा का मौका मिलेगा। उन्होंने बताया कि इसकी शुरूआत बरमसिया भूदा स्थित बाल सुधार गृह से की जाएगी। यहां बंदियों को सेना में भर्ती के लिए ट्रेनिंग दी जाएगी। इन्हें झारखंड पुलिस में भर्ती के लिए भी तैयार किया जाएगा। बाल सुधार गृह में बंद कैदियों की फिजिकल ट्रेनिंग शुरू भी कर दी गई है।

इन कैटेगरीज में होती है भर्ती

- अग्निवीर जेनरल ड्यूटी
- अग्निवीर टेक्निकल
- अग्निवीर क्लर्क
- अग्निवीर स्टोरकीपर
- अग्निवीर ट्रेच

झारखंड महिला कांग्रेस ने की नारी न्याय की मांग

लोकसभा चुनाव से पहले महिला आरक्षण लागू करे केंद्र

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड महिला कांग्रेस ने नारी न्याय के लिए कई सुझाव और कुछ प्रमुख मांगे केंद्र सरकार से की गई है। जिसमें आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण और राजनीतिक सशक्तिकरण की मांग की है। झारखंड महिला कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष गुंजन सिंह ने कहा कि लगातार महंगाई और इसे नियंत्रित करने में सरकार की विफलता के कारण महिलाओं के लिए अपना घर चलाना मुश्किल हो गया है। जिसमें एलपीजी गैस, खाद्य तेल, खाद्यान्न, किराने का सामान जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को विनियमित करने में विफलता भी शामिल है। साथ ही स्वास्थ्य देखभाल प्राथमिक प्रसव केंद्र कांग्रेस शासन के दौरान गांवों में खोले गए अधिकांश प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अब या तो बंद हो गए हैं या बिना किसी मेडिकल स्टाफ के संचालित हो रहे हैं। भारत में 15 से 49 वर्ष की आयु की अधिकांश 57% महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं। गांवों में प्रसव केंद्रों की कमी इसका सबसे बड़ा कारण हैं। कांग्रेस ने सभी के लिए मुफ्त प्राथमिक शिक्षा शुरू करने में मदद की और आईआईटी और आईआईएम सहित कई प्रतिष्ठित संस्थान स्थापित किए। भारत में शिक्षा व्यवस्था चरमरा रही है और भाजपा सरकार शिक्षा के लिए बजटीय आवंटन लगातार कम कर रही है। भारत में प्राथमिक और मध्य विद्यालयों में शिक्षकों की कमी है और सरकार इन पदों को जानबूझकर खाली पड़ी है। महिलाए सार्वजनिक स्थानों पर भाग लेने में असमर्थ हैं और गंभीर स्वच्छता संबंधी समस्याओं से पीड़ित हैं। सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के बावजूद अधिकांश गांवा में बुनियादी शौचालयों और स्वच्छता सुविधाओं का अभाव है और निचली जातियों की बस्तियों में विशेष भेदभाव होता है।

कांग्रेस ने पंचायत स्तर पर महिलाओं के लिए दिया आरक्षण

कांग्रेस ने पंचायती राज अधिनियम लाया। जिससे जमीनी स्तर पर लाखों महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला। हम महिला आरक्षण अधिनियम को तत्काल लागू करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। और इसकी मांग करते हैं। हालांकि भाजपा महिला प्रतिनिधित्व अधिनियम में बाधा डालकर और इसके कार्यान्वयन को अनिश्चित काल के लिए निलंबित करके भारत की महिलाओं के खिलाफ एक बड़ा धोखा कर रही है। यह वर्तमान सरकार के कई जुमलों में से एक है जो पर्याप्त प्रतिनिधित्व की पेशकश किए बिना भारतीय महिलाओं के वोटों को लुभाने की कोशिश कर रही है। हम महिला आरक्षण अधिनियम के तत्काल कार्यान्वयन और आगामी लोकसभा चुनावों के दौरान इसके प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता का आह्वान करते हैं।

लॉबिन-सीएम व दलित वर्ग को भी कैबिनेट में मिले जगह : नायक

PHOTON NEWS RANCHI : आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह झारखंडी सूचना अधिकार मंच के केंद्रीय अध्यक्ष व पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने सीएम चंपाई सोरेन से लॉबिन हेंब्रम, सीता सोरेन एवं दलित वर्ग से भी कैबिनेट मंत्री बनाने की मांग की है। नायक ने कहा कि मंत्रिमंडल विस्तार में दलित वर्ग से भी कैबिनेट मंत्री बनाया जाना चाहिए। हेमंत सरकार के कार्यकाल में दलित समाज को प्रतिनिधित्व नहीं मिला था, इस बार उनकी भागीदारी सुनिश्चित किया जाना चाहिए । नायक ने कहा कि मंत्रिमंडल विस्तार मे आदिवासी मूलवासी के हक और अधिकार को मजबूती से सदन से सड़क तक उठाने वाले नेता लोबिन हेंब्रम और झारखंड राज्य निर्माण के आंदोलनकारी नेता राज्य निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाने वाले स्व दुर्गा सोरेन की पत्नी सीता सोरेन को कैबिनेट मंत्री बनाया ही जाना चाहिए। दोनों के मंत्री बनने से एंव दलित वर्ग को भागीदारी मिलने से राज्य के दलित आदिवासी, मूलवासी समाज के देखे गए सपने पूरा होंगे और इन सबो के नेतृत्व में इन वर्गों का चहुमुखी समग्र विकास होगा जो आज तक नही हो सका है।

BRIEF NEWS

मुख्यमंत्री बनने के बाद चंपाई सोरेन पहली बार पहुंचे पैतृक गांव

SARAIKELA : मुख्यमंत्री का पद संभालने के के बाद चम्पाई सोरेन का बुधवार को सरायकेला-खरसावां के गम्हरिया प्रखंड स्थित अपने पैतृक गांव जिलिंगगोड़ा में पहली बार पहुंचे। इस अवसर पर ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री का पारंपरिक तरीके से अभिवादन और स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने यहां अमर वीर शहीद डीबा-किशुन जी व जागेश्वर टुडू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने सरना पूजा स्थल-जाहेरस्थान में पारंपरिक विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर राज्य की उन्नति और राज्यवासियों की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की।

राउरकेला में नकली शॉश फैक्ट्री की गई सील, लाखों का माल बरामद

ROURKELA : झीलपानी थाना अंतर्गत जगदा टुंगरी टोला में बाबा शॉश फैक्ट्री बुधवार को सील की गई। पुलिस की मदद से नकली सॉस फैक्ट्री का पदार्फाश हुआ। इस कार्रवाई में लाखों का माल जब्त कर बाबा शॉश फैक्ट्री सील को किया गया। झिलपनी थाना के इंस्पेक्टर द्वारा शिकायत पर नगर निगम के फूड सेफ्टी अधिकारी स्वागतिका बेहरा के अगुआई पर बाबा शॉश फैक्ट्री पर दबिश देकर नकली सॉस जब्त किया। फैक्ट्री से नकली टोमैटो शॉश के बोतल व चीनी के सहित 3 क्विंटल शॉश, 10 क्विंटल आलू कुंबड़ा के साथ मशीन जब्त की। फैक्ट्री मालिक को रेड का पता चलने पर फरार है। फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारियों को हिरासत में लेकर पूछताछ जारी है।

साकची थाना के पास से हटा अतिक्रमण

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के साकची थाना के पास पुराना करीम टॉकीज के पास बुधवार की सुबह टाटा स्टील ने अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस दौरान मौके पर 40 साल से जमे झोपड़ीनुमा दुकानों को हटाया गया। मौके पर गुमटी में दुकान चलाने वाले दुलाल चंद्र प्रमाणिक ने बताया कि उनकी दुकान कई साल पुरानी है। टाटा स्टील की ओर से बिना किसी नोटिस के दुकान को तोड़ दिया गया। दुकान में जो भी सामान था वह बर्बाद हो गया। अचानक हुई इस कार्रवाई से कई दुकानदारों की रोजी रोटी छीन गई है। बता दें कि टाटा स्टील की ओर से इस सड़क का चौड़ीकरण किया जाना है, इस कारण यह कार्रवाई की जा रही है।

भरत सिंह बने मानवाधिकार सहायता संघ के जिलाध्यक्ष

JAMSHEDPUR : मानवाधिकार सहायता संघ अंतरराष्ट्रीय के द्वारा जागरूकता अभियान कार्यक्रम के तहत पूर्वी सिंहभूम के भरत कुमार सिंह को जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है। उन्हें बुधवार को संघ के कोल्हान अध्यक्ष जवाहर लाल माहली ने नियुक्ति पत्र प्रदान किया। भरत कुमार सिंह परसुडीह के हलुदबोनी स्थित कोचा कोली के रहने वाले है। इनके द्वारा किये जाने वाले सामाजिक एवं जन समस्याओं के समाधान जैसे कार्य को देखते हुए संघ का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सहायता संघ के सरायकेला-खरसावां जिला अध्यक्ष अमीन मंडल एवं सहायक रंजन कारूवा उपस्थित थे।

आग से झुलसी किशोरी की इलाज के दौरान मौत

JAMSHEDPUR : बिष्टुपुर के धतकीडीह बी ब्लॉक की रहने वाली 15 वर्षीय किशोरी रेशम परवीन आग से झुलस गई थी। उसका इलाज एमजीएम में चल रहा था। बुधवार तड़के उसकी मौत हो गई। पांच दिनों पूर्व परिजनों ने उसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया था। मिली जानकारी के अनुसार प्रेम प्रसंग में किशोरी ने शरीर पर मिट्टी तेल डालकर आग लगा ली थी।

राहुल की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उमड़ी हजारों की भीड़

यात्रा को सफल बनाने के लिए कांग्रेस के नेताओं ने झोंकी ताकत

न्याय यात्रा में उमड़ी भीड़। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : बिरमित्रपुर में राहुल गांधी का भव्य स्वागत किया गया। कांग्रेस के केंद्रीय व प्रांतीय नेताओं ने यात्रा को सफल करने के ताकत झोंकी। बुधवार को राउरकेला में भारत जोड़ो न्याय यात्रा पहुंचने के बाद हॉकी चौक से रिंग रोड होते हुए उदित नगर अम्बेडकर चौक पर पहुंचा। यहां से राहुल गांधी ने खुली जीप में रोड शो किया। राहुल गांधी ने कहा ओड़िशा में भाजपा-बीजद की पार्टनरशिप सरकार चल रही है। ।राहुल के साथ प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

बाद में राहुल वेदव्यास से निकलकर 9:55 बजे उदितनगर अंबेडकर चौक पहुंचे, जहां से विशाल रोड शो शुरू हुआ। रोड शो राउरकेला मुख्य मार्ग से होते हुए पानपोस गांधी चौक तक पहुंचा। राहुल गांधी ने मौजूद जनता के साथ नेताओं और कार्यकताओं को संबोधित किया। इसी बीच गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करना भूल गए। राहुल गांधी के रोड शो को लेकर राउरकेला जिला पुलिस के द्वारा सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दिया गया था।

राहुल गांधी ने वेदव्यास शिवपीठ में की पूजा

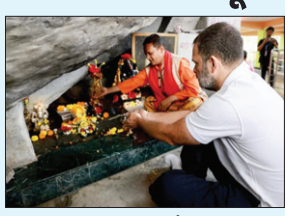

ROURKELA : ओडिशा में राहुल गांधी की भारत जोड़ न्याय यात्रा का आज दूसरा दिन है। सुबह 9 बजे राहुल वेद वेदव्यास शिवपीठ पहुंचे। वहां वेदव्यास मुनि गुफा में पूजा अर्चना की। शैवपीठ सरस्वती कुंड के साथ दूसरे मंदिर में गया ।अंत में, वेद व्यास ने गुरुकुल वैदिक आश्रम के अंतवासियों के साथ एक फोटो ली और उनसे बात की।

जयराम रमेश ने बीजेपी व बीजेडी पर साधा निशाना, बोले-

बीजेपी और बीजेडी में कोई अंतर नहीं राउरकेला को भी बेंच देगी मोदी सरकार

प्रेस कांफ्रेंस में उपस्थित जयराम रमेश व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने बुधवार को भारत जोड़ो न्याय यात्रा के मौके राजगांगपुर में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कर बीजेपी और बीजेडी दोनों सरकारों पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि बीजेपी और बीजेजे में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जयराम ने आगे कहा कि मोदी सरकार द्वारा देश को बेचा जा रहा है। बंदरगाह से लेकर फैक्ट्री तक निजी कंपनियों के हाथ दे रहा है। अगर तीसरी बार मोदी सरकार बनी तो राउरकेला को भी बेच देंगे। जानते हुए भी बीजेडी सरकार ने कभी भी मोदी सरकार के खिलाफ विरोध की आवाज नहीं उठाई है लेकिन परोक्ष रूप से दोनों सरकार दोनो का समर्थन कर रही है।

जयराम रमेश ने कहा कि दोनो पार्टियों का केवल कांग्रेस ही इसका विरोध करेगी। जयराम से पहले राहुल ने कहा कि ओडिशा में नवीन पटनायक और नरेंद्र मोदी की पार्टनरशिप में सरकार चल रही है। राहुल गांधी ने कहा कि उन्होंने संसद में ऐसा नजारा देखा है। प्रधानमंत्री ने मांगी मदद, मुख्यमंत्री कर रहे सहयोग। राज्य के 30 लाख लोग काम के लिए राज्य से बाहर जा रहे हैं। 30 उद्यमियों ने आकर ओडिशा को लूटा है। राहुल गांधी ने शिकायत की है कि गरीबों, आदिवासियों, शोषितों और पिछड़े वर्गों की उपेक्षा की जा रही है। ओडिशा में बेरोजगारी बढ़ गई है जबकि कई औद्योगिक प्रतिष्ठान बंद हैं। दूसरी ओर, कांग्रेस लोगों के लिए संघर्ष करती रहती है।

सड़क दुर्घटना में रोजगार सेवक की मौत

लाश के साथ अस्पताल में जुटे परिजन। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : बहरागोड़ा थाना क्षेत्र के गोस्वामी पेट्रोल पंप के समीप एनएच 18 के सर्विस रोड पर चार पहिया वाहन ने बाइक सवार केसरदा गांव निवासी रोजगार सेवक शिवलाल बेरा (48) जोरदार टक्कर मार दी जिसे स्थानीय लोगों की सहायता से पुलिस पेट्रोलिंग वाहन द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बहरागोड़ा लाया गया जहां पर चिकित्सकों में जांच उपरंत मृत घोषित कर दिया गया। वहीं पुलिस घटना स्थल से चार पहिया वाहन का गिरे नंबर प्लेट जप्त कर अपने स्तर से जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है।

उधर घटना का सूचना पाते ही बहरागोड़ा के विधायक समीर कुमार मोहंती, बहरागोड़ा प्रखंड कार्यालय के प्रखंड विकास पदाधिकारी केशव भारती, अंचल अधिकारी भोला शंकर महतो तथा सभी प्रखंड कार्यालय के कर्मी पहुंचकर शोक प्रकट किया। साथ ही विधायक ने प्रखंड विकास पदाधिकारी व अंचल अधिकारी सरकारी प्रावधान के तहत मुआवजा देने का निर्देश दिया। मिली जानकारी के अनुसार बाइक चालक अपने घर से पाठपुर पंचायत अवस्थित कार्य क्षेत्र आ रहे थे तभी यह दुर्घटना घटित हो गया।

डीएलएसए, चैबर व बाल आयोग के संयुक्त तत्वावधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन

अंधविश्वास से बचें, यह अपराध है : राजीव

विधिक जागरूकता शिविर में जानकारी देते वक्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : जिला विधिक सेवा प्राधिकार पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा के तत्वावधान में झींकपानी स्थित साई स्पंज फैक्ट्री परिसर में चाईबासा चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज और राज्य बाल संरक्षण आयोग के संयुक्त तत्वाधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस विधिक जागरूकता शिविर में मुख्य वक्ता के रूप में प्राधिकार के सचिव राजीव कुमार सिंह ने उपस्थित ग्रामीणों और मजदूरों को विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यों की जानकारी देते हुए बताया कि प्राधिकार के द्वारा प्रत्येक माह लोक अदालत और अंतराल में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन नियमित तौर पर कोर्ट परिसर में किया जाता है। जिसका लाभ लोग अपने सुलहनीय मामलों के निपटारे के लिए उठा सकते हैं।

उन्होंने वृद्ध जनों, महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जाति और जनजाति के व्यक्तियों और दिव्यांग जनों को प्राधिकार के द्वारा प्रदान की जा रही विशेष रूप से मिलने वाले लाभ की जानकारी प्रदान की। उन्होंने यह भी बताया कि प्राधिकार के माध्यम से एक सादे कागज पर लिखकर आवेदन दिया जाना ही पर्याप्त है। लोगों को अपनी किसी भी समस्या के समाधान के लिए प्राधिकार से संपर्क करना चाहिए। प्राधिकार के द्वारा समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से कार्य करने की योजना है। सरकारी जन कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को उसकी जानकारी उपलब्ध कराना भी प्राधिकार की प्राथमिकता में सम्मिलित है। विधिक जागरूकता जैसे कार्यक्रमों के द्वारा प्राधिकार लोगों में चेतना जगाने का काम करती है।

केंद्रीय मंत्री मुंडा किसानों के लिए शुरू करेंगे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

PHOTON NEWS CHAIBASA : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार 8 फरवरी 2024 को देश के कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए तीन महत्वपूर्ण पहल शुरू करने जा रहा है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा जनजातीय कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के अंतर्गत केंद्रीयकृत किसान रक्षक हेल्पलाइन 14447 और पोर्टल, कृषि-बीमा सैंडबॉक्स फ्रेमवर्क प्लेटफार्म सारथी व कृषि-समुदाय के लिए लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) प्लेटफार्म एक समारोह में लांच करेंगे।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी भी उपस्थित रहेंगे। ये पहले डिजिटल नवाचार व व्यापक जोखिम सुरक्षा समाधानों के माध्यम से किसान समुदाय के कल्याण और स्थायित्व को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन के सहयोग से लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम कृषि क्षेत्र में प्रशिक्षण व ज्ञान साझा करेगा। यह प्रमुख कृषि योजनाओं को लागू करने की चुनौतियों का समाधान भी करेगा और हितधारकों के बीच निरंतर सीखने और समन्वय को सुविधाजनक बनाएगा।

इसी तरह, भारत सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत एक केंद्रीयकृत किसान रक्षक हेल्पलाइन और पोर्टल विकसित किया है। अब इस योजना के अंतर्गत नामांकित सभी किसान या जो भी किसान अपनी फसल का बीमा करवाना चाहते हैं, वे अपनी चिंताओं और शिकायतों को दर्ज करने के लिए केंद्रीय हेल्पलाइन नंबर 14447 पर कॉल कर सकते हैं। जिससे समय पर समर्थन और पारदर्शी संचार सुनिश्चित होगा। पारंपरिक फसल बीमा से परे जाकर, भारत सरकार ने सारथी-एक व्यापक बीमा प्लेटफार्म विकसित किया है। सारथी किसान समुदाय की विविध जरूरतों को पूरा करने के लिए कई बीमा उत्पाद प्रदान करता है। जिसमें स्वास्थ्य और जीवन बीमा से लेकर कृषि उपकरणों और अन्य के लिए कवरेज शामिल है।

वीमेंस यूनिवर्सिटी की छात्रा ने इंडो नेपाल कराटे चैंपियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी की छात्रा कर्णिशा दास ने पिछले दिनों तेलांगाना के करीमनगर में आयोजित इंडो-नेपाल कराटे चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीत कर यूनिवर्सिटी और शहर को गौरवांवित किया है। कर्णिशा दास यूनिवर्सिटी में एमए अंग्रेजी की छात्रा है। कर्णिशा दास ने इस चैंपियनशिप में 21 से 24 वर्ष से कम आयु वर्ग कि प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लिया था। इसमें भारत और नेपाल के 14 राज्यों से 1000 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए थे।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो (डॉ) अंजिला गुप्ता ने कर्णिशा की जीत एवं इस उपलब्धि पर खुशी व्यक्त की है। कर्णिशा दास कराटे एसोसिएशन के नागेश्वर राव, मुख्य कोच टाटा स्टील कराटे प्रशिक्षण केंद्र और महासचिव झारखंड राज्य कराटे एसोसिएशन के कुशल मार्गदर्शन में वर्ष 2011 से प्रशिक्षण ले रही हैं। कर्णिशा दास ने विभिन्न राज्यों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और जीता है।र दी जिसे स्थानीय लोगों की सहायता से पुलिस पेट्रोलिंग वाहन द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बहरागोड़ा लाया गया जहां पर चिकित्सकों में जांच उपरंत मृत घोषित कर दिया गया। वहीं पुलिस घटना स्थल से चार पहिया वाहन का गिरे नंबर प्लेट जप्त कर अपने स्तर से जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है।

उधर घटना का सूचना पाते ही बहरागोड़ा के विधायक समीर कुमार मोहंती ,बहरागोड़ा प्रखंड कार्यालय के प्रखंड विकास पदाधिकारी केशव भारती , अंचल अधिकारी भोला शंकर महतो तथा सभी प्रखंड कार्यालय के कर्मी पहुंचकर शोक प्रकट किया। साथ ही विधायक ने प्रखंड विकास पदाधिकारी व अंचल अधिकारी सरकारी प्रावधान के तहत मुआवजा देने का निर्देश दिया।

चिलगु में सनातन धर्म सम्मेलन संपन्न, कीर्तन में उमड़े श्रद्धालु

PHOTON NEWS SARAIKELA : श्रीमद्भागवत कथा प्रचारक समिति, चिलगु की ओर से आयोजित सप्ताहव्यापी सनातन धर्म सम्मेलन बुधवार को श्रीमद्भागवत परिक्रमा, नगर कीर्तन और प्रसाद वितरण के साथ संपन्न हुआ। सम्मेलन समापन के अवसर पर ब्राम्हण भोजन और भोग वितरण का आयोजन किया गया। धर्म सम्मेलन का शुभारंभ 31 जनवरी को कलश यात्रा के साथ हुआ था। धर्म सम्मेलन में पश्चिम बंगाल के श्रीधाम नवद्वीप, नदिया से आए कथा वाचक गिरिधारी शास्त्री महाराज द्वारा श्रीमद्भागवत कथा सुनाई गई।

इस दौरान प्रतिदिन महायज्ञ के साथ प्रातः छह से दोपहर 12 बजे तक श्रीमद्भागवत कथा का मूल श्लोक पाठ हो रहा था। वहीं, शाम चार से रात्रि आठ बजे तक संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा पर प्रवचन दिया जा रहा था। प्रतिदिन कथा सुनने के लिए आसपास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते थे।

वन अधिकार समितियों को मिला अधिकार अधिनियम का प्रशिक्षण

PHOTON NEWS CHAIBASA : आदिवासी शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र चाईबासा टीआरटीसी में बिरसा के तत्वावधान में 6 से 7 फरवरी 2024 को वन अधिकार अधिनियम 2006 पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में मझगांव, कुमारडुंगी एवं हाटगम्हरिया तीन प्रखंड के वन अधिकार समिति सदस्यों ने भाग लिया। बिरसा ने इस प्रशिक्षण में अपने पारंपरिक सीमा के अंदर के परंपरागत अधिकार के लिए दावा पेश करने हेतु दवा अभिलेख तैयार करना था।

बिरसा के द्वारा वन अधिकार समिति सदस्यों को दवा पत्र के साथ संलग्न होने वाले आवश्यक दस्तावेज एवं वनों का नजरी नक्शा बनाने के बारे में जानकारी दिया गया। साथ ही साथ वन पट्टा हेतु ग्राम सभा एवं वनाधिकार समिति की जिम्मेदारी और भीम के बारे में प्रशिक्षण माध्यम से जानकारी दिया गया। प्रशिक्षण में उपस्थित वन अधिकार समितियां ने सामुदायिक वन अधिकार पत्र के लिए दवा अभिलेख भी तैयार किया। मौके पर सुखलाल सिंकू, गुरूचरण बागे, दिनेश हेंब्रम, हीरामनी देवगम, श्याम सुंदर बिरुवा, सावित्री भेंगरा आदि मौजूद थे।

अनियंत्रित ट्रक ने महिला को मारी टक्कर, मौत

PHOTON NEWS SARAIKELA : रांगामाटी-सिल्ली सड़क पर ईचागढ़ थाना क्षेत्र के रुगड़ी बाजार के समीप बुधवार को अनियंत्रित ट्रक ने सड़क पर चल रही एक वृद्धा को जोरदार धक्का मारा। अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आने से वृद्धा की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। मृतक वृद्धा की पहचान रुगड़ी गांव के रहने वाली 65 वर्षीय बीनन देवी के रूप में किया गया। बताया जा रहा कि वृद्धा जनवितरण प्रणाली की दुकान से अपना राशन लेने जा रही थी।

इसी दौरान सिल्ली की ओर से रांगामाटी की ओर जा रहे ट्रक ने पीछे से उसे जोरदार धक्का मारा। ट्रक के धक्के से वृद्धा सड़क पर औंधे मुंह गिरी, जिसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। मौके पर उपस्थित उग्र ग्रामीणों ने धक्का मारने वाले ट्रक को पकड़ लिया। ग्रामीणों ने मुआवजा और आबादी वाले क्षेत्र में वाहनों की रफ्तार धीमा रखने की मांग पर सड़क जाम कर दिया।

राउरकेला में 29वें पुस्तक मेले के पांचवां दिन साहित्यिक संध्या का हुआ आयोजन

ओधना अस्मिता व मधुबाबू पर हुआ काव्य पाठ

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला में 29वें पुस्तक मेले के पांचवें दिन वसुधेब कुटुंबकम एवं सांस्कृतिक अकादमी की ओर से साहित्य संध्या का आयोजन किया गया। प्रथम चरण में वसुधैव कुटुंबकम की अध्यक्ष विजयलक्ष्मी पटनायक की अध्यक्षता में आयोजित की।

इस दौरान मुख्य वक्ता प्रोफेसर गिरिजा शंकर गोस्वामी, सम्मानित अतिथि अजीत पुजारी और आशुतोष महापात्र शामिल हुए। डिबेट प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर, चिन्मय विद्यालय, एनएसी एसटी गवर्नमेंट हाई स्कूल, डीएवी पब्लिक स्कूल, बाजीराउत शिक्षक निकेतन, दिल्ली पब्लिक स्कूल, एनआईटी हाई स्कूल के छात्रों ने भाग लिया।

इसी तरह दूसरे चरण में सांस्कृतिक अकादमी की ओर से साहित्य संध्या में ओधना अस्मिता और मधुबाबू के विषयों पर सेमिनार और काव्य पाठ का आयोजन किया गया। चर्चा में डॉ. प्रभात कुमार मल्लिक, स्तंभकार भूपेन महापात्र, विचित्रानंद साहू प्रमुख ने भाग लिया जबकि मंच का संचालन महासचिव काशीनाथ पात्र ने किया। आलोचकों ने उड़िया के निर्माण में मधुबाबू की भूमिका और उड़िया भाषा की पहचान पर चर्चा की। पहले कार्यक्रम में सुशांत नायक और दूसरे कार्यक्रम में बलराम राउल ने काव्य पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया।शहर के जाने-माने कवियों ने काव्य पाठ किया।

तिरूलडीह के ग्रामीण अधूरे सड़क निर्माण से हैं परेशान, ना मुआवजा ना सड़क : अमर महतो

अमर महतो।

PHOTON NEWS SARAIKELA : आदारडीह से मिलन चौक सड़क निर्माण के 6 वर्ष के बाद भी दर्जनों घर- दुकान का मुआवजा अब तक नहीं मिला। इचागढ़ ,कुकुडू और नीमड़ी प्रखंड से होकर गुजरने वाले प्रमुख सड़क ठल्ल-32 है। जिला भू- अर्जन कार्यालय द्वारा अब तक किसी तरह का सकारात्मक पहल नहीं किया गया है।

पथ निर्माण विभाग एवं भू अर्जन कार्यालय के बीच फाइल बंद पड़ा है। मुआवजा प्राप्त नहीं होने से पीड़ित परिवारों का घर मरम्मत एवं निर्माण कार्य रुका हुआ है। तिरूलडीह एवं सिरकाडीह में सड़क निर्माण करने वाले ठेकेदार अधूरा सड़क निर्माण कर समस्या उत्पन्न किया। पश्चिम बंगाल से आने वाले दर्जनों ट्रक सड़क चौड़ीकरण ना होने के कारण रात भर फंसे रहते हैं। सड़क पर छोटी-मोटी दुर्घटना होती है। इचागढ़ विधायक सविता महतो ने भी इस पर कोई विशेष सकारात्मक पहल नहीं किया। रांची सांसद संजय सेठ ने भी ग्रामीणों की पीड़ा नहीं सुनी।

टिकर-झाड़ूवा गांव में भी कुछ ग्रामीणों का मुआवजा अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। इसको लेकर भी ग्रामीण ने बैठक कर सामुदायिक निर्णय लेने की बात कही। ग्रामीण स्थानीय नेता एवं जिला प्रशासन के कार्यों से काफी परेशान है जिला कार्यालय भी 50 किलोमीटर दूर दराज होने के कारण प्रशासन एवं ग्रामीणों के बीच बातचीत का माहौल नहीं बनता है।

आनंद मोहन का पासपोर्ट जब्त करने का आदेश

SC ने कहा- 15 दिनों में लोकल थाने में लगाएं हाजिरी, 27 फरवरी को आएगा फैसला

एजेंसी

पटना । बाहुबली नेता व पूर्व सांसद आनंद मोहन की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें तत्काल अपना पासपोर्ट जमा करने का आदेश दिया है। साथ ही हर 15 दिन में लोकल थाने में हाजिरी लगाने को कहा है। जी कृष्णैया की पत्नी उमा कृष्णैया की याचिका पर सुनवाई करते हुए मंगलवार को जस्टिस सूर्यकांत और केवी विश्वनाथन की बेंच ने ये आदेश दिए हैं। उमा कृष्णैया आनंद मोहन की रिहाई का विरोध कर रही है। मामले की अगली सुनवाई 27 फरवरी को होगी। कोर्ट ने इस मामले में केंद्र सरकार के रवैये पर गहरी नाराजगी जताई है। दरअसल, याचिका दायर करने वाली उमा देवी कृष्णैया ने केंद्र सरकार को भी प्रतिवादी बनाया था। लेकिन, केंद्र सरकार की ओर से कोर्ट में कोई

जवाब नहीं दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को जमकर फटकार लगाते हुए इस मामले में एक सप्ताह में जवाब देने को कहा है।कोर्ट ने कहा है कि ये मामला लगातार टल रहा है। कभी राज्य सरकार समय मांगती है, तो कभी केंद्र सरकार जवाब नहीं देती है। मामले को और अधिक टाला नहीं जा सकता। केंद्र सरकार को इस मामले में एक सप्ताह में जवाब देने को कहा गया है। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि वह इस मामले में आखिरी फैसला सुनाएगी। इसके

लिए 27 फरवरी को सुनवाई की आखिरी तारीख रखी गई है।कोर्ट ने 8 मई को बिहार सरकार को दिया था लास्ट चांस 8 मई को रिहाई के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बिहार सरकार को लास्ट चांस दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने बिहार सरकार से आनंद मोहन की रिहाई के मूल रिकॉर्ड पेश करने को कहा था, जिसके आधार पर पूर्व सांसद को छोड़ा गया है। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के नोटिस का जवाब देने के लिए वक्त मांगा था।दरअसल, गोपालगंज के तत्कालीन DM जी कृष्णैया की पत्नी उमा कृष्णैया ने आनंद मोहन की रिहाई के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। इस याचिका पर 8 मई को जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जेके माहेश्वरी ने पहली सुनवाई की थी। उस दिन कोर्ट ने बिहार सरकार और आनंद मोहन दोनों को नोटिस जारी किया था। साथ ही दो हफ्ते में इस मामले की सुनवाई करने की बात कही थी।16 साल जेल में बिताने के बाद 27 अप्रैल को हुई थी आनंद मोहन की रिहाईआनंद मोहन गोपालगंज के DM रहे जी कृष्णैया की हत्या में शामिल होने के दोषी हैं। इस मामले में उम्र कैद की सजा के तौर पर उन्होंने 16 साल जेल में बिताए हैं। बिहार सरकार ने 10 अप्रैल को कारा नियमों में बदलाव किया, जिसके बाद उनकी रिहाई का रास्ता साफ हो गया। 27 अप्रैल 2023 को आनंद मोहन की रिहाई हुई थी।

नौ धुर जमीन के लिए मछली कारोबारी की दिनदहाड़े हत्या

बेगूसराय । बेगूसराय में बेखौफ अपराधियों ने बुधवार सुबह मछली कारोबारी की गोली मार कर हत्या कर दी। बदमाशों ने पहले बाइक से कारोबारी को टक्कर मारी। फिर जब वो भागने लगा तो सिर में गोली मार दी। उसकी मौके पर ही मौत हो गई।वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। मृतक की पहचान करोर निवासी बतहु सहनी के पुत्र आमिर सहनी (27) के रूप में की गई है। बताया जा रहा है कि पिछले कुछ दिनों से आमिर का नौ धुर जमीन को लेकर किसी व्यक्ति से विवाद चल रहा था। परिजन ने आशंका जताई है कि इस विवाद के चलते उसकी हत्या की गई है।घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। मौके पर से दो संदिग्ध को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। घटना चेरिया बरियारपुर थाना क्षेत्र के चेरिया बरियारपुर-छौड़ाही मुख्य सड़क पर चुहरमल बाबा स्थान के पास की है।आमिर के भाई शंकर सहनी का कहना है कि आमिर प्रत्येक दिन की तरह आज भी सुबह 5 बजे उठे और साइकिल से कावर झील मछली पकड़ने जा रहा था। इसी दौरान चौहरमल बाबा स्थान के समीप बदमाशों ने गोली मार दी। गोली की आवाज सुनकर जब तक लोग दौड़े, मौके पर देखा कि उसकी मौत हो गई है।परिजन का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से गांव के ही एक व्यक्ति से जमीन विवाद चल रहा था। जमीन की मापी भी हुई थी, लेकिन वह मानने को तैयार नहीं था। नौ धुर जमीन जबरदस्ती कब्जा करने के चक्कर में आमिर की हत्या की गई है। प्रशासन गोली मारने वाले को पकड़ कर कड़ी से कड़ी सजा दे।

9 वीं की छात्रा के साथ गैंगरेप रेप मामला

आरा । भोजपुर के कोईलवर थाना इलाके के एक गांव में गुरुवार की रात नौवीं कक्षा की छात्रा के साथ गैंगरेप मामले में परिजन और लोजपा कार्यकर्ता ने सदर अस्पताल के चिकित्सक डॉ.नरेश प्रसाद के खिलाफ जमकर हंगामा किया।यही नहीं हंगामा के दौरान पीड़ित छात्रा के परिजन एवं लोजपा के कार्यकर्ता प्रसूति विभाग और ओटी गेट पर धरने पर भी कुछ देर बैठ गए। उन लोगों ने डॉ.नरेश प्रसाद पर मेडिकल बोर्ड में रहने से इनकार करने व चल रहे मेडिकल बोर्ड में आकर बोर्ड में शामिल महिला चिकित्सक डॉ.मधुबाला सिन्हा के कान में कुछ बोलने कर मामले को रफादफा करने का आरोप लगाया है।इसको लेकर सदर अस्पताल परिसर के प्रसूति वाहय विभाग व ओटी के बाहर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही।वहीं हंगामा की सूचना पाकर टाउन थानाध्यक्ष संजीव कुमार एवं टाउन थाना गश्ती टीम आरा सदर अस्पताल पहुंची और समझा बूझकर पीड़ित छात्रा के परिजनों को शांत कराया। पीड़ित का मेडिकल जांच करने को लेकर मंगलवार को एक बोर्ड टीम का गठन किया गया था। इसमें डॉ.नरेश प्रसाद,डॉ.मधुबाला सिन्हा, डॉ.विजेता एवं डॉ.नवनीत चौधरी शामिल थे। लेकिन हालात को देखते हुए गठित बोर्ड टीम में संशोधित कर सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ.अरुण कुमार,डॉ.मधुबाला सिन्हा,डॉ. शाजिया बदर एवं डॉ.नौतीत चौधरी को शामिल किया गया।

सड़क हादसे में इंटर परीक्षार्थी समेत तीन घायल

आरा । भोजपुर के आराझबक्सर मुख्य मार्ग गजराजगंज ओपी के धमार मोड़ के समीप बुधवार की सुबह अनियंत्रित कार ने बाइक सवार इंटर के परीक्षार्थी के समेत तीन लोगों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना जबरदस्त था कि बाइक सवार तीनों युवक बस से जा टकराए । इस हादसे में तीनों दोस्त बुरी तरह जख्मी हो गए, इसके बाद आननझफानन में जख्मियों को राहगीरों के मदद से इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया ।जख्मियों में गजराजगंज ओपी अंतर्गत धमार गांव निवासी दीपक साह के 18 वर्षीय पुत्र कौशल उर्फ गोलू,अशोक चौधरी का 18 वर्षीय पुत्र अभय कुमार और राजू चौधरी का 18 वर्षीय पुत्र छोटू कुमार शामिल है। इधर,जख्मी गोलू के दोस्त मुकेश कुमार ने बताया कि कौशल का आज इंटर की परीक्षा थी,जिसको लेकर अपने दो दोस्त अभय एवं छोटू के साथ बाइक पर सवार होकर आरा शहर स्थित क्षत्रिय उच्च विद्यालय परीक्षा केंद्र पर परीक्षा पर आ रहे थे ।इसी बीच धमार मोड़ के समीप बक्सर की ओर से आ रही बेलगाम कार ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतना जबरदस्त था की बाइक सवार सामने से जा रहे बस से टकरा गए।इस हादसे में तीन दोस्तों को गंभीर चोटें आई है। इसके बाद राहगीरों ने इसकी सूचना परिजनों को दी। उसके बाद इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद तीनों घायलों को गंभीर अवस्था में बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया गया।

उपेंद्र कुशवाहा की नजर अब लोकसभा पर टिकी हुई है।

एजेंसी

सीतामढ़ी । बिहार में लोकसभा चुनाव के मध्यनजर आरएलजेडी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा की नजर अब सीतामढ़ी लोकसभा पर टिकी हुई है। बतादे की आरएलजेडी प्रमुख और पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा सोमवार को सीतामढ़ी महारैली को संबोधित करते हुए शहीद रामफल मंडल की जयंती पर संकेत दिए हैं।इस जनसभा को संबोधित करते कुशवाहा ने कहा कि सीतामढ़ी से मेरा अलग ही लगाव है। सीतामढ़ी के लोगों का मैं कर्जदार हूं। उन्होंने कहा की 2009 में और 2014 में सीतामढ़ी की जनता ने हम पर विश्वास किया और हमारे

उम्मीदवार को यहां से पार्लियामेंट में भेजने काम किया है। इस लिए सीतामढ़ी की जनता के लिए हमेशा काम करता रहा हूं। बतादे की महारैली में लोगो की भीड़ देखकर भी कुशवाहा काफी प्रसन्नता व्यक्त की।राज्य में जब महागठबंधन की सरकार चल रही थी तब उपेंद्र कुशवाहा काराकाट लोकसभा से चुनाव लड़ने की तैयारी शुरू कर दी थी। तब की स्थिति यह थी कि जदयू महागठबंधन के साथ थी। इस समीकरण के विरुद्ध उपेंद्र कुशवाहा के काराकाट से लड़ने की सहमति भी एनडीए रणनीतिकारों ने दे दी थी।उपेंद्र कुशवाहा यहां से चुनाव लड़े भी और 2014 में राजद के उम्मीदवार कांति सिंह को लगभग 1 लाख मतों से परास्त किया था। परंतु 2019 के लोकसभा चुनाव में उपेंद्र कुशवाहा को हार का सामना करना पड़ा। इन्हें जदयू के महाबली सिंह से हार भी मिली। अब स्थितियां बदली और नीतीश कुमार जब एनडीए में आ गए तो कुशवाहा की चुनावी मनसा पर विराम लग गया है।जदयू की सीटिंग सीट गठबंधन धर्म के तहत जदयू के पास जाएगी। ऐसे में सीतामढ़ी और उजियारपुर उनकी पसंदीदा लोकसभा सीट है। इन सीटों पर उनका जातीय आधार भी मजबूत है।

भाजपा नेता के बेटे का अपहरण

बेतिया । बेतिया में कोचिंग जा रहे भाजपा नेता के बेटे का अपहरण कर लिया गया है। घटना मुफस्सिल थाना के चरंगाहा मिश्रा टोली की है। सूचना पर पहुंची मुफस्सिल थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। एसपी अमरकेश डी ने बताया कि अपहरण का मामला नहीं है। बच्चा खुद से गया है। सीसीटीवी फुटेज देखा जा रहा है। जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा।भाजपा नेता वीरेंद्र राय का बेटे आदित्य राज (14) का रामकृष्ण स्कूल में नौवीं क्लास का छात्र है। वह बुधवार सुबह 8 बजे साइकिल से कोचिंग जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में बाइक सवार अपराधी उसे उठा ले गए। घटना के बाद परिजन रोते-बिलखते घटनास्थल पर पहुंचे। घटना से इलाके में दहशत का माहौल है।पटना के बिहटा से टीचर राजकिशोर के अगवा बेटे तुषार राज (12) की अपहरण के डेढ़ घंटे बाद ही गला दबाकर हत्या कर दी गई थी। फिर चाकू से मारा गया। आखिर में पहचान छिपाने के लिए शव को पेट्रोल डालकर जला दिया गया था। फिर 40 लाख रुपए की फिरौती मांगी गई थी।

ग्राहक बनकर आई महिला दुकान से चुराई सोने की अंगूठी

मुंगेर । मुंगेर जिला अंतर्गत कोतवाली थाना क्षेत्र के बेकापुर सोना पट्टी में मंगलवार की शाम एक सोना चांदी की दुकान में सोने की अंगूठी खरीदने आई एक महिला ने अंगूठी की चोरी कर ली। जिसका दुकान में लगा सीसीटीवी कमरे में भी तस्वीर कैद हो गई है। जिसका वीडियो भी सामने आया है। हालांकि महिला की पहचान अब तक नहीं हो सकी है।घटना की जानकारी दुकानदार को जब लगा सबसे पहले वह अपने परिजनों को इस घटना से अवगत करायाहै। उसके बाद थाना में आवेदन देने की प्रक्रिया की जा रही है। यह घटना बेकापुर सोना पट्टी स्थित केदारनाथ मुकेश चंद्र ज्वेलर्स दुकान में हुई है। घटना की जानकारी देते हुए पीड़ित दुकानदार मुकेश कुमार वर्मा के द्वारा बताया गया कि एक महिला दुकान में सोने की अंगूठी खरीदारी करने के लिए आई थी। जिसके बाद उसे विभिन्न तरह के अंगूठी दिखाया गया।इसी बीच जो महिला अंगूठी की खरीदारी के लिए आई थी वह अपने हाथों के अंगुली में पहनी हुई डुप्लीकेट अंगूठी को हाथों से निकाल कर उसे मेरे दुकान में गिरा दिया। इस बीच जब हम लोग उसे अंगूठी को खोजने लगे। इसी बीच महिला एक सोने की अंगूठी जो लगभग 28 हजार का

घास की खेती ने किसान की बदली किस्मत

एजेंसी

गोपालगंज । गोपालगंज में एक किसान पिछले कई वर्षों से औषधीय पौधों की खेती कर सलाना 20 से 25 लाख की कमाई कर पनी खास पहचान बनाई है। साथ ही वैसे किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं, जिन किसानों के फसल बाढ़ और अतिवृष्टि में बर्बाद हो जाते हैं। बाढ़ और अतिवृष्टि से परेशान किसानों के लिए खस लेमन ग्रास की खेती किसी वरदान से कम नहीं।हम बात कर रहे है जिले के सदर प्रखंड के कररिया गांव निवासी स्व नंदलाल भगत के बेटा मेघराज प्रसाद की जिन्होंने वर्ष 2016 में करीब एक बीघे में खस की खेती की शुरूआत की थी। तब गांव में सब किसान मेघराज का मजाक उड़ाते थे, उसे पागल कहते थे। खस की खेती को लेकर अब

वही लोग मेघराज की प्रशंसा कर रहे हैं। किसान मेघराज उन सफल किसानों में गिने जाते हैं, जिन्होंने मेहनत से अपने लिए रास्ता बनाया और आत्मनिर्भर बने।दो भाइयों और एक बहनों में बड़ा मेघराज के पिता पेशे से किसान थे। जो अन्य किसानों की तरह ही अपनी खेती करते थे। मेघराज भी अपने पिता के कामों में हाथ बटाते थे। तब उनकी पारिवारिक स्थिति काफी खराब थी। खेती से पूरा परिवार बमुश्किल से चल पाता था। जिसके कारण मेघराज ने मैट्रिक तक ही पढ़ाई कर सके। तभी उन्होंने मन में यह ठान लिया कि एक न एक दिन वो ऐसी

खेती कर आत्मनिर्भर बनेंगे जो अन्य लोगों की खेती से अलग हो और कम लागत में ज्यादा मुनाफा दे।मेघराज ने अरूणाचल में एक मित्र के सहयोग से औषधीय पौधों के बारे के जानकारी पाई और नेट पर सर्च कर कम दाम में बेहतर काम करने के लिए खस के खेती के बारे में पता लगाया। जिसके बाद तत्काल लखनऊ के सीमैप रिसर्च सेंटर गए। जहां से उन्हों 20 हजार में 10 हजार खस की बीज खरीदी और अपने खेतों में डाल दी। शुरूआती दौर में उन्होंने एक बीघे मे खेती की जिसमें एक लाख की आमदनी हुई। देखते ही देखते उन्होंने जिले के अलावा सिवान, सासाराम, मोतिहारी के अलावा कुशी नगर में कुल 1सौ एकड़ में औषधियों पौधे लगाना डाली है।किसान मेघराज ने कहा कि पहले मोतिहारी के पिपराकोठी में पेराई कर इसका तेल निकाला जाता है, जो 17 हजार प्रति लीटर बिकता है। आज मैंने जीरो से हीरो का सफर तय किया है। और आज मुझे खुशी है कि मैं अपने काम में बेहतर कर रहा हूं। अब मैंने खुद का प्लांट भी लगा डाला है और खुद से तेल निकालते है।उन्होंने बताया कि पहले कंस्ट्रक्शन कंपनी में ठेकेदार के पद पर काम करते थे। लेकिन वह काम रास नहीं आया। हमेशा से ही मैं खेती करना चाहता था। अंततः मैंने नया सोच नया सवेरा के तहत काम करना शुरू कर दिया इसे लगाने में अलग से कोई विशेष खर्च नहीं होता।

संक्षिप्त डायरी

कबाड़ी की दुकान में लगी भीषण आग

हाजीपुर । वैशाली के भगवानपुर में एक कबाड़ी दुकान में भीषण आग लग गई है। जिससे कबाड़ी दुकान में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया है। वहीं, आग लगने से लाखों की क्षति होने का अनुमान है। आग इतनी भयावह है कि उसपर काबू पाने के लिए दमकल की 6 गाड़ियों को कड़ी मशक्कत करने के बाद आग पर काबू पाया जा सका है।घटना भगवानपुर थाना क्षेत्र के भगवानपुर अड्डा चौक रतनपुरा ओवरब्रिज के पास की है। बताया जा रहा है कि ओवरब्रिज के पास मुकेश कुमार साह के कबाड़ी का दुकान है जो बंद था। लेकिन देर रात दुकान से आग की लपटें निकलने लगी। जिसके बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना भगवानपुर थाने की पुलिस को दी।जिसके बाद भगवानपुर थाना ने हाजीपुर, गोरौल, बेलसर, से 6 दमकल को बुलाया और मौके पर पहुंचे दमकल कर्मी आग बुझाने में जुट गए। आग इतनी भीषण थी कि उसपर काबू पाने में दमकल कर्मियों को घंटों मशक्कत करना पड़ा तब जाकर आग पर काबू पाया जा सका है।

मैं अपनी तकलीफ किसी को नहीं बता सकता

पूर्णिया। पूर्णिया में एक छात्र ने फंदे से झूलकर खुदकुशी कर ली। छात्र का शव सहायक खजांची थाना के कसाई मोहल्ला के आशियाना कॉलोनी स्थित इंजीनियर लॉज में पंखे से लटकता मिला। उसके कमरे से एक सुसाइड नोट भी बरामद हुआ है।सुसाइड नोट में लिखा है- 'मैं अपनी तकलीफों को किसी को नहीं बता सकता है। उसकी जिंदगी एक ऐसे मोड़ पर आ खड़ी हुई थी। जिसकी उसने कभी उम्मीद भी नहीं की थी। आखिर में उसने लिखा कि मेरे भतीजे का ख्याल रखिएगा।'मृतक इंटर (11वीं। का छात्र था। वह लॉज में रहकर पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए मेडिकल शॉप में काम करता था। घटना की सूचना मिलते ही सहायक खजांची थाना की पुलिस और फोरेंसिक की टीम मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गई है।मृतक की पहचान डगरूआ थाना क्षेत्र के गोविंदपुर गांव निवासी गुलाम रसुख के बेटे मो. मुशफीक उर्फ बाबू (22) के के रूप में हुई है। वह पिछले 2 साल से लॉज में रह रहा था।लॉज में रहने वाले स्टूडेंट्स ने बताया कि मो. मुशफीक कुछ दिनों से परेशान चल रहा था। वो एक मेडिकल शॉप में काम करता था, मगर पिछले दो से तीन दिनों से उसने मेडिकल शॉप भी जाना बंद कर दिया था और रूम में ही रहता करता था।देर शाम लॉज से बाहर घूमने निकलने को लेकर जब उन्होंने मुशफीक के मोबाइल पर कॉल किया। तो उसने एक बार भी कॉल रिसीव नहीं किया। काफी दरवाजा खटखटाने के बाद भी मो.मुशफीक ने अपना कमरा नहीं खोला। इसके बाद लॉज की खिड़की से कमरे के भीतर झांकने पर मो.मुशफीक का शव फंदे से लटकता हुआ मिला।

चेन स्नेचिंग का शिकार हुई महिला मुखिया

नालंदा । अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल राजगीर में इन दिनों महिलाओं से चेन स्नेचिंग का मामला बढ़ता जा रहा है। मंगलवार को एक महिला की गले से चेन छिनकर बदमाश फरार हो गए।इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मामला राजगीर के ब्रह्म कुंड परिसर से जुड़ा हुआ है। चेन स्नेचिंग मामले में शेखपुरा जिला के अरियरी थाना के कसार पंचायत की मुखिया सुजाता कुमारी ने राजगीर थाना में मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसमें उन्होंने बताया कि 6 फरवरी की दोपहर 1:30 बजे राजगीर ब्रह्मकुंड में स्नान के लिए वह पहुंची थी। स्नान के दौरान वहां पांच से छह की संख्या में अज्ञात महिलाएं स्नान कर रही थी। इसी बीच उनके गले से मंगलसूत्र खींच लिया गया। जब उन्हें मंगलसूत्र गायब होने का एहसास हुआ तो वह शोर शराबा करने लगी, इसी बीच वहां मौजूद महिला सिपाही ने उन्हें सीसीटीवी कैमरे का फुटेज दिखाया। जिसमें स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि एक महिला गले से मंगलसूत्र खींच रही है।आए दिन ब्रह्म कुंड में स्नान के लिए आने वाले पर्यटक के समान की चोरी हो रही है। बावजूद ड्यूटी में मौजूद पुलिसकर्मी पर्यटकों को सुरक्षा मुहैया कराने में विफल साबित हो रहे हैं। वायरल हो रहे हैं सीसीटीवी फुटेज में भी स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि किस प्रकार कुछ महिलाएं ब्रह्म कुंड में स्नान कर रही है इस बीच गले से चेन खींचा जा रहा है।वहीं इस मामले में राजगीर थाना अध्यक्ष चंद्रभानु ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज मिला है। महिला की पहचान कर पुलिस कार्रवाई में जुटी हुई है।

चंपाई सरकार

झारखंड में चंपाई सोरेन के नेतृत्व वाली झामुमो-कांग्रेस सरकार ने सदन में बहुमत सिद्ध करके विगत दिनों से चल रही अनिश्चितता को दूर कर दिया है। विधानसभा में हुए शक्ति परीक्षण में जीतना वर्तमान मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ही नहीं, बल्कि हेमंत सोरेन के लिए भी किसी कामयाबी से कम नहीं है। आशंका थी कि विधायक टूट सकते हैं, किंतु विधायकों को हैदराबाद भेजकर और सही समय पर उनकी सदन में वापसी कराते हुए झामुमो ने भी अपनी सूझ-बूझकर परिचय दिया है। कुल 81 सदस्यीय विधानसभा में 47 विधायकों ने विश्वास प्रस्ताव का समर्थन किया, जबकि 29 विधायकों ने विरोध। यह भी एक तरह से इतिहास ही है कि एक पूर्व मुख्यमंत्री ने ईडी की हिरासत में रहते हुए विशेष न्यायालय से मंजूरी मिलने के बाद सदन की कार्यवाही और विश्वास मत में हिस्सा लिया। सोरेन के सदन में आने से झामुमो नेताओं को भी बल मिला और चंपाई सोरेन यहां तक बोल गए कि हेमंत हैं, तो हिम्मत है। उन्होंने पुरजोर आरोप लगाया कि एजेंसी का दुरुपयोग हो रहा है। अब एजेंसी के लिए भी चुनौतियां बहुत बढ़ गई हैं। 67 वर्षीय मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन की सामने पहली चुनौती यही होगी कि वह झामुमो और झामुमो के दिग्गज नेता पर लग रहे आरोपों का माकूल जवाब दें। तमाम झामुमो नेता खुलकर विपक्षी पार्टी पर आरोप लगा रहे हैं और ऐसा करने की राजनीति को समझा जा सकता है, पर झामुमो के प्रयास केवल राजनीति तक सिमटकर न रह जाएं। हालांकि, जब चुनाव सामने हैं, तब सियासत को तल्ख होने से नहीं रोका जा सकता और यह तल्खी विवाद के जल्दी समाधान को रोकेगी। ऐसे विवाद महज आरोप या धमकी से नहीं निपटाए जाते हैं। अगर एजेंसियों ने गड़बड़ी की है, तो इसे सिद्ध करने के लिए चंपाई सरकार क्या अपनी ओर से प्रयास कर सकती है? तथ्य और तर्क से एजेंसी को सही दिशा में निर्देशित किया जा सकता है। ध्यान रहे, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने यहां तक आरोप लगाया है कि केंद्र सरकार आदिवासियों और दलितों के प्रति नफरत रखती है। किसी बडे. नेता द्वारा अपने खिलाफ कार्रवाई को अपने पूरे समुदाय का उत्पीड़न बताना नया नहीं है, पर इसका असर लोगों पर अवश्य होता है। आम लोगों के पास सही सुबूत बाद में पहुंचते हैं, पर किसी नेता के बारे में कोई धारणा लोगों तक जल्दी पहुंच जाती है। संकेत यही है कि झारखंड के साथ-साथ बिहार में भी जो हालिया बदलाव हुआ है, उसमें भी कुछ नेता सहानुभूति का लाभ लेने की कोशिश करेंगे। वैसे सियासी लाभ के लिए सार्वजनिक विषय को व्यक्तिगत और व्यक्तिगत विषय को सार्वजनिक बना देने का पुराना चलन है। सियासत से हटकर बात करें, तो झारखंड के नए मुख्यमंत्री के हाथों में अनेक काम हैं। यह आदिवासी प्रदेश एक अन्य आदिवासी प्रदेश छत्तीसगढ़ के साथ बना था, पर छत्तीसगढ़ में राजनीतिक स्थिरता मिसाल है। वहां मुख्यमंत्रियों के दामन पर दाग भी कम हैं। दूसरी ओर, झारखंड में ऐसे भी मुख्यमंत्री हुए हैं, जिनके दाग लोग याद करते हैं।

एक खुशनुमा पहल

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के अंतरिम बजट भाषण में छतों पर सौर पैनलों का इस्तेमाल करके देश के एक करोड़ घरों में बिजली की आपूर्ति करने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की योजना दोहराई गई। वित्त मंत्री ने दावा किया कि इससे संबंधित घरों को सालाना 15,000 रुपये बचाने में मदद मिलेगी। अब तक की जानकारी के मुताबिक 300 यूनिट प्रति माह से कम मासिक बिजली की खपत वाले घर एक मध्यम आकार की सौर प्रणाली (1-2 किलोवाट) स्थापित करने के योग्य होंगे और इसका खर्च सरकार वहन करेगी। इसका मतलब न्यूनतम परिव्यय एक लाख करोड़ रुपये हो सकता है। फिलहाल, छतों पर लगाए जाने वाली सौर प्रणाली पर 40 फीसदी तक की सब्सिडी दी जाती है और शेष उपभोक्ताओं को वहन करना पड़ता है। प्रस्तावित नीति के तहत, सब्सिडी 60 फीसदी तक बढ़ जाएगी और बाकी का वित्तपोषण एक निजी डेवलपर द्वारा किया जाएगा जो विद्युत मंत्रालय से जुड़े एक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम से संबद्ध है। यह स्पष्ट रूप से स्थापना में गुणवत्ता और विश्वसनीय सेवा सुनिश्चित करेगा। ह्यनेट-मीटरिंगह्ल की एक व्यवस्था होगी, जिसमें घरों द्वारा उत्पादित अधिशेष बिजली को ऋण चुकाने के लिए ग्रिड को वापस बेचा जा सकता है, हालांकि इसे लागू करने का वास्तविक तरीका काफी जटिल हो सकता है। जिन घरों में एयर कंडीशनर और हीटर होते हैं, वहां 300 यूनिट की मासिक खपत मामूली है, लेकिन राष्ट्रीय मानकों के अनुसार, यह खपत का एक महत्वपूर्ण पैमाना है। भारत में 25 करोड़ से 30 करोड़ घरों में से लगभग 80 फीसदी से 85 फीसदी घर एक महीने में औसतन 100 यूनिट से 120 यूनिट बिजली का इस्तेमाल करते हैं। लिहाजा, इस योजना के लिए पात्र एक करोड़ घर ढूंढना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। पहले की सौर संवर्धन नीतियों की तुलना में बड़ा अंतर यह है कि राज्य की बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के उलट केंद्र ही सौर ऊर्जाकरण पर जोर देगा। भारत की डिस्कॉम कंपनियों, जिनमें से अधिकांश भारी घाटे में चल रही हैं, को उच्च खपत वाले ग्राहकों को छत पर सौर पैनल लगाने जैसे विकेंद्रीकृत उपायों की ओर ले जाने के काम में अब तक बहुत कम प्रोत्साहन मिला है। ऐसी डिस्कॉम कंपनियों के पास घरेलू स्तर पर बिजली आपूर्ति के बारे में सबसे अच्छी जानकारियां उपलब्ध होने के मद्देनजर, उन्हें नजरअंदाज करना एक सफल रणनीति नहीं होगी।

अब तो गलती सुधारने की पहल करे मुस्लिम समाज

ANALYSIS

आशीष वशिष्ठ

बीती 31 जनवरी को वाराणसी की एक न्यायालय ने हिन्दू पक्ष को ज्ञानवापी मस्जिद के व्यास जी तलगृह में पूजा का अधिकार दे दिया है। पूर्ण विधि-विधान से पूजा अर्चना शुरू हो गई है। हिन्दू पक्ष कुछ समय से ज्ञानवापी परिसर में स्थित एक तलगृह में पूजा का अधिकार मांग रहा था। यह तलगृह मस्जिद परिसर में है। वर्ष 1992 तक व्यास जी तलगृह में पूजा नियमित तौर पर होती थी। 06 दिसंबर, 1992 को हुए बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद 1993 से व्यास जी के तलगृह को बंद कर दिया गया और बैरिकेडिंग कर दी गई थी। उस समय समाजवादी पार्टी की सरकार थी और मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे। अयोध्या में राम जन्मभूमि मामले को लेकर भी मुलायम सिंह यादव ने बैरिकेडिंग लगवा दी थी जिससे सांप्रदायिक माहौल न बिगड़े और लड़ाई-झगड़े न हों। पहले बांस-बल्ली लगाकर बैरिकेडिंग की गई और बाद में पक्की तरह से बंद कर दिया गया। इसके बाद यहां पर वार्षिक माता श्रृंगार गौरी की पूजा हो रही थी।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा वाराणसी के प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर से सटी ज्ञानवापी मस्जिद में हुए सर्वेक्षण से उस दावे की पुष्टि हो गई है कि वह हिन्दू मंदिर पर ही बनाई गई थी। इस सर्वेक्षण को रोकने के लिए मुस्लिम पक्ष द्वारा न्यायालय में चरम सीमा तक जाकर तर्क दिए गए। बीती 31 जनवरी को वाराणसी की एक न्यायालय ने हिन्दू पक्ष को ज्ञानवापी मस्जिद के व्यास जी तलगृह में पूजा का अधिकार दे दिया है। पूर्ण विधि-विधान से पूजा अर्चना शुरू हो गई है। हिन्दू पक्ष कुछ समय से ज्ञानवापी परिसर में स्थित एक तलगृह में पूजा का अधिकार मांग रहा था। यह तलगृह मस्जिद परिसर में है। वर्ष 1992 तक व्यास जी तलगृह में पूजा नियमित तौर पर होती थी। 06 दिसंबर, 1992 को हुए बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद 1993 से व्यास जी के तलगृह को बंद कर दिया गया और बैरिकेडिंग कर दी गई थी। उस समय समाजवादी पार्टी की सरकार थी और मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे। अयोध्या में राम जन्मभूमि मामले को लेकर भी मुलायम सिंह यादव ने बैरिकेडिंग लगवा दी थी जिससे सांप्रदायिक माहौल न बिगड़े और लड़ाई-झगड़े न हों। पहले बांस-बल्ली लगाकर बैरिकेडिंग की गई और बाद में पक्की तरह से बंद कर दिया गया। इसके बाद यहां पर वार्षिक माता श्रृंगार गौरी की पूजा हो रही थी। ज्ञानवापी में किए गए सर्वेक्षण की जो रिपोर्ट न्यायालय में प्रस्तुत हुई, उसके आधार पर कोई भी कह सकता है कि वह मंदिर ही है। मुस्लिम पक्ष को इसका ज्ञान काफी पहले से था। इसीलिए उन वस्तुओं को छिपा और ढक दिया गया था जो हिन्दू धर्म के प्रतीक और चिह्न हैं। सबसे बड़ी बात शिवलिंग का मिलना है। पौराणिक ग्रंथों से पता

चलता है कि ज्ञानवापी कुआं का निर्माण स्वयं भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से किया था। पौराणिक काल से ही काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का इलाका अविमुक्त क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध रहा है। महाभारत में भी काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के पूरे क्षेत्र को अविमुक्त क्षेत्र के नाम से पुकारा गया है। वर्तमान में स्थित ज्ञानवापी मस्जिद भी अविमुक्त क्षेत्र का ही भाग रहा है। इस क्षेत्र में स्थित ज्ञानवापी मस्जिद को मुक्त कराने के लिए सैकड़ों वर्षों से विश्व भर के हिंदू संघर्ष कर रहे हैं। होना तो यह चाहिए था कि स्वतंत्रता के बाद केंद्र सरकार मुगल काल में हिन्दू धर्मस्थलों को तोड़कर या उन्हीं ढांचों पर खड़ी की गई मस्जिदों को हिन्दुओं को सौंपने की नीति बनाती। लेकिन कांग्रेस सहित अन्य पार्टियां मुसलमानों की नाराजगी से बचने के लिए हिन्दुओं के वैध दावों को ठुकराती रहीं। मथुरा और वाराणसी में हिन्दुओं के सर्वोच्च आराध्यों के पवित्र मंदिर के बगल में बनी मस्जिद के हिन्दू मंदिर होने की बात पंडित नेहरू से लेकर तमाम नेताओं को ज्ञात थी। लेकिन उन्होंने इस दिशा में सोचने का कष्ट इसलिए नहीं उठाया क्योंकि वे हिन्दुओं की सहनशक्ति को जानते थे। वरना क्या कारण था कि हिन्दुओं की विवाह व्यवस्था संबंधी रीति-रिवाजों को तो उलट-पलट दिया गया किंतु मुस्लिम पर्सनल लॉ को छेड़ने की हिम्मत नहीं हुई। देश का बंटवारा धर्म के नाम पर हमारे नेताओं ने स्वीकार किया था। सर्व धर्म समभाव के भारतीय संस्कारों के कारण भले ही मुस्लिमों की बड़ी आबादी भारत में रह गई और पाकिस्तान के उलट भारत ने अपने को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाया किंतु ये भी उतना ही सही है कि तत्कालीन शासकों ने मुस्लिम तुष्टीकरण के फेर में बहुसंख्यकों की धार्मिक भावनाओं को धक्का पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यदि सरदार पटेल न होते तब बड़ी बात नहीं सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार भी न हो पाता। अयोध्या का विवाद तो स्वाधीनता के पहले से चला आ रहा था। वास्तव में, देश में एक ऐसी जमात है जो भय और लोभ से भरी हुई है। उसमें कायरता का कीचड़ है। वह ऐतिहासिक यथार्थ और सांस्कृतिक सत्य का सामना करने से कतराती है। समस्या का समाधान सौदेबाजी में तलाशती है और समस्या को टालते जाने को अपनी कुशलता और चतुराई मानती है। इस जमात के भगीरथ हैं राजनेता। ऐसा राजनेता जिनकी सोच और दृष्टि का क्षितिज केवल एक चुनाव से दूसरे चुनाव तक का है। भावी पीढ़ियों, दशाब्दियों और शताब्दियों की बात सोचने का सामर्थ्य उनमें नहीं है। वे हम मर गए तो किसने दुनिया देखी की मानसिकता से पीड़ित हैं। सत्ता लोभ और चुनाव में पराजय के भय से पीड़ित इन लोगों को राष्ट्रीय अस्मिता की अवमानना करने और उसे नकारने में लाज ही नहीं आती। लोभ, भय ओर मौन हो जाने का परिणाम भारत का राष्ट्रीय समाज 75 वर्ष पूर्व भुगत चुका है। राजनीतिक नेतृत्व में भय एवं राष्ट्रीय समाज के मौन से तुष्टिकरण और खुशामद कर जन्म हुआ था। यह इतिहास सिद्ध अनुभव है कि हिन्दुओं का मौन राष्ट्र के विभाजन को जन्म देता है। अल्पसंख्यकों की मुखरता और उनका तुष्टिकरण राष्ट्र के भूगोल को बिगाड़ता और इतिहास का मान भंग करता है। 1991 में केंद्र की नरसिम्हा राव सरकार ने जो कानून बनाया उसके अनुसार 15 अगस्त, 1947 को किसी भी धर्मस्थल की जो स्थिति थी उसे परिवर्तित नहीं किया जाएगा। लेकिन अयोध्या विवाद में सर्वोच्च न्यायालय ने अपना निर्णय इस आधार पर दिया कि बाबरी ढांचा हिन्दुओं के मंदिर को मस्जिद का रूप देकर खड़ा किया गया था। ठीक वही बात ज्ञानवापी के बारे में भी सामने आ रही है। अयोध्या विवाद को सुलझाकर सर्वोच्च न्यायालय ने जो रास्ता खोल दिया वह उन सभी धर्मस्थलों को मुक्त करवाने में सहायक होगा जिनको मुस्लिम शासकों ने बलपूर्वक मस्जिद का रूप दे दिया। मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि के बारे में भी ऐसा ही दावा है। ये सब देखते हुए मुस्लिम धर्मगुरुओं को अपने समुदाय के लोगों को समझाना चाहिए कि वे हठधर्मिता के बजाय समझदारी और व्यवहारिकता से काम लें। इसमें दोराय नहीं है कि मुगलों द्वारा पूरे देश में हिन्दुओं के धर्मस्थलों को नष्ट करने का काम बड़े पैमाने पर हुआ। प्राचीन धर्मस्थलों के बारे में जो तथ्य उभरकर सामने आ रहे हैं वे चौंकाने वाले हैं। ज्ञानवापी में हिन्दू पक्ष को पूजा का अधिकार प्रदान करने के न्यायालय के निर्णय के बाद मुस्लिम पक्ष ने इस पर नाराजगी जताई है। मुस्लिम पक्ष ने कहा है कि फैसले के बाद हाई कोर्ट में इस आदेश के खिलाफ अपील की जाएगी। मुस्लिम पक्ष ने इस फैसले को नकार दिया है। इससे पहले मुस्लिम पक्ष ने एएसआई के सर्वे को भी नकार दिया था। ज्ञानवापी परिसर में स्थित माता श्रृंगार गौरी भी पूजा का अधिकार मांगा जा रहा है। देखा जाए तो, मुस्लिम पक्ष द्वारा इस बारे में वही गलती दोहराई जा रही है जो अयोध्या विवाद में देखने मिली। इसलिए इस विवाद को निपटाने के लिए अदालत ही एकमात्र विकल्प बचता है, जहां ठोस प्रमाणों के आधार पर निर्णय होते हैं। अयोध्या में हिन्दू मंदिर होने की बात भी वहां किए गए उत्खनन से ही तय हुई। वही प्रक्रिया ज्ञानवापी के बारे में भी अपनाई जा रही है। मुस्लिम समाज को ये बात समझ लेनी चाहिए कि जिन राजनीतिक दलों के बहकावे में आकर वह सच्चाई की स्वीकार करने से बचता है उनका उद्देश्य मात्र उनके वोट प्राप्त करना है। जहां मूर्ति हो और जिस भूमि पर जबरन कब्जा किया गया हो, वहां मस्जिद बनाने और नमाज पढ़ने को कुरान और पैगम्बर दोनों ने मना किया है। मस्जिद को हटाने का भी कुरान में निषेध नहीं है। ऐसे में वो विशाल हृदय का प्रदर्शन करते हुए अतीत में मुगल शासकों द्वारा हिन्दुओं के धर्मस्थलों पर बलपूर्वक अधिकार जमाने और नियंत्रण किए जाने वाली गलती को सुधारने की पहल करते हुए उनकी सद्भावना प्राप्त करें। सद्भावना और सहिष्णुता एकपक्षीय नहीं, द्विपक्षीय होती है। एक पक्ष को अपमानित करके दूसरे पक्ष को सम्मान देने से सद्भाव को नहीं, शत्रुता का जन्म होता है। जन-जन को दिग्भ्रमित करने के दुष्चक्र की लंबी कहानी है।

लेखक, स्वंत्रत टिप्पणीकार हैं।

मीना कुमारी कैसे बनीं साहब बीवी और गुलाम की छोटी बहू

साहब बीबी और गुलाम गुरुदत्त की ऐसी पहली फिल्म थी जिसकी शूटिंग शुरू होने से पहले ही पूरी पटकथा तैयार कर ली गई थी। सबको अंदाज था कि यह फिल्म गुरुदत्त ही निर्देशित करेंगे लेकिन उन्होंने अपने सहयोगी अबरार अल्वी को इसका निर्देशन सौंपा। यह उनकी पहली फिल्म थी। लेकिन इसके सभी गाने गुरुदत्त ने ही शूट किए थे। बाद में इसका कारण उनकी बहन ललिता लाजमी ने बताया था कि गुरुदत्त उन दिनों अपनी निजी जिंदगी में बहुत तनाव से गुजर रहे थे। अबरार अल्वी से पहले उन्होंने सत्येन बोस या नितिन बोस से भी यह फिल्म निर्देशित करवाने के बारे में सोचा था। इसके महत्वपूर्ण किरदार छोटी बहू के लिए गुरुदत्त ने मीना कुमारी को ही ध्यान में रखा था। मगर गुरुदत्त ने जब फिल्म के सिलसिले में मीना कुमारी को पैगाम भेजा तो जवाब माफी की सूरत में आया। कमाल अमरोही ने स्क्रिप्ट देखी तो उन्हें लगा शराब पीती हुई छोटी बहू का किरदार मीना के करियर के लिए अच्छा नहीं होगा। यह उनके भीतर के पति का निर्णय था क्योंकि किसी निर्देशक का तो यह निर्णय नहीं हो सकता था। खैर हुआ यह कि उन्होंने स्क्रिप्ट पढ़कर यह कह कर वापस कर दी की मीना कुमारी इतनी व्यस्त हैं कि उनके लिए अभी कोई फिल्म साइन करना मुमकिन ही नहीं है। गुरुदत्त निराश हुए और उन्होंने छोटी बहू के लिए किसी और अदाकारा की तलाश शुरू कर दी। इस सिलसिले में लंदन में रहने वाली छाया आर्य को मुंबई बुलाया गया। छाया आर्य फोटोग्राफर जितेंद्र आर्य की पत्नी थीं। दोनों लंदन में रहते थे, लेकिन गुरुदत्त ने दोनों को मुंबई आने के लिए मना लिया । छाया आर्य ने लंदन में कुछ स्टेज शो और तथा नाटकों में काम किया था। दोनों मुंबई आए और छाया आर्य के साथ फोटोशूट हुआ। उन्हें टेप पर रिकॉर्ड की हुई पटकथा भी सुनवाई गई और उनकी संवाद अदायगी का टेस्ट भी लिया गया। हालांकि जब फोटोशूट के चित्र आए तो गुरुदत्त और अबरार अल्वी दोनों ही निराश हुए। छाया तराशे हुए नैन-नक्श के साथ एकदम शहरी लग रही थीं। गुरुदत्त छोटी बहू के कठिन किरदार के लिए नर्म 'ममतापूर्ण' नैन-नक्श के साथ स्वच्छंद चेहरा चाहते थे। छाया के लिए यह बेहद दिल तोड़ देने वाली बात थी जो इसी फिल्म के लिए लंदन से अपना ठिकाना छोड़कर मुंबई शिफ्ट हुई थीं। हालांकि, फिल्मकार के रूप में गुरुदत्त ने समझौता नहीं किया। तब तक स्टार बन चुकी वहीदा रहमान भी छोटी बहू का किरदार करना चाहती थीं। उन्होंने बंगाली साड़ी पहनकर टेस्ट भी दिया था और फोटोशूट भी कराया था लेकिन फोटोग्राफ गुरुदत्त को अच्छे नहीं लगे थे उन्हें लगा कि वहीदा बहुत छोटी लग रही हैं जबकि किरदार के लिए एक परिपक्व अभिनेत्री की जरूरत थी। उनके फोटो देखकर गुरुदत्त ने हंसते हुए कहा था, ₹तुम तो चूहा लग रही हो ।₹ इसके बाद नरगिस से भी बात की गई मगर वे भी तब तक फिल्मों को अलविदा कहने का मन बना चुकी थी। फिल्म फ्लोर पर जा चुकी थी गुरुदत्त ने जब तक ऐसा किया कि छोटी बहू के किरदार के अलावा जितने भी सीन थे, उन सब की शूटिंग कर ली। इस सब के बाद एक बार दोबारा मीना कुमारी से संपर्क किया गया। इस बार मीना ने खुद स्क्रिप्ट पड़ी और रात के 2:30 बजे फोन कर फिल्म के लिए हां कर दी। इस वक्त उनकी उम्र 32 साल थी और वह अपने करियर की ऊंचाइयों पर थीं। ऐसे किरदार को स्वीकार कर-के उन्होंने न सिर्फ खुद को मुश्किल में डाला था बल्कि अपने करियर के लिए भी खतरा मोल लिया था। मीना कुमारी इस वक्त तक शराब के असर से दूर थीं लेकिन इसके बावजूद इस तरह का किरदार अदा किया। इसके लिए आलोचक और प्रशंसकों दोनों से उन्हें खूब वाहवाही मिली। 1962 में यह फिल्म जब रिलीज हुई तो कारोबार के लिहाज से स्वयं गुरुदत्त तथा फिल्मी पण्डितों को भी इस फिल्म से कुछ ज्यादा उम्मीदें नहीं थीं, लेकिन जब सिनेमाघरों के सामने इस फिल्म को देखने के लिए आने वालों की लम्बी कतारें नजर आने लगीं तो गुरुदत्त, मीना कुमारी और दूसरे लोगों को खुशी के साथ-साथ हैरत भी हुई। 1963 में मीना कुमारी ने एक नया रिकॉर्ड कायम किया। ग्यारहवें फिल्म फेयर अवार्ड के सिलसिले में वह तीन फिल्मों में बेहतरीन अदाकारा के अवार्ड के लिए नामजद हुईं। बेहतरीन अदाकारा के तौर पर उनका मुकाबला किसी और से नहीं, खुद अपने आपसे था। 1962 में रिलीज होने वाली जिन तीन फिल्मों के लिए वे नामजद हुई थीं, उनके नाम थे साहब बीबी और गुलाम, आरती और मैं चुप रहूंगी। साहब बीबी और गुलाम के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्म फेयर पुरस्कार दिया गया। इतना ही नहीं फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए भी फिल्म फेयर पुरस्कार प्राप्त हुए। एक तरीके से मीना कुमारी को यह फिल्म जाते-जाते अनायास ही मिल गई। कुछ अरसा पहले बिमल रॉय अपनी फिल्म 'देवदास' के लिए मीना कुमारी को हीरोइन के तौर पर साइन करने के लिए कमाल अमरोही के पास गये थे। कमाल अमरोही ने न जाने क्या सोचकर इस अहम प्रस्ताव को मना कर दिया था। यह किरदार बाद में सुचित्रा सेन ने किया और फिल्म बेहद कामयाब रही। फिल्मी दुनिया में कोई बात लंबे समय तक छुपी नहीं रहती। यह राज भी कुछ समय बाद ही बाहर आ गया। 'बेनजीर' की शूटिंग के दौरान एक बार बिमल रॉय ने महज अपनी हैरत दूर करने के लिए मीना कुमारी से पूछा कि उन्होंने इतनी महत्वपूर्ण फिल्म में इतना यादगार किरदार अदा करने से इनकार क्यों किया? इस पर मीना कुमारी ने हैरत जताते हुए कहा कि उन्हें तो मालूम ही नहीं कि उनके लिए इस किस्म की कोई भूमिका आयी थी। बहरहाल वजह चाहे कुछ भी रही हो, मीना को इस बात से बहुत दुख पहुंचा था कि आखिर क्यों कमाल उन्हें ऐसी बेहतरीन फिल्मों से महरूम कर रहे हैं?

Social Media Corner

सच के हक में...

पिछले 10 वर्षों में हमारी सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों में एससी, एसटी और ओबीसी समाज के हमारे भाई-बहनों की बड़ी संख्या रही है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

हेमंत बाबू और कल्पना बेटी को शादी की सालगिरह की हार्दिक शुभकामनाएं। ईश्वर से आप दोनों के उत्तम स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन की कामना करता हूं। बहुत कम लोग होते हैं जो समझौते की आसान राह की जगह, संघर्ष का कठिन रास्ता चुनते हैं। मरांग बुरू से प्रार्थना है कि आप इस विषम परिस्थिति से पार पाकर, एक विजेता की तरह हम सभी के बीच शीघ्र लौटें।

(सीएम चंपाई सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)

नकल विहीन परीक्षा मोदी सरकार का संकल्प! युवाओं की मेहनत अब नहीं जाएगी बेकार, परीक्षा में कदाचार करने पर सख्त सजा का प्रावधान पेपर लीक और नकल रोकने से संबंधित 'सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधन रोकथाम) विधेयक, 2024' लोकसभा में पारित।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी का 'एक्स' पर पोस्ट)

नागरिकता संशोधन कानून का मकसद व्यापक

नागरिकता संशोधन कानून को लेकर एक बार फिर बहस होती नजर आ रही है। पश्चिम बंगाल की एक सभा में केंद्रीय राज्यमंत्री शांतनु ठाकुर ने इसे जल्दी लागू करने का दावा किया है। चूंकि जल्दी ही लोकसभा चुनाव होना है, इसलिए प्रेक्षकों के एक समूह को लग रहा है कि केंद्र सरकार ध्रुवीकरण के लिए इस कानून को लागू करने जा रही है। उन्हें लगता है कि इस कानून को लेकर पहले से ही सशंकित मुस्लिम समुदाय फिर सड़कों पर उतरेगा और इससे बहुसंख्यक मानस भी गोलबंद होगा, जिसका फायदा निश्चित तौर पर भाजपा की अगुआई वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को होगा। ऐसी सोच सही हो सकती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या इसी आधार पर संसद से पारित किसी कानून को लागू करने से रोका जाना चाहिए? निश्चित ही इसका जवाब ना में है। यह कानून 2014 से पहले तक अफगानिस्तान, बर्मा, पाकिस्तान और बांग्लादेश से आये हिंदुओं, बौद्धों, जैनियों और सिखों को नागरिकता देने का प्रावधान करता है। नागरिकता संशोधन कानून बुनियादी रूप में 1955 में पास हुआ था। इसके तहत बंटवारे के बाद भारत आये लोगों को नागरिक अधिकार देने का प्रावधान किया गया था। इस कानून में पहली बार संशोधन वाजपेयी सरकार के दौरान 2003 में हुआ था। इसके बावजूद पड़ोसी देशों से आये हिंदू, सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध शरणार्थी किस हाल में है, इसे देखना-समझना हो तो हमें राजस्थान के बीकानेर, जोधपुर या जैसलमेर के शरणार्थी कैंपों और दिल्ली के नजफगढ़ के पास स्थित कैंपों का दौरा करना पड़ेगा। इनमें रह रहे लोगों को ना तो शैक्षिक सुविधाएं मिल पाती हैं, ना उन्हें नियमित रोजगार मिल पाता है और ना ही दूसरी सरकारी सहूलियतें क्योंकि ये भारत के वैध नागरिक नहीं हैं। यह कानून ऐसे ही लोगों के लिए आया था। लेकिन दिसंबर 2019 में इसे संसद ने मंजूरी दी थी, तो इसे एक तरह से मुस्लिम विरोधी बताने की शुरूआत हुई। इस कानून के खिलाफ देश का करीब समूचा मुस्लिम बहुल इलाका खड़ा हो गया। इसे वामपंथी वैचारिकी से प्रभावित राजनीतिक ताकतों ने खुला समर्थन दिया। दरअसल मुसलमानों को बरगलाने की वजह बना है 2003 में हुआ संशोधन। इसके तहत, विशेषकर उत्तर-पूर्वी राज्यों में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर बनाने की बात है, जिससे एक खास अवधि के बाद सीमा पार से आये लोगों की पहचान की कोशिश की जानी थी। बड़ी बात यह है कि नागरिकता संशोधन कानून बुनियादी रूप से भारतीय मुसलमानों के खिलाफ नहीं है। इसका मकसद सराय की तरह मानते हुए लगातार सीमा पार से भारत आने वाले लोगों की पहचान सुनिश्चित करना और अवैध आप्रवासन रोकना है। गैर भाजपा दलों के लिए ऐसे अप्रवासी बड़े वोट बैंक साबित होते रहे हैं, इसलिए वे देश की समस्याओं को भुलाते हुए इन अप्रवासियों को सहयोग करते रहे हैं। यही वजह है कि इस कानून के खिलाफ देशव्यापी विरोध में विपक्षी दलों का बड़ा हिस्सा भी शामिल रहा। अनेक विपक्ष शासित राज्यों ने इस कानून को लागू करने से इनकार कर दिया था। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत की संप्रभुता की गारंटी संसद देती है और संसद सर्वोच्च है। सवाल यह है कि सर्वोच्च संसद के कानून को कोई राज्य लागू करने से कैसे मना कर सकता है? इस कानून की आलोचना के संदर्भ में उठने वाले तर्कों को भी देखा जाना चाहिए। इस कानून में चूंकि मुसलमानों का जिक्र नहीं है, इसीलिए तर्क दिया जाता है कि यह कानून भेदभावपूर्ण है। इसी आधार पर इस पर सेक्युलरिज्म के उल्लंघन का भी आरोप लगता है। इस कानून की आलोचना की एक वजह यह भी है कि नागरिकता रजिस्टर एक होगा तो मुसलमानों का बहिष्कार हो सकता है।

अंतहीन मुसीबतें

सर्वोच्च स्तर पर राजनयिक हस्तक्षेपों के बावजूद, श्रीलंकाई नौसेना द्वारा तमिलनाडु और पुदुचेरी के मछुआरों की लगातार गिरफ्तारी और हथियारबंद नागरिकों द्वारा उन पर बीच समुद्र में हमले गंभीर चिंता का विषय हैं। यह सच है कि मछलियों की तलाश में भारतीय मछुआरे श्रीलंकाई समुद्री सीमा में प्रवेश करते हैं, और श्रीलंका के तमिल मछुआरों की रोजी-रोटी प्रभावित करते हैं। लेकिन इस साल संख्याएं हैरत में डालती हैं। ह्यअवैध शिकारह्ल के आरोप में शनिवार को, डेल्फ्ट द्वीप के पास, 23 मछुआरों की गिरफ्तारी और दो मछली पकड़ने वाले जहाजों (ट्रॉलरों) की जब्ती से इस साल पकड़े गये लोगों की संख्या 69 पहुंच गयी, जबकि यह संख्या पिछले पूरे साल में 240 थी। सन् 2013 से, श्रीलंकाई अधिकारी कुछ मछुआरों को कई महीनों के लिए न्यायिक हिरासत में भी रख चुके हैं। इस साल 34 मछुआरे छोड़े गये हैं जिनमें से 12 पिछली साल गिरफ्तार हुए थे, जबकि 45 लोग अब भी हिरासत में हैं। इस समुदाय के लिए बड़ी चिंता उनके महंगे जालों और नावों की जब्ती है झ इस साल 10 नावें जब्त की गयीं। न्यायिक प्रक्रिया या राजनयिक बातचीत के जरिये जब तक ये नावें छूटती हैं, ज्यादातर समुद्र में चलने लायक नहीं रह जाती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि श्रीलंका तमिलनाडु के मछुआरों पर कार्रवाई के लिए अपने उत्तरी प्रांत के मछुआरों के दबाव में है, जो उन पर विनाशकारी बॉटम ट्रॉलिंग (जाल के जरिये समुद्र तल से मछली पकड़ने का तरीका) का सहारा लेने का आरोप लगाते हैं। श्रीलंका ने जुलाई 2017 से बॉटम ट्रॉलिंग पर रोक लगा रखी है। हालांकि भारत ने पाक खाड़ी में बॉटम ट्रॉलिंग खत्म करने और गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए मछुआरों को नीली क्रांति योजना के तहत प्रोत्साहन देने का वादा किया था, लेकिन बॉटम ट्रॉलर अब भी सक्रिय हैं। मछुआरे एक व्यावहारिक समस्या का भी सामना करते हैं।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899 Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

गैस में अगले 5-6 साल में 67 अरब डॉलर निवेश करेगा भारत

-गोवा में भारत ऊर्जा सप्ताह के शुभारंभ पर गैस कंपनियों के प्रतिनिधि हुए शामिल

नई दिल्ली ।

गोवा में आयोजित भारत ऊर्जा सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश में ऊर्जा का बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए अभूतपूर्व रकम खर्च की जा रही है। अगले 5-6 साल में गैस क्षेत्र में 67 अरब डॉलर का निवेश किया जाएगा। द क्षिण गोवा के बेतुल में दूसरे भारत ऊर्जा सप्ताह का उद्घाटन करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि ऊर्जा में निवेश के लिए दुनिया भर के निवेशकों को भारत पसंद आ रहा है। उन्होंने कहा कि हम प्राथमिक ऊर्जा में प्राकृतिक गैस की मौजूदा 6 फीसदी हिस्सेदारी को बढ़ाकर 15 फीसदी करना चाहते हैं। भारत ऊर्जा क्षेत्र में अभूतपूर्व राशि निवेश कर रहा है। यही वजह है कि वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र के लोग आज भारत के ऊर्जा क्षेत्र में निवेश करना चाह रहे हैं। पिछले साल पहला भारत ऊर्जा सप्ताह में प्रधानमंत्री ने कहा था कि भारत हरित ऊर्जा के लिए प्रतिबद्ध है मगर उसे पारंपरिक तेल और गैस क्षेत्र में भी भारी निवेश करना होगा। वहीं 1 फरवरी को आए अंतरिम बजट में 11 लाख करोड़ रुपये पूंजीगत व्यय का प्रस्ताव दिया है, जिसमें से बड़ा हिस्सा ऊर्जा क्षेत्र में निवेश होगा।

कार्यक्रम में पीएम ने कहा कि भारत अब दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि भारत आगे भी इसी रफ्तार से वृद्धि करता रहेगा। भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा। उन्होंने यह भी कहा कि भारत जल्द ही हाइड्रोजन का प्रमुख उत्पादक और निर्यातक बन जाएगा। पीएम मोदी ने कहा कि भारत पहले ही दुनिया के सबसे बड़े तेलशोधकों में शुमार है। आज हमारे पास सालाना 25.5 करोड़ टन से ज्यादा रिफाइनिंग क्षमता है। वर्ष 2030 तक हम रिफइनिंग क्षमता को बढ़ाकर 45 करोड़ टन सालाना करना चाहते हैं।' देश में इस समय सालाना 1.9 करोड़ बैरल तेल की खपत होती है और 2045 तक आंकड़ा 3.8 करोड़ बैरल हो जाने का अनुमान है।

इस मौके पर पीएम मोदी ने अंतरराष्ट्रीय तेल एवं गैस कंपनियों के प्रमुखों और विशेषज्ञों से भी मुलाकात की। भारत ऊर्जा सम्मेलन 2024 पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय का प्रमुख कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में नियामक संस्थाएं, नवीकरणीय एवं वैकल्पिक ईंधन से जुड़ी कंपनियां, नीति शोधार्थी और सलाहकार टिकाऊ ऊर्जा पर अपने विचार रखते हैं। सरकार को उम्मीद है कि यह कार्यक्रम वैश्विक ऊर्जा के लिए नीति बनाने के मामले में भारत को और आगे लेकर जाएगा।

पात्र कंपनियों को जल्द मिलेगी पीएलआई की रकम, सरकार ने दिखाई सख्ती

-नीति आयोग करेगा योजना से जुड़ी नोडल एजेंसियों के कामकाज की समीक्षा

नई दिल्ली ।

सरकार की पहल पर पात्र कंपे नियों को अब पीएलआई की रकम जल्द मिलेगी। इसके लिए नी ति आयोग को नोडल एजेंसियों के कामकाज की समीक्षा करने कि जिम्मेदारी दी जा सकती है। बता दें कि विभिन्न क्षेत्रों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तहत पात्र कंपनियों को प्रोत्साहन राशि जारी होने में देर पर सरकार सख्त हो गई है। पीएलआई दावों की रकम देने में देर किए जाने पर चिंता जताते हुए कैबिनेट सचिव राजीव गौबा ने नीति आयोग को योजना से जुड़ी नोडल एजेंसियों के कामकाज की समीक्षा करने का सुझाव दिया है। गौबा की अध्यक्षता में सचिवों के अधिकार प्राप्त समूह की हालिया बैठक में नीति आयोग को सुझाव दिया गया कि पीएलआई योजना से जुड़ी परियोजना प्रबंधन एजेंसियों (पीएमए) के कामकाज की समीक्षा करने के लिए आयोग की अध्यक्षता में एक संस्थागत ढांचा तैयार किया जाए। पीएमए इस योजना के कार्यान्वयन, आवेदनों की जांच, प्रोत्साहन के लिए पात्रता निर्धारण, विनिर्माण इकाइयों के निरीक्षण आदि के लिए संबंधित मंत्रालयों की मदद करने के लिए जिम्मेदार हैं। बैठक में नीति आयोग के मुख्य कार्याधिकारी (सीईओ) बीवीआर सुब्रमण्यन भी मौजूद थे। दरअसल परियोजना प्रबंधन एजेंसियों और संबंधित मंत्रालयों के कामकाज की शुरुआती समीक्षा में पता चला है कि कई प्रमुख क्षेत्रों को भुगतान देर से हो रहा है। बैठक के ब्योरे में भी कहा गया है कि कई मामलों में प्रोत्साहन के दावे निपटाने में काफी देर हो रही है। इसके अलावा परियोजना प्रबंधन एजेंसियों ने पर्याप्त संख्या में विषय विशेषज्ञ भी नियुक्त नहीं किए हैं, जबकि पिछली बैठक में इसका निर्देश दिया गया था।' कुछ मामलों में शुरुआती निवेश की अवधि इस साल समाप्त हो रही है और दावा अगले वित्त वर्ष में ही किया जा सकेगा। बैठक में अधिकार प्राप्त समूह ने लाभार्थी कंपनियों के पीएलआई भुगतान दावे निपटाने की प्रक्रिया के लिए एक सामान्य व्यवस्था की जरूरत बताई। उसमें कहा गया है कि उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (डीपीआईआईटी) संबंधित मंत्रालयों या विभागों से विचार-विमर्श कर हरेक पीएलआई योजना दिशानिर्देश को जांच सकता है।

मारुति सुजुकी ने पेश किया ब्रेजा कंप्रेस्ड बायो गैस मॉडल

- सीएनजी मॉडल से भी ज्यादा ईको फ्रेंडली

नई दिल्ली ।

हाल ही में मारुति सुजुकी ने भारत मोबिलिटी एक्सपो 2024 में बायो मीथेन गैस से चलने वाली ब्रेजा कंप्रेस्ड बायो गैस (सीबीजी) मॉडल को पेश किया है। ब्रेजा सीबीजी का डिजाइन इसके स्टैंडर्ड मॉडल के जैसा ही है। वहीं इसे बायो गैस से चलाने के लिए कंपनी ने इसके इंजन में बदलाव किया है।

बात करें इंजन की तो इसमें 1.5-लीटर का के15 सी पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया गया है। वैसे तो यह इंजन पेट्रोल मोड में 102बीएचपी का पॉवर जनरेट करता है, लेकिन सीबीजी मोड में इसका इंजन 87बीएचपी की पॉवर और 121एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। मारुति ब्रेजी सीबीजी का डिजाइन मानक वेरिएंट के समान है, लेकिन इसमें चारों ओर कुछ सीबीजी वाले स्टिकर लगे हुए हैं, जो इसे अलग पहचान देते हैं।

इसमें ड्यूल-पॉड प्रोजेक्टर हेडलैंप्स, रूफ रेल्स, ड्यूल-टोन बंपर, रैप-अराउंड एलईडी टेललाइट्स, इंटीग्रेटेड एलईडी डेलाइट रनिंग लाइट्स, फॉगलाइट्स, डायमंड-कट अलॉय व्हील्स, ब्लैक-आउट ए, बी और सी-पिलर्स, रियर वाइपर और वॉशर जैसे फीचर्स मिलते हैं। मारुति ब्रेजी सीबीजी के केबिन में भी काफी आकर्षक और उपयोगी फीचर्स दिए गए हैं, जैसे कि सनरूफ, क्रूज कंट्रोल, पैडल शिफ्टर्स, सुजुकी कनेक्ट टेलीमैटिक्स तकनीक, खास टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम, ऑटो क्लाइमेट कंट्रोल, की-लेस एंट्री, रियर पार्किंग सेंसर्स और लेदर रैप्ड पावर स्टीयरिंग व्हील।

इनके अलावा, इसमें ड्यूल फ्रंट एयरबैग्स, एबीएस, ईबीडी, आइएसओफिक्स चाइल्ड सीट एंकर्स, सीट बेल्ट रिमाइंडर, हाई स्पीड अलर्ट, रिवर्स पार्किंग कैमरा और हिल होल्ड असिस्ट जैसे सुरक्षा फीचर्स भी शामिल हैं। मारुति ने ब्रेजा सीबीजी के माइलेज का खुलासा नहीं किया है, लेकिन इसका माइलेज इसके सीएनजी वैरिएंट के अनुसार रहने का अनुमान है जो कि 25.51 किलोमीटर प्रति किलोग्राम है। इस कॉम्पैक्ट एसयूवी में 48 लीटर का पेट्रोल टैंक और सीबीजी के लिए 55 लीटर (पानी के बराबर) का टैंक दिया गया है।

फिलहाल, मारुति ने ब्रेजा सीबीजी के लॉन्च को लेकर कोई जानकारी साझा नहीं की है। लेकिन उम्मीद है कि इसे 2024 के मध्य तक बाजार में उतारा जा सकता है।

पेट्रोल की कीमतों में तेजी शुरु

नई दिल्ली ।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड का भाव 80 डॉलर के पास पहुंचने के साथ ही घरेलू बाजार में भी कच्चे तेल की कीमतों में बढ़त आनी शुरू हो गई है। इससे घरेलू बाजार में भी पेट्रोल-डीजल की खुदरा कीमतों में भी बदलाव आने लगा है। कई जगहों पर कीमतें बढ़ीं हैं पर दिल्ली-मुंबई जैसे देश के चारों महानगरों में कीमतों में बदलाव नहीं हुआ है। हरियाणा की राजधानी गुरुग्राम में आज पेट्रोल की कीमतें 18 पैसे बढ़ी हैं और ये अब 96.89 रुपये लीटर बिक रहा है। इसके साथ ही डीजल भी 17 पैसे बढ़कर 89.76 रुपये लीटर हो गया है। राजस्थान के अजमेर में पेट्रोल 17 पैसे बढ़कर 108.28 रुपये लीटर जबकि डीजल 17 पैसे बढ़कर 93.55 रुपये प्रति लीटर पर है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल लगातार दूसरे दिन बढ़ा है। ब्रेंट क्रूड एक डॉलर ऊपर आकर 78.95 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। इसके अलावा डब्ल्यूटीआई की कीमतें भी बढ़त के साथ ही 73.69 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गयी हैं। आज दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर जबकि मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर पर बना हुआ है।

महिंद्रा एक्सयूवी300 और एक्सयूवी 400 पर मिल रहा भारी डिस्काउंट

नई दिल्ली ।

महिंद्रा एक्सयूवी300 व क्सयूवी400 पर कंपनी शानदार डिस्काउंट दे रही है। अगर इस महीने कार खरीदने का प्लान हैं, तो यह ऑफर पाने का बिल्कुल सही मौका है। महिंद्रा शोरूम 2023 और 2024 मॉडल वर्ष एक्सयूवी300 पर भारी छूट और लाभ दे रहे हैं। इन ऑफर्स का फायदा उठाने के लिए कंपनी से संपर्क करें। बता दें कि 2024 महिंद्रा एक्सयूवी300 पर इस महीने 1.82 लाख रुपये तक की छूट और लाभ दिया जा रहा है। हालांकि ये डिस्काउंट मॉडल वर्ष, वेरिएंट और पावरट्रेन पर निर्भर करता है। 2024 मॉडल पर 1.57 लाख रुपये तक की छूट, टॉप रेंज एमवाय23 एक्सयूवी300 टीजीडीआई मॉडल और पेट्रोल डब्ल्यू8 (ओ) ट्रिम्स पर क्रमशः 1.75 लाख रुपये और 1.73 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है, जबकि उनके एमवाय24 समकक्षों को क्रमशः 1.5 लाख रुपये और 1.48 लाख रुपये का लाभ के साथ पेश किया है। वहीं डब्ल्यू6 ट्रिम्स पर 94,000 रुपये से 1.33 लाख रुपये, डब्ल्यू4 और डब्ल्यू2 वेरिएंट पर क्रमशः 51,935-73,000 रुपये और 45,000 रुपये का लाभ दिया जा रहा है। बता दें कि एक्सयूवी400 ईएल ट्रिम इस महीने 3.4 लाख रुपये की छूट दी जा रही है। इसके अलावा कंपनी द्वारा 2024 मॉडल पर केवल 40,000 रुपये तक की एक्सचेंज और कॉर्पोरेट डिस्काउंट ही मिल रहा है।

टाटा कम्युनिकेशंस ने माइक्रोसॉफ्ट के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली। टाटा कम्युनिकेशंस ने भारत में उद्यमों के लिए माइक्रोसॉफ्ट टीम्स पर सहयोग और कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट के साथ साझेदारी की है। कंपनी ने यह घोषणा बुधवार को की।कंपनी ने कहा, टाटा कम्युनिकेशंस ग्लोबलरैपिड प्लेटफॉर्म भारतीय उद्यम यूजर्स के साथ-साथ देश में मौजूद बहुराष्ट्रीय कंपनियों को ऑपरेटर कनेक्ट प्लेटफॉर्म का उपयोग कर दुनिया भर में कहीं भी, किसी भी टीम डिवाइस पर कैरियर-ग्रेड पीएसटीएन वॉयस कॉल करने और प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। यूनिफाइड कम्युनिकेशंस एंड कोलैबोरेशन के उपाध्यक्ष श्रीराम संपत ने कहा, ऑपरेटर कनेक्ट फॉर टीम्स पर माइक्रोसॉफ्ट के साथ हमारा सहयोग उद्यमों के लिए कार्यबल उत्पादकता और दक्षता को और बढ़ाएगा जबकि उन्हें स्थानीय नियमों और अनुपालन का पालन करने में मदद करेगा। प्लेटफ़ॉर्म एक एंड-टू-एंड प्रबंधित सर्विस लेयर प्रदान करता है, जो एक ही प्लेटफ़ॉर्म पर बढ़ी हुई उपयोगिता, सुरक्षा और नियामक अनुपालन के साथ टीम्स, एंडपॉइंट डिवाइस और एसबीसी (सत्र सीमा नियंत्रक) की तैनाती, ऑनबोर्डिंग और प्रबंधन प्रदान करता है।

आरबीआई की सख्ती के बाद पेटीएम के शेयर हुए धड़ाम

नई दिल्ली । पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर आरबीआई की सख्ती के बाद पेटीएम के शेयर अचानक गिर गए हैं। जानकारी के अनुसार तीन कारोबारी सत्रों में कंपनी के शेयर 42 फीसदी टूट चुके हैं। हालांकि, मंगलवार को कंपनी के शेयर में पांच फीसदी तक उछाल देखने को मिला। इस तेजी के बावजूद कंपनी और उसके निवेशकों पर बड़ा संकट बना हुआ है। बता दें कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक के कामकाज में अनियमितताएं दुरुस्त करने की आरबीआई की चेतावनी की लगातार अनदेखी हो रही थी। बता दें कि पेटीएम के शेयरों में 11 लाख रिटेल निवेशक और 514 विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) का पैसा फंसा हुआ है। इसके अलावा, म्यूचुअल फंड की 97 योजनाओं के जरिए भी निवेशकों की गाढ़ी कमाई फंसी हुई है। आंकड़ों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष की दिसंबर तिमाही में पेटीएम में म्यूचुअल फंडों की हिस्सेदारी बढ़कर 4.99 फीसदी पहुंच गई। इसमें विदेशी निवेशकों का हिस्सा 2.80 फीसदी बढ़कर 63.27 फीसदी पहुंच गया। वहीं, 2 लाख रुपए तक की होल्डिंग वाले छोटे निवेशकों की होल्डिंग 4.57 फीसदी बढ़कर 12.85 फीसदी हो गई। टॉप एफआईआई इंवेस्टर्स में बीएनपी पारिबा आर्बिट्रेज और कनाडा पेंशन प्लान इन्वेस्टमेंट बोर्ड शामिल हैं। इनके पास पेटीएम में 1 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी है। वहीं मिराए म्यूचुअल फंड शेयर में शीर्ष निवेशक था। जिसकी दिसंबर तिमाही के अंत में संकटग्रस्त फिनटेक में 2.51 फीसदी हिस्सेदारी थी। निप्पॉन म्यूचुअल फंड के पास भी पेटीएम में 1 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी थी। जब कि 6 म्यूचुअल फंड स्कीमें भी 100 करोड़ रुपए से ज्यादा की थीं।

पेटीएम के बाद अब भारतपे की बढ़ी मुश्किल!

नई दिल्ली। पेटीएम के बाद अब भारतपे के सामने मुसीबत आ गई है। कॉरपोरेट मंत्रालय ने भारतपे को नोटिस जारी किया है। मंत्रालय ने कंपनी कानून की धारा 206 के तहत नोटिस जारी कर भारतपे से अशनीर ग्रोवर मामले में जानकारी मांगी है। कंपनी ने भी कहा है कि वह जांच में सरकार का पूरा साथ देगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कॉरपोरेट मंत्रालय ने भारतपे को नोटिस जारी कर पूछा है कि अशनीर ग्रोवर के खिलाफ कोर्ट में दाखिल किए आपराधिक और दीवानी मामलों से जुड़े के या सबूत हैं। भारतपे को अशनीर ग्रोवर ने 4 साल पहले शुरू किया था। 2022 की शुरुआत में अशनीर के खिलाफ विवाद शुरू हुआ। उन्होंने कोटक ग्रुप के एक एम्पलॉयी को इसलिए धमकी दी, क्योंकि उसने नायका के आईपीओ को उनेक लिए अलॉट नहीं किया था। विवाद बढ़ने पर ग्रोवर ने भारतपे के प्रबंध निदेशक पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद कंपनी ने अशनीर के खिलाफ वित्ते तीय हेरफेर को लेकर भी ऑडिट शुरू कर दी। गौरतलब है कि अशनीर ग्रोवर ने ही भारतपे की स्थापना की थी। बाद में अशनीर और उनकी पत्नी के खिलाफ कंपनी के पैसों में हेरफेर करने के आरोप लगे और उन्हें कंपनी के बोर्ड से बाहर कर दिया गया। नोटिस पर भारतपे ने जवाब दिया है कि मंत्रालय ने कंपनी को नोटिस जारी कर अशनीर मामले में ज्यादा जानकारी मांगी है। सरकार ने 2022 में मामले की समीक्षा शुरू की थी और इसी पूछताछ को आगे बढ़ाते हुए अतिरिक्त जानकारियां मांगी है। कंपनी ने कहा कि हम जांच एजेंसियों को हरसंभव मदद करने की कोशिश करेंगे।

शेयर बाजार में मिलाजुला कारोबार, बीसएई सेंसेक्स में गिरावट, निफ्टी में बढ़त

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार में बुधवार को मिलाजुला कारोबार हुआ। बीसएई सेंसेक्स जहां गिरावट के साथ बंद हुआ। वहीं एनएसई निफ्टी में हल्की बढ़त रही। दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के बीच ही आज सुबह बाजार तेजी के साथ खुला पर आईटी और वित्तीय शेयरों में मुनाफावसूली हावी होने से इसमें गिरावट आने लगी। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 24.13 अंक करीब 0.03 फीसदी नीचे आकर 72,210.22 पर बंद हुआ। वहीं पचास शेयरों वाला निफ्टी 1.10 अंक करीब 0.01 फीसदी की बढ़त के साथ ही 21,930.50 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, जेएसडब्लयू स्टील, ऐक्सिस बैंक , बजाज फाइनैंस , अल्ट्राटेक सीमेंट , नेस्ले इंडिया, एशियन पेंट्स, सन फार्मा, रिलायंस, टाइटन और मारुति इंडिया के शेयर आज बढ़त पर बंद हुए। एसबीआई स्टॉक इंट्रा डे कारोबार के दौरान 677.50 के स्तर पर पहुंच गया। वहीं आज हिंदुस्तान यूनिलिवर, बजाज फिनसर्व, आईसीआईसीआई, टाटा स्टील, महिंद्रा ऐंड महिंद्रा, , एचसीएल टेक, टाटा मोटर्स, विप्रो, एचडीएफसी बैंक,एनटीपीसी, टीसीएस और इन्फोसिस के शेयर नीचे आये। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजारों की बात करें तो एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया के सियोल और चीन के शंघाई में तेजी रही जबकि टोक्यो और हांगकांग के बाजारों में शेयर गिरे। यूरोपीय बाजारों में अधिकतर गिरावट रही। गत दिवस अमेरिकी बाजारों में गिरावट आई। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने गत दिवस 92.52 करोड़ रुपये की इक्विटी खरीदी। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 0.66 फीसदी बढ़कर 79.11 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। बीएसई मिडकैप इंडेक्स में 1.48 फीसदी से ज्यादा की बढ़त जबकि, बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स 0.35 फीसदी बढ़ा। इससे पहले आज सुबह बाजार तेजी के साथ खुला। सप्ताह के तीसरे कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच ही खरीददारी हावी रहने से आया है। आज सुबह सेंसेक्स 270 अंक ऊपर आकर 72,550 जबकि निफ्टी 116 अंक उछलकर 22,045 पर पहुंच गया। कारोबार के दौरान एसबीआई, एक्सिस बैंक, एशियन पेंट्स, एमएंडएम, टाइटन, कोटक बैंक और बजाज ट्विन्स के शेयरों में तेजी आई।

ब्लैकस्टोन के साथ गहराया विवाद, कर्ज को इक्विटी में बदलने पर आपत्ति

नई दिल्ली । कर्ज को इक्विटी में बदलने पर अमेरिकी निजी इक्विटी फर्म ब्लैकस्टोन के साथ बैजूस का विवाद गहरा रहा है। दरअसल ब्लैकस्टोन ने आरिन कैपिटल पार्टनर्स के कर्ज को इक्विटी में बदलने के प्रस्ताव पर आपत्ति जताई है। उसका कहना है कि इससे आकाश एजूकेशन सर्विसेज में उसकी हिस्सेदारी काफी घट जाएगी। बताया जा रहा है कि जब 30 करोड़ डॉलर के कर्ज को इक्विटी में तब्दील किया जाएगा तो इससे बेंगलूरु स्थित अरबपति रंजन पई के नेतृत्व वाली आरिन कैपिटल पार्टनर्स की हिस्सेदारी आकाश एजूकेशन में बढ़कर 39 प्रतिशत हो जाएगी और मौजूदा निवेशकों का हिस्सा घट जाएगा। हालां कि यह ऋण-इक्विटी परिवर्तन आकाश एजूकेशन के लिए 60 करोड़ डॉलर के कम इक्विटी मूल्यांकन पर भी हो रहा है, जबकि 2021 में उस समय यह मूल्यांकन 95 करोड़ डॉलर दर्ज किया गया था, जब थिंक ऐंड लर्न ने कंपनी को खरीदा था। बता दें कि बैजूस ब्रांड नाम से परिचालन करने वाली थिंक ऐंड लर्न मौजूदा समय में आकाश एजूकेशन सर्विसेज की प्रमुख शेयरधारक है। इस समय आकाश में थिंक ऐंड लर्न की 26 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इस मामले से जुड़े एक जानकार ने कहा कि ब्लैकस्टोन और अन्य निवेशकों ने आकाश एजूकेशन के बोर्ड और भारतीय नियामकों को इस संबंध में पत्र लिखकर कंपनी द्वारा कर्ज को इक्विटी में बदलने की योजना पर आपत्ति जताई है।

नकदी की कमी दूर करने आरबीआई ने दो बार की वीआरआरआर की नीलामी

नई दिल्ली ।

नकदी की कमी को दूर करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने आज पहली बार एक दिन में दो ओवरनाइट वैरिएबल रेट रिवर्स रीपो (वीआरआरआर) की नीलामी की। इसका उद्देश्य बैंकिंग प्रणाली में नकदी की कमी को कम करना था। बता दें कि बीते चार महीनों से नकदी की तंगी व्यापक रूप से बनी हुई थी। मार्केट के साझेदारों ने कहा कि केंद्रीय बैंक ने दिन में बैंकों को कोष जारी किए जाने के कारण वीआरआरआर की दूसरी नीलामी की। केंद्रीय बैंक बुधवार को 50,000 करोड़ रुपये की अन्य वीआरआरआर नीलामी भी करेगा। हालों कि पहली नीलामी को कम मांग प्राप्त हुई। इसमें बैंकों ने 75,000 करोड़ रुपये की अधिसूचना पर 27,538 करोड़ रुपये जमा कराए। जबकि दूसरी नीलामी में अच्छी मांग रही। मिली जानकारी के अनुसार बैंकों ने दूसरी नीलामी में 41,804 करोड़ रुपये जमा कराए जबकि अधिसूचित राशि 50,000 करोड़ रुपये थी। बैंकों ने भारित औसत दर 6.49 प्रतिशत पर कोष जमा कराया है। इस मामले में सरकारी बैंक के एक डीलर ने बताया कि भारतीय रिजर्व बैंक को यह जरूर जानकारी होगी कि बैंकों को इस दिन फंड हासिल होने वाला है। इसलिए रिजर्व बैंक ने दूसरी नीलामी की थी। भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार सोमवार को बैंकिंग प्रणाली में नकदी की कमी 1.21 लाख करोड़ रुपये थी। हालांकि कर की अदायगी किए जाने के कारण 24 जनवरी को नकदी की कमी रिकॉर्ड स्तर 3.46 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गई थी। ले किन जानकार बता रहे हैं कि इस सप्ताह के दौरान नकदी की कमी 1.50 लाख करोड़ रुपये से कम रहने की उम्मीद है। क्यों कि अगले सप्ताह से कर जमा किए जाने के कारण नकदी का अंतर फिर बढ़ सकता है। इसके लिए सरकार करीब 4 लाख करोड़ रुपये का संचयन कर रही है। यह रो शि मार्च के अंत तक खर्च किए जाने की उम्मीद है।

एमजी कॉमेट ईवी पर 1 लाख तक की छूट

- कीमतें अब 6.99 लाख रुपये एक्स शोरूम से शुरू

नई दिल्ली ।

एमजी मोटर इंडिया कंपनी अपनी स्थापना की शताब्दी वर्ष सेलिब्रेट कर रही है। इस मौके पर कंपनी ने एमजी कॉमेट ईवी की कीमत में 1 लाख रुपये की कटौती की है, जिसके बाद इस ऑल-इलेक्ट्रिक कार की कीमतें अब 6.99 लाख रुपये एक्स शोरूम से शुरू होती हैं। एमजी कॉमेट ईवी में 17.3 केडब्ल्यूएच की बैटरी दी है। इससे 230केएम की अराई-प्रमाणित रेंज प्राप्त की जा सकती है। एमजी में एक 3.3केडब्ल्यू ऑनबोर्ड चार्जर भी दिया है, जिससे 7 घंटे में बैटरी को फुल चार्ज किया जा सकता है। इसमें दी गई बैटरी 42एचपी और 110 एनएम का टार्क जेनरेट करती है। एमजी मोटर का दावा है कि इस इलेक्ट्रिक कार को 1000 किमी चलाने का खर्च सिर्फ 519 रुपये है जो कि काफी कम खर्च है। इस इलेक्ट्रिक कार में दो 10.25-इंच स्क्रीन, एक टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम और एक डिजिटल क्लस्टर, 55+ कनेक्टेड फीचर्स, 100+ वॉइस कमांड, वायरलेस एंड्राइड ऑटो और एप्पल कारप्ले, डुअल फ्रंट एयरबैग, ईबीडी के साथ एबीएस, फ्रंट व रियर 3 पॉइंट सीटबेल्ट्स, रियर पार्किंग सेंसर, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम और आईसोफिक्स चाइल्ड सीट जैसे फीचर्स दिए गए हैं। बता दें कि भारत में एमजी कॉमेट ईवी को लोगों द्वारा काफी प्यार मिला है। इसे आम लोगों के साथ-साथ स्टार्स ने भी खरीदा है।

प्रकृति प्रेमियों का स्वर्ग ऊटी

दि आपको प्राकृतिक स्थानों की सैर करने में आनंद आता है तो ऊटी से अच्छी जगह आपके लिए कोई और नहीं। यहां दूर-दूर तक फैली हरियाली, चाय के बागान, तरह-तरह की वनस्पतियां आपको बांधकर रख लेती हैं।

पहाड़ों की रानी ऊटी

नीलगिरी जिले की राजधानी है, इसे उद्गमंडल के नाम से भी जाना जाता है। नीलगिरी का अर्थ है- नीला पहाड़, शायद हरे-भरे पहाड़ों के कारण इसे यह नाम दिया गया है। यह समुद्र तल से 2240 मीटर की ऊंचाई पर है।

जब आप कल्लार से कुनूर जाते हैं तो आपको रास्ते में पेड़-पौधों में तथा मौसम में आश्चर्यजनक बदलाव देखने को मिलता है। आपको कल्लार में गरम मौसम मिलेगा तो उससे आगे गरमी हल्की होती चली जाती है। कुनूर के पास चीड़, नीली गोंद, साइप्रस (सुरू) वृक्षों के कारण जलवायु में नमी महसूस होती है।

जैसे ही ऊटी से गुडलूर की तरफ बढ़ते हैं तो वनस्पतियों को देखकर आपके मन में हर्ष की हिलोरें उठने लगती हैं। यही है प्रकृति के सान्निध्य का आनंद! जलवायु और वनस्पति मिलकर एक खूबसूरत मंजर पेश करते हैं। यहां के चाय बागानों ने बहुत ख्याति पाई है। यहां हर वर्ष चाय और पर्यटन उत्सव में भारी संख्या में लोग शामिल होते हैं।

दोदाबेट्टा पीक

यह 2623 मीटर की ऊंचाई पर है। यह जिले का सबसे ऊंचा स्थान है, यहां से आप ऊटी के आसपास के क्षेत्र का खूबसूरत नजारा देख सकते हैं। यह ऊटी से केवल 10 किलोमीटर दूर है।

लैम्ब्स रॉक

यह कुनूर से केवल 9 किलोमीटर दूर है। यहां से आप कोयंबटूर के नजारों और आसपास के इलाकों के चाय बगानों के सुरम्य दृश्य देख सकते हैं। यहां का हर दृश्य फोटो खींचने लायक है तो यहां अपने भीतर छिपे फोटोग्राफर को बाहर निकालिए और जमकर फोटोग्राफी कीजिए।

कोडानाडू व्यू पाइंट

यह नीलगिरी पर्वत श्रृंखला के पूर्वी छोर पर कोटागिरी से लगभग 16 किलोमीटर दूर है। यहां से आप मोयार नदी और चाय के बागानों का मोहक दृश्य देख सकते हैं। यहां एक प्रेक्षण मीनार भी हैं, जहां से आप रंगास्वामी शिखर का नजारा देख सकते हैं।

बोटनिकल गार्डन्स

जो लोग प्रकृति प्रेमी है, हरियाली देखने, घूमने-फिरने के शौकीन हैं और दुर्लभ फर्न और अन्य पौधे देखना पसंद करते हैं, उनके लिए इस उद्यान से बढ़ कर दूसरी कोई बेहतर जगह नहीं। लगभग 22 हेक्टेयर इलाके में फैले हुए शासकीय वनस्पति उद्यान 1847 में बनाए गए थे। इनमें पौधों और वृक्षों की सैकड़ों-हजारों प्रजातियां हैं। इनमें एक ऐसे वृक्ष का भी जीवाश्म है, जिसके बारे में विश्वास किया जाता है कि वह 2 करोड़ वर्षों से भी अधिक पुराना है। इन खूबसूरत उद्यानों का रखरखाव राज्य के बागवानी विभाग के हाथ में है।

ऊटी झील

यहां नौका विहार कीजिए या मछली पकड़ने का शौक भी पूरा कर सकते हैं।

मुदुमलाई वन्य प्राणी विहार

यह ऊटी से 67 किलोमीटर दूर है। अगर आप 1-2 दिन रुकते हैं, तो वन्य प्राणी विहार को देखना आपके लिए बहुत अच्छा अनुभव होगा। यहां बहुत से पेड़-पौधे और जीव-जंतु हैं। यहां इनकी दुर्लभ प्रजातियां हैं।

यहां हाथी, बड़ी गिलहरियां, सांभर, चीतल, भौंकनेवाले हिरण और उड़नेवाली गिलहरियां तो यूं ही देखने को मिल जाती हैं। इस अभयारण्य में किस्म-किस्म के पक्षियों को भी देखा जा सकता है। इनमें रंगबिरंगे तोते, काले कठफोड़वे, गरुड़ आदि शामिल हैं।

कोटागिरी

यह ऊटी के पूर्व में 28 किलोमीटर दूर पर छोटा-सा गांव है, यह नीलगिरी के 3 हिल स्टेशन में से सबसे पुराना है। यहां का मौसम अन्य पर्वत स्थलों से कहीं अधिक खुशनुमा रहता है। यहां हैरत में डालनेवाले कई चाय बागान हैं। इसलिए ऊटी जाएं तो कोटागिरी की सैर के लिए जाना न भूलें।

कालहट्टी वॉटरफॉल्स

कालहट्टी की ढलानों पर खूबसूरत रमणीक कालहट्टी जलप्रताप लगभग 100 फुट ऊंचा है। जो शहर से लगभग 13 किलोमीटर दूर है। इसलिए ऊटी जा रहे हैं तो इन प्रपातों को और आसपास के सुरम्य स्थलों को देखना भी न भूलें।

जलप्रपातों को देखते हुए आपको कालहट्टी-मसीनागुडी ढलानों पर वन्य प्राणियों की प्रजातियां भी देखने को मिल जाएंगी जिनमें पैंथर, सांभर और जंगली भैंसें शामिल हैं।

मुकरूथी

यह ऊटी से लगभग 36 किलोमीटर दूर हैं और यहां से आप रमणीक मुकरूथी शिखर को देख सकते हैं।

सिम्स पार्क

यह पार्क ऊपरी कुनूर में 12 हेक्टेयर से अधिक इलाके में फैला हुआ है और माना जाता है कि इस पार्क में 1 हजार से अधिक पौधों की प्रजातियां हैं, जिनमें अनेक चीड़, फर्न और झाड़ियां शामिल हैं।

डॉल्फिंस नोज

यहां आप अपना समय मौजमस्ती में बिता सकते हैं। खेलों में हिस्सा ले सकते हैं और सैरसपाटा कर सकते हैं। यहां आने का एक फायदा यह है कि वहां से आसपास के इलाकों का समग्र दृश्य देख सकते हैं। अगर दिन साफ हो, तो वहां से कैथरीन जलप्रपातों को भी देख सकते हैं।

कब जाएं

अप्रैल से जून और सितंबर से नवंबर तक।

मौसम

गर्मियों में अधिकतम 25 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम 10 डिग्री सेल्सियस। सर्दियों में अधिकतम 21 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम 5 डिग्री सेल्सियस।

कैसे जाएं

रेल मार्ग से

मेत्तूपलयम बड़ी लाइन का रेलवे स्टेशन है। बड़ी लाइन का प्रमुख रेल जंक्शन कोयंबटूर है, जो कि सभी बड़े नगरों से मिला हुआ है।

हवाई मार्ग से

यहां से सबसे नजदीक हवाई अड्डा कोयंबटूर है, जो कि 100 किलोमीटर दूर है। आप चेन्नई, कोजीकोडे, बंगलोर और मुंबई से कोयंबटूर के लिए सीधी उड़ान भर सकते हैं।

स्थानीय वाहन

बसें, टैक्सी आदि उपलब्ध हैं।

कहां ठहरें

डेक्कन पार्क रिजॉर्ट, होटल वेलबैक रेजीडेंसी, होटल लेक व्यू, होटल ऊटी आदि।

सपा प्रमुख अखिलेश भी शामिल होंगे भारत जोड़ो न्याय यात्रा में

लखनऊ। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में सपा प्रमुख अखिलेश यादव शामिल होंगे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अखिलेश यादव को भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने का न्योता भेजा था। अखिलेश यादव ने कांग्रेस के न्योते पर को स्वीकार कर लिया। उन्होंने राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने की घोषणा की। बता दें कि राहुल गांधी का काफिला 16 फरवरी को उत्तर प्रदेश में प्रवेश करेगा। अखिलेश यादव राहुल गांधी का साथ अमेठी या रायबरेली में दे सकते हैं। उन्होंने भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होने की सहमति दे दी है।सपा प्रमुख ने कांग्रेस को बधाई देते हुए भारत जोड़ो न्याय यात्रा का निमंत्रण स्वीकार किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा उत्तर प्रदेश की सीमा में दाखिल होकर पीडीए की रणनीति से जुड़ेगी और सपा के 'सामाजिक न्याय' और 'परस्पर सौहार्द' का आंदोलन और आगे ले जाएगी। अखिलेश यादव को उम्मीद है कि टीम इंडिया और पीडीए की रणनीति का गठजोड़ जीत का नया इतिहास लिखेगा।

भारतीय टूरिस्टों के लिए ईरान का वीजा फ्री, माननी होंगी 4 शर्तें

नई दिल्ली। भारतीय टूरिस्टों के लिए अब ईरान का वीजा फ्री हो गया है। लेकिन इसके लिए उन्हें चार शर्तें माननी होंगी। जानकारी के अनुसार ईरान ने मंगलवार को पर्यटन के लिए विमान से वहां आने वाले भारतीयों के लिए अधिकतम 15 दिन के वीजा फ्री एंट्री प्रोग्राम का ऐलान किया है। ईरानी दूतावास ने कहा कि भारतीय नागरिकों के लिए 4 फरवरी से चार शर्तों के तहत वीजा-मुक्त प्रवेश सुविधा शुरू कर दी गई है। बता दें कि ईरान ने इससे पहले दिसंबर में भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, इंडोनेशिया, जापान, सिंगापुर और मलेशिया समेत 32 अन्य देशों के लिए एक नए वीजा-मुक्त कार्यक्रम को मंजूरी दी। वहीं ईरान की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि साधारण पासपोर्ट धारक व्यक्तियों को हर छह महीने में एक बार बिना वीजा के अधिकतम 15 दिन के लिए देश में ठहरने की अनुमति दी जाएगी। 4 फरवरी से भारतीय टूरिस्टों के लिए इसे लागू किया जा चुका है। ईरान दूतावास द्वारा जारी नई नीति के साथ भारतीय पर्यटकों को ईरान जाने के लिए वीजा की जरूरत नहीं है। सामान्य पासपोर्ट रखने वाले व्यक्तियों को हर छह महीने में एक बार बिना वीजा के ईरान में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी, जिसमें अधिकतम 15 दिन का प्रवास होगा। ध्यान रखें ?कि 15 दिन की अवधि आगें नहीं बढ़ाई जा सकती। जानकारी मिली है कि वीजा-मुक्त प्रवेश केवल पर्यटन उद्देश्यों के लिए ईरान में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों पर लागू होता है। व्यवसाय या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए ईरान जाने वाले भारतीयों को संबंधित श्रेणियों के तहत वीजा के लिए आवेदन करना होगा। जो लोग छह महीने की समय अवधि के भीतर एक से अधिक बार ईरान जाना चाहते हैं, उन्हें वीजा प्राप्त करना अ ?निवार्य होगा। ध्यान रखें कि वीजा-मुक्त प्रवेश केवल उन भारतीय पर्यटकों पर लागू होगा जो हवाई मार्ग से ईरान पहुंचेंगे। तुर्की, अफगानिस्तान, पाकिस्तान या किसी पड़ोसी देश से होकर भूमि मार्ग से ईरान आने वालों को बिना पूर्व वीजा के प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी।

अब गृह मंत्रालय में लगी सुरक्षा में सेंध

नई दिल्ली। संसद के बाद अब केंद्रीय गृह मंत्रालय की सुरक्षा में सेंध का मामला सामने आया है। गृह मंत्रालय में एक युवक फर्जी दस्तावेज के सहारे घुस गया। दिल्ली पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर लिया है और उसे संयुक्त रूप से पूछताछ की जा रही है। कर्तव्य पथ थाने की पुलिस ने फर्जी पहचान पत्र पर नार्थ ब्लाक स्थित गृह मंत्रालय के ऑफिस में घुसने की कोशिश करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम आदित्य प्रताप सिंह है। जानकारी के मुताबिक, दिल्ली के कर्तव्य पथ थाने की पुलिस ने फर्जी पहचान पत्र पर नार्थ ब्लाक स्थित गृह मंत्रालय के ऑफिस में घुसने की कोशिश करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम आदित्य प्रताप सिंह है। बताया जा रहा है कि आदित्य किस मकसद से फर्जी आईडी पर घुसा इसकी पुलिस जांच कर रही है। लेकिन फिलहाल इसका कोई टेरर एंगल नहीं पता चला है। लोकसभा में बीते साल 13 दिसंबर को दो युवक दर्शक दीर्घा से डेस्क पर कूदे और कलर स्मॉग निकालने लगे। इस दौरान पूरे हॉल में धुंआ हो गया। वहीं, उनके साथी भी संसद के बाहर इसी तरह का प्रदर्शन कर लगे। आरोपियों ने जांचकर्ताओं को बताया था कि उनका मकसद मणिपुर हिंसा, बेरोजगारी और किसानों की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना था।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा राकांपा चुनाव चिन्ह विवाद

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अजीत पवार गुट ने बुधवार को उच्चतम न्यायालय में एक 'केवियट' याचिका दायर कर गुहार लगाई कि इस पार्टी के शरद पवार गुट की ओर से यदि चुनाव आयोग के फैसले को चुनौती दी जाती है तो उनका (अजीत) पक्ष भी सुना जाना चाहिए। चुनाव आयोग ने मंगलवार को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार गुट को वास्तविक एनसीपी घोषित करते हुए चुनाव चिन्ह घड़ी का निशान का हकदार बताया था। अजीत पवार शरद पवार के भतीजे हैं, जिन्होंने पिछले साल महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार में शामिल हुए थे। शीर्ष अदालत के समक्ष दायर याचिका में कोई एक तरफा आदेश नहीं पारित करने की गुजारिश की गई है। अजीत पवार गुट ने चुनाव आयोग के समक्ष पेश हलफनामे में एनसीपी के कुल 81 विधायकों में से 57 का समर्थन हासिल हो ने का दावा किया था, जबकि उनके चाचा शरद पवार गुट के साथ मात्र 28 विधायकों का साथ होने की बात कही गई।

कश्मीर घाटी में ठंड का प्रकोप जारी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के पर्यटन स्थल पहलगाम में बुधवार को न्यूनतम तापमान शून्य से कम 10.8 डिग्री सेल्सियस और गुलमर्ग में शून्य से कम 10.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जिससे कश्मीर घाटी में ठंड का प्रकोप जारी है। मौसम विज्ञान केंद्र (आईएमडी) ने बुधवार को बताया कि पहाड़ी इलाकों में भारी हिमपात के कारण कश्मीर घाटी में तापमान शून्य से नीचे पहुंच गया है, जिससे कई स्थानों पर न्यूनतम तापमान में काफी गिरावट आयी है। यहां का 17 फरवरी तक मौसम शुष्क रहने, 14 फरवरी शाम को बादल छाए रहने और 18-20 फरवरी के दौरान जम्मू-कश्मीर में हल्का हिमपात और बारिश का अनुमान है। श्रीनगर में अधिकतम तापमान 8.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो पिछले दिन के सामान्य तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस से 2.0 डिग्री सेल्सियस कम है। काजीगुंड का एक दिन पहले दर्ज किए गए तापमान शून्य से कम 2.0 डिग्री सेल्सियस के मुकाबले काजीगुंड का न्यूनतम तापमान शून्य से कम 3.2 डिग्री सेल्सियस था और कोकेरनाग में पिछली रात के शून्य से कम 2.4 डिग्री सेल्सियस के मुकाबले न्यूनतम तापमान शून्य से कम 4.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। कुपवाड़ा में पिछली रात के शून्य से कम 3.4 डिग्री सेल्सियस के मुकाबले न्यूनतम तापमान शून्य से कम 3.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस कम रहा।

हरदा विस्फोट कांड के बाद इंदौर में छह पटाखा गोदाम सील, कई गड़बड़ियां मिलीं

इंदौर, । मध्यप्रदेश के हरदा में स्थित पटाखा गोदाम में भीषण विस्फोट के बाद हरकत में आए इंदौर के जिला प्रशासन ने अलग-अलग गड़बड़ियों के कारण पटाखों के छह गोदामों को सील कर दिया है। प्रशासन के एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। जिलाधिकारी आशीष सिंह ने संवाददाताओं को बताया, 'हमने पिछले 24 घंटे के दौरान जिले के अलग-अलग इलाकों में पटाखों के छह गोदाम सील कर दिए हैं।' उन्होंने बताया कि इनमें से एक पटाखा गोदाम रिहायशी क्षेत्र में था, जबकि अन्य गोदामों में स्वीकृत सीमा से ज्यादा पटाखों का भंडारण पाया गया और वहां सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम भी नहीं थे। हरदा के पटाखा कारखाने में मंगलवार को भीषण विस्फोट में कम से कम 11 लोगों की जान चली गई और 200 से अधिक व्यक्ति घायल हो गए।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने की दिल्ली मेट्रो की सवारी, स्कूल स्टूडेंट्स से की बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार 7 फरवरी को दिल्ली मेट्रो की सवारी की। इसका एक वीडियो समाचार एजेंसी एएनआई ने साझा किया है। राष्ट्रपति मुर्मू के बगल में उनके सुरक्षा अधिकारी थे और वह पीली साड़ी पहने प्रसन्नतापूर्वक बैठी थीं। वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है। लोग इसकी तारीफ भी कर रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने दिल्ली मेट्रो की वायलेट लाइन में यात्रा की, जो कश्मीरी गेट और फरीदाबाद में राजा नाहर सिंह (बल्लभगढ़) के बीच चलती है।

कथित तौर पर, राष्ट्रपति के इस अप्रत्याशित कदम का उद्देश्य शहर के निवासियों के दैनिक जीवन के साथ संबंध स्थापित करना था। समाचार एजेंसी एएनआई द्वारा साझा किए गए एक वीडियो

में यह खबर कैद हुई, जिसमें राष्ट्रपति को मेट्रो के अंदर बैठे और कुछ अधिकारियों और स्कूली छात्रों के साथ बातचीत करते हुए दिखाया गया। इससे पहले 31 जनवरी को बजट सत्र की शुरुआत में संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा था कि सरकार परीक्षाओं में अनियमितताओं को लेकर युवाओं की चिंताओं से अवगत है।

बजट सत्र के पहले दिन 31 जनवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित किया था। राष्ट्रपति मुर्मू और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने भी मध्य प्रदेश के हरदा में एक पटाखा फैक्ट्री में भीषण आग में जानमाल के नुकसान पर शोक व्यक्त किया। इस बीच, नोएडा मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (एनएमआरसी) ने सोमवार को दिल्ली मेट्रो की ब्लू लाइन पर एक इंटरचेंज स्टेशन के साथ नोएडा एक्सटेंशन तक अपने नेटवर्क का विस्तार करने के लिए एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को मंजूरी दे दी।

चीन-पाक पर नजर रखने अब भारतीय वायु सेना को मिलेंगे 12 टोही विमान

नई दिल्ली। पाकिस्तान और चीनी सरहदों पर अपनी कड़ी निगरानी करने भारतीय वायु सेना को अब 12 टोही विमान मिलने वाले हैं। इसके लिए भारत ने एक कदम और आगे बढ़ा दिया है। जल्द ही भारत के 12 और एयरक्राफ्ट आसमान में दुश्मनों के विमानों पर नजर रखेंगे। जानकारी के अनुसार भारत अब उन्नत स्वदेशी एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल एयरक्राफ्ट (स्वदेशी हवाई पूर्व चेतावनी एवं नियंत्रण प्रणाली) को विकसित करने और भारतीय वायुसेना में शामिल करने के लिए अब तेजी से कदम उठा रहा है, जो चीन और पाकिस्तान सीमाओं पर सर्विलांस और डिटेक्शन की क्षमताओं को बढ़ावा देगा और साथ ही दुश्मन जेट के साथ हवाई युद्ध के दौरान सीधे लड़ाकू विमानों की मदद करेगा। 12 और टोही विमानों के लिए भारत तेजी से काम कर रहा है। दरअसल, इंडियन एयरफोर्स और डीआरडीओ मिलकर सक्रिय रूप से नेत्र विमान के छह मार्क-1ए के साथ-साथ छह मार्क-2 संस्करण विकसित करने के कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहा है, जिनमें से तीन नेत्र विमान पहले बनाए गए थे और फरवरी 2017 से शामिल किए गए थे। गौरतलब है कि डीआरडीओ नेत्रा एक भारतीय, हल्के वजन, निगरानी और टोही अभियानों के लिए स्वायत्त मानव रहित हवाई वाहन है। यह संयुक्त रूप से रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के अनुसंधान द्वारा विकसित किया गया है। टीओआई ने सूत्रों के हवाले से कहा कि रक्षा मंत्रालय अगले सप्ताह 6 मार्क-1ए विमानों के लिए आवश्यकता की स्वीकृति लेगा, जिसमें ब्राजीलियाई एम्ब्रेयर जेट पर सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन किए गए ऐरे एंटीना-आधारित रडार, इलेक्ट्रॉनिक और सिग्नल इंटेलिजेंस सिस्टम को 9 हजार करोड़ रुपए लागत से स्थापित किया जाएगा।

सिद्धरमैया और कई कांग्रेस नेताओं ने केंद्र के खिलाफ प्रदर्शन किया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के नेतृत्व में कांग्रेस की प्रदेश इकाई के कई नेताओं ने कर राजस्व के वितरण में राज्य के साथ हुए 'अन्याय' को लेकर बुधवार को केंद्र के खिलाफ यहां जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में उपमुख्यमंत्री और कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डी.के. शिवकुमार, राज्य के कई सांसद, मंत्री और विधायक शामिल हुए। कांग्रेस का आरोप है कि पिछले कुछ वर्षों में कर राजस्व में उसके प्रदेश के हिस्से की राशि के हस्तांतरण और सहायता अनुदान में कर्नाटक के साथ 'अन्याय' किया गया है। विरोध प्रदर्शन में शामिल कांग्रेस नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार 15वें वित्त आयोग के तहत कर्नाटक को कथित तौर पर हुए 1.87 लाख करोड़ रुपये के नुकसान की भरपाई करे। सिद्धरमैया ने कहा कि यह

विरोध भाजपा के खिलाफ नहीं बल्कि कर्नाटक के साथ भेदभाव के खिलाफ है। उन्होंने भाजपा के इस आरोप को खारिज किया कि इस विरोध प्रदर्शन का उद्देश्य उत्तर-दक्षिण विभाजन को बढ़ावा देना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस चाहती है कि देश एकजुट रहे, लेकिन दक्षिणी राज्यों के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। सिद्धरमैया ने कहा कि 14वें वित्त आयोग के तहत राज्यों, खासकर कर्नाटक को कर राजस्व बांटने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले फॉर्मूले को 15वें वित्त आयोग ने बदल दिया था। उन्होंने कहा कि राज्य के राजस्व के नुकसान को रोकने के लिए पुराने फॉर्मूले पर लौटने की जरूरत है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वे 14वें वित्त आयोग द्वारा इस्तेमाल किए गए फॉर्मूले को अपनाने के लिए वह नए वित्त आयोग को भी एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। माकपा के दिग्गज नेता और केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन अपने कैबिनेट सहयोगियों के साथ 8 फरवरी को दक्षिणी राज्य के प्रति केंद्र की कथित उदासीनता के खिलाफ दिल्ली में विरोध प्रदर्शन करेंगे।

वरुण गांधी इस बार सुल्तानपुर या अमेठी से उतर सकते हैं निर्दलीय

लखनऊ (एजेंसी)। पीलीभीत से बीजेपी सांसद वरुण गांधी इस बार सुल्तानपुर या अमेठी से चुनाव मैदान में उतर सकते हैं। चुनाव में कांग्रेस व सपा उनका समर्थन करने वाली है। बता दें कि अपनी ही सरकार को घेरने वाले वरुण गांधी को पार्टी टिकट देगी या नहीं, इस पर संशय बना हुआ है। साथ ही इस बार का चुनाव कहां से लड़ेंगे, इसको लेकर अटकलों का बाजार गर्म है। सूत्रों ने बताया है कि वरुण गांधी निर्दलीय चुनाव लड़ सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो उन्हें कांग्रेस और समाजवादी पार्टी दोनों का ही समर्थन भी मिल सकता है। वरुण गांधी मौजूदा समय में पीलीभीत से बीजेपी के टिकट पर सांसद हैं। सूत्रों की मानें तो वरुण गांधी 2024 का लोकसभा चुनाव या तो अमेठी से या फिर सुल्तानपुर सीट से लड़ सकते हैं। बता दें कि सुल्तानपुर सीट से उनकी मां मेनका गांधी वर्तमान में बीजेपी के टिकट पर सांसद हैं। पीएम नरेंद्र मोदी के पहले कार्यकाल में मेनका गांधी केंद्र में मंत्री भी थीं, लेकिन दूसरे कार्यकाल में उन्हें मंत्री नहीं बनाया गया। इसके बाद से ही मेनका और वरुण गांधी पार्टी के कार्यक्रमों से भी दूर ही नजर आए।

हालांकि मेनका गांधी की तरफ से इस को लेकर कोई बयान तो नहीं आया, बहरहाल वरुण गांधी प्रदेश की योगी सरकार और केंद्र सरकार पर सवाल खड़े करते दिखे। अब कयास लगाए जा रहे हैं कि वरुण गांधी को क्या पार्टी टिकट देगी या नहीं? इस बीच वरुण गांधी लगातार अपने संसदीय क्षेत्र पीलीभीत भी पहुंचते रहे हैं। हाल ही में वे पीलीभीत पहुंचे थे, जहां उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से प्रधानमंत्री पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा था कि आज देश को एक ईमानदार नेतृत्व की जरूरत है। साथ ही उन्होंने पीलीभीत को अपना परिवार बताया।

अपनी मांगों को लेकर फिर निकले किसान, प्रशासन को लगाना पड़ी धारा 144

नई दिल्ली (एजेंसी)। लंबित मांगों को लेकर एक बार फिर किसान सड़क पर आ रहे हैं। इसके लिए उन्होंने आज और कल यानी 7-8 फरवरी को बड़ा प्रदर्शन करने की घोषणा की है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में किसानों के बड़े विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर गौतम बुद्ध नगर पुलिस प्रशासन ने 7 और 8 फरवरी को जिले में धारा 144 लागू कर दी है। पुलिस ने एक ट्रैफिक एडवाइजरी भी जारी की है, जिसमें किसानों के ट्रैक्टर मार्च निकालने को लेकर यात्रियों को नोएडा और ग्रेटर नोएडा में कुछ सड़कों पर मार्ग परिवर्तन के प्रति बताया गया है।जानकारी के मुताबिक, नोएडा और ग्रेटर नोएडा में किसानों के विरोध-प्रदर्शन के मद्देनजर गौतम बुद्ध नगर पुलिस ने मंगलवार को कहा कि दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 144 के तहत 7 और 8 फरवरी को प्रतिबंध लागू रहेंगे। पुलिस ने एक यातायात परामर्श भी जारी किया है, जिसमें किसानों के आंदोलन के मद्देनजर यात्रियों को दोनों शहरों में कुछ मार्गों पर बदलाव के प्रति आगाह किया गया।

नोएडा और ग्रेटर नोएडा में किसान समूह दिसंबर 2023 से स्थानीय विकास प्राधिकरणों द्वारा अधिग्रहीत अपनी भूमि के बदले अधिक मुआवजे और विकसित भूखंडों की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारी किसान समूहों ने अपनी मांगों पर दबाव बनाने के लिए बुधवार को किसान महापंचायत और गुरुवार को राष्ट्रीय राजधानी में संसद तक मार्च का आह्वान किया है। यातायात विभाग ने जनता को दादरी, तिलपता, सूरजपुर, सिरसा, रामपुर-फतेहपुर और ग्रेटर नोएडा की विभिन्न सड़कों पर मार्ग परिवर्तन के बारे में आगाह किया है।आपको बता दें कि किसान संगठन दिसंबर 2023 से नोएडा और ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण द्वारा अधिग्रहीत अपनी जमीनों के बदले बढ़ा हुआ मुआवजा और भूखंड देने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

न्यायमूर्ति चक्रधारी शरण सिंह ने उड़ीसा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ ली

कटक (एजेंसी)। न्यायमूर्ति चक्रधारी शरण सिंह ने बुधवार को उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में पद की शपथ ली। राज्यपाल रघुबर दास ने पुराने उच्च न्यायालय परिसर में आज आयोजित समारोह में न्यायमूर्ति सिंह को पद की शपथ दिलायी। न्यायमूर्ति सुभासिस तालापात्रा के 03 अक्टूबर- 2023 को सेवानिवृत्त होने के बाद न्यायमूर्ति सिंह को मुख्य न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था। न्यायमूर्ति बिद्युत रंजन सारंगी मुख्य न्यायाधीश सुभासिस तलपात्रा की सेवानिवृत्ति के बाद कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्यरत रहे। शपथग्रहण समारोह में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, पूर्व न्यायाधीश तथा उच्च गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। दिल्ली विश्वविद्यालय (कैंपस लॉ सेंटर) से एलएलबी की डिग्री प्राप्त करने के बाद न्यायमूर्ति सिंह 30 अक्टूबर 1999 को एक वकील के रूप में नामांकित हुए थे। वर्ष 1998 में उन्हें केंद्र सरकार के अतिरिक्त स्थायी वकील के रूप में नियुक्त किया गया

था और अक्टूबर 2001 तक इस पद पर बने रहे। उन्हें पटना उच्च न्यायालय में महालेखाकार कार्यालय की ओर से मामलों के संचालन के लिए भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा पैनल वकील के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होने 2006 में मध्यस्थ के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और उन्हें पटना उच्च न्यायालय मध्यस्थता केंद्र के लिए मध्यस्थ नियुक्त किया गया था।

'यह सभी समुदायों पर लागू होने वाला एक हिंदू कोड है', उत्तराखंड के यूसीसी बिल पर भड़के असदुद्दीन ओवैसी

नई दिल्ली। उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता विधेयक पेश किए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने आज कहा कि प्रस्तावित कानून और कुछ नहीं बल्कि सभी समुदायों पर लागू होने वाला एक 'हिंदू कोड' है। उन्होंने दावा किया कि विधेयक में हिंदुओं और आदिवासियों को छूट दी जा रही है। उन्होंने यह भी दावा किया कि यह संहिता मुसलमानों को एक अलग धर्म और संस्कृति का पालन करने के लिए मजबूर करती है, जो संविधान में निहित मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। एक्स पर ओवैसी ने लिखा कि उत्तराखंड यूसीसी बिल और कुछ नहीं बल्कि सभी के लिए लागू एक हिंदू कोड है। सबसे पहले, हिंदू अविभाजित परिवार को छुआ नहीं गया है। क्यों? यदि आप उत्तराधिकार और विरासत के लिए एक समान कानून चाहते हैं, तो हिंदुओं को इससे बाहर क्यों रखा गया है? क्या कोई कानून एक समान हो सकता है यदि वह आपके राज्य के अधिकांश हिस्सों पर लागू नहीं होता है उन्होंने कहा कि यूसीसी में द्विविवाह, हलाला, लिव-इन रिलेशनशिप नियमों के बारे में बात हो रही है लेकिन कोई भी इस तथ्य के बारे में बात नहीं कर रहा है कि हिंदू अविभाजित परिवार को बाहर रखा गया है। ओवैसी ने कहा कि अगर आदिवासियों को कोड से बाहर रखा गया है तो इसे एक समान नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि अन्य संवैधानिक और कानूनी मुद्दे भी हैं। आदिवासियों को बाहर क्यों रखा गया है? यदि एक समुदाय को छूट दी गई है तो क्या यह एक समान हो सकता है, अन्य संवैधानिक और कानूनी मुद्दे भी हैं। आदिवासियों को बाहर क्यों रखा गया है? यदि एक समुदाय को छूट दी जाए तो क्या यह एक समान हो सकता है? एआईएमआईएम नेता ने कहा कि यह संहिता मुसलमानों को दूसरे धर्मों की संस्कृति का पालन करने के लिए मजबूर करती है। ओवैसी ने कहा कि विधेयक केवल संसद द्वारा अधिनियमित किया जा सकता है क्योंकि यह शरिया अधिनियम, हिंदू विवाह अधिनियम, एसएमए, आईएसए का खंडन करता है।

कागजों पर हुआ मस्जिद का काम, रमजान के बाद रखेंगे नींव

-विवाद खत्म होने के बाद अयोध्या में मंदिर तो बन गया, लेकिन मस्जिद अब बनेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या में दशकों पुराना विवाद खत्म होने के बाद यहां भव्य राम मंदिर तो तैयार हो गया है, मगर उस जगह पर मस्जिद का काम शुरु ही नहीं हुआ है, जिसके निर्माण के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2019 में आदेश दिया था। बताया जा रहा है कि म?स्जिद का काम फिलहाल कागजों पर हो गया है, बाकी रमजान के बाद नींव रखी जाएगी। दरअसल, अयोध्या जिले के धन्नीपुर में बाबरी के बदले बनने वाली मस्जिद का नाम पैगंबर के नाम पर 'मुहम्मद बिन अब्दुल्ला मस्जिद' रखा गया है। मिली जानकारी के अनुसार धन्नीपुर में प्रस्तावित मस्जिद की जमीन पर जल्द शुरू होगा। बताया जा रहा है कि रमजान के बाद मस्जिद की नींव रख दी जाएगी। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, इंडो-इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन के सीनियर अधिकारी की मानें तो अयोध्या में भव्य मस्जिद का निर्माण इसी साल मई से शुरू कर दिया जाएगा और इसे पूरा होने में तीन-चार साल लगने की उम्मीद है। बताया जा रहा है कि रमजान के बाद मई महीने में एक शुभ मुहूर्त देखकर मस्जिद की नींव रख दी जाएगी।

हालांकि अब तक तारीख को लेकर कोई खुलासा नहीं हुआ है। अयोध्या में बनने वाली मस्जिद के प्रोजेक्ट की देखरेख कर रहे इंडो-इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन की विकास समिति के प्रमुख हाजी अराफात शेख के मुताबिक मस्जिद के लिए पैसे जुटाने के लिए एक क्राउड-फंडिंग वेबसाइट लॉन्च की जाएगी। गौरतलब है कि राम मंदिर के लिए भी क्राउड फंडिंग हुई थी और रामभक्तों ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की वेबसाइट और बैंक अकाउंट के जरिए दान किया था। दरअसल अयोध्या में राम मंदिर और मस्जिद को लेकर साल 2019 में एक ही वक्त में फैसला आया। अब सवाल उठता है कि अयोध्या में राम मंदिर बन गया, मगर मस्जिद की अब तक नींव भी क्यों नहीं रखी गई? इसे लेकर आईआईसीएफ यानी इंडो-इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन के सचिव अतहर हुसैन ने बताया कि मस्जिद के निर्माण में इस कारण देरी हुई है, क्योंकि वे डिजाइन में और ज्यादा पारंपरिक तत्व जोड़ना चाहते हैं।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने श्रीराम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर साल 2019 में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने विवादित स्थल को हिन्दू पक्ष को सौंपने का आदेश दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि विवादित भूमि पर राम मंदिर बनाया

जाएगा, वहीं मुस्लिम पक्ष को मस्जिद के निर्माण के लिए 5 एकड़ जमीन अलग जगह पर प्रदान की जाएगी, जो कि धन्नीपुर मस्जिद स्थल नवनिर्मित राम मंदिर से करीब 22 किमी दूर है। हाजी अरफात शेख ने कहा कि नई मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिद होगी, जिसके लिए मक्का के इमाम इस मस्जिद का शिलान्यास करने आएंगे। मस्जिद परिसर में चिकित्सा, शैक्षिक और अन्य सामाजिक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

पाकिस्तान में चुनाव से पहले दो-दो ब्लास्ट, 27 लोगों की हुई मौत

इस्लामाबाद । पाकिस्तान में चुनाव से एक दिन पहले बलूचिस्तान में दो ब्लास्ट हुए। पहला धमाका पिशिन शहर में हुआ। इसमें 15 लोगों की मौत हुई और 30 घायल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, यह धमाका निर्दलीय उम्मीदवार असफंद यार खान काकड़ के ऑफिस के बाहर हुआ। धमाके के दौरान काकड़ दफ्तर में मौजूद नहीं थे। वहीं, दूसरा धमाका बलूचिस्तान के ही किला सैफुल्लाह में जेयूआई-एफपार्टी के कैंडिडेट मौलाना अब्दुल वासे के ऑफिस के बाहर हुआ। हालांकि इस हमले में 12 लोगों की मौत हुई है, जबकि 10 घायल हुए हैं। दोनों धमाकों में कुल 27 लोगों की मौत हो गई है। पाकिस्तान में 8 फरवरी को आम चुनाव और सभी प्रांतों में चुनाव है। बलूचिस्तान के केयरटेकर सूचना मंत्री जन अचकजई ने बताया कि पहला धमाके की प्राइमरी इन्वेस्टिगेशन से पता चला है कि विस्फोटक सामान एक बाइक में रखा था। इस मामले की जांच की जा रही है। वहीं, दूसरे धमाके की वजह सामने नहीं आई है।

ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स को कैंसर हुआ

इंग्लैंड । ब्रिटेन के महाराजा किंग चार्ल्स को कैंसर हुआ है। बकिंघम पैलेस ने सोमवार को इसकी जानकारी दी। पैलेस ने एक बयान जारी कर बताया कि किंग चार्ल्स की सभी पब्लिक मीटिंग्स को कुछ समय के लिए टाल दिया गया है। पैलेस ने यह भी कहा कि किंग चार्ल्स अपने ट्रीटमेंट को लेकर बेहद सकारात्मक हैं। 75 साल के किंग चार्ल्स पिछले महीने ही तीन दिन के लिए अस्पताल में भर्ती थे। उनका प्रोस्टेट का ऑपरेशन हुआ था। उस समय उनके शरीर में किसी अन्य बीमारी के लक्षण दिखाई दिए थे। सोमवार को पैलेस ने बताया कि उन लक्षणों की जांच में एक प्रकार के कैंसर की पुष्टि हुई है। हालांकि, पैलेस ने यह भी बताया कि ये प्रोस्टेट कैंसर नहीं है।

बाइडेन का फिर मजाक उड़ा

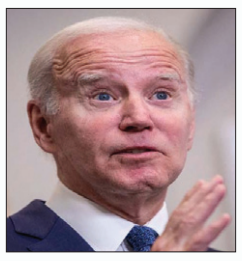

लास वेगास । अमेरिकी राष्ट्रपति की मेंटल फिटनेस पर एक बार फिर सवालिया निशान लगे हैं। नेवादा में डेमोक्रेटिक पार्टी के दौरान बाइडेन ने कई मिनिट तक फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रेंकोइस मिटरेंड से बातचीत का जिक्र किया। फ्रेंकोइस का 1996 में निधन हो चुका है। इस बीच एनबीसी न्यूज का एक नया सर्वे सामने आया है। इसके मुताबिक- प्रेसिडेंशियल कैंडिडेट की पॉपुलैरिटी रेस में इस वक्त बाइडेन पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से दोगुने वोट से पिछड़ रहे हैं। ट्रम्प रिपब्लिकन पार्टी में भी सबसे आगे चल रहे हैं।

जापान में बर्फजाल में फंसी 13 किलर व्हेल्स

टोक्यो । उत्तरी जापान के होकाइदो के पास 13 किलर व्हेल्स बर्फ के बीच में फंस गई हैं। क्योंकि नीचे भी बर्फ काफी ज्यादा है। इसकारण उन्हें रेस्क्यू करना मुश्किल है, क्योंकि बर्फ को तोड़कर वहां तक जाना पड़ेगा। 6 फरवरी 2024 की सुबह करीब 13 किलर व्हेल्स यानी ओर्का होकाइदो परफेक्टर के राउसू कस्बे में जमी बर्फ में फंस गईं। ये तैरती हुई बर्फ कहीं ऊंची कहीं नीची है। ये स्थिति समंदर के ऊपर भी है और नीचे भी। इसकारण ये मछलियां इस बर्फजाल से बाहर निकल नहीं पा रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक यह घटना 6 फरवरी की सुबह साढ़े आठ बजे के आसपास की है। पहले 10 व्हेल्स फंसी थीं। बाद में उसमें तीन और आकर फंस गईं। इनका वीडियो स्थानीय मछुआरों ने बनाया जो किसी तरह से उस इलाके में मछलियां पकड़ने गए थे। जिस बर्फजाल में ये मछलियां फंसी हैं, उसकी लंबाई-चौड़ाई एक किलोमीटर से ज्यादा है। ये मछलिया समंदर में तट से एक किलोमीटर दूर हैं। परेशानी ये है कि इस समय यहां का समंदर तैरते हुए मल्टी-लेवल बर्फ की परत से ढंका हुआ है। व्हेल्स तक जाकर उन्हें निकालना आसान रेस्क्यू नहीं होगा। वहीं मौसम विभाग ने सलाह दी है कि अगले 24 घंटों में समंदर की गर्मी की वजह से ये बर्फ थोड़ी और फैलेगी। तब ये मछलियां खुद से बाहर निकल आएगी। प्रो. मारी ने कहा कि तैरती हुई बर्फ का जाल इतनी आसानी से नहीं टूटता। न ही पिघलता है। क्योंकि उस बाहर की ठंडी हवा मजबूत करती है। ये बेहद सामाजिक प्राणी होते हैं। समूह में रहते हैं। परिवार का ख्याल रखते हैं। बड़ी किलर व्हेल्स अपने बच्चों को छोड़कर कहीं नहीं जाएगी।

'कृपया मेरी मदद करें...शिकागो में हमला किए गए भारतीय छात्र ने जारी किया वीडियो, पत्नी ने जयशंकर को लिखा पत्र

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका में कथित तौर पर हमले का शिकार हुए एक भारतीय छात्र ने रविवार को मदद की गुहार लगाते हुए कहा कि उस पर चार लोगों ने हमला किया और लूटपाट की, जिन्होंने उसे लात और मुक्कों से पीटा। हैदराबाद में रहने वाली उनकी पत्नी ने विदेश मंत्री एस जयशंकर को पत्र लिखकर उनका इलाज कराने में सहायता का अनुरोध किया है। इंडियाना वेस्लीयन यूनिवर्सिटी में मास्टर डिग्री के छात्र सैयद मजाहिर अली का एक वीडियो, जिसके चेहरे से काफी खून बह रहा है और वह मदद मांग रहे हैं, सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा किया गया है, साथ ही एक सीसीटीवी क्लिप भी है जिसमें एक व्यक्ति का चेहरा ढके हुए तीन लोगों द्वारा पीछा किया जा रहा है। उनकी पत्नी सैयदा रुकुलिया फातिमा रिजवी ने जयशंकर को लिखे पत्र में कहा कि उन्हें 4 फरवरी को शाम 6 बजे उनके पति के दोस्त का फोन आया कि मजाहिर अली पर शिकागो में उनके आवास के पास बहुत बुरी तरह हमला किया गया और उन्हें लूट लिया गया। उन्होंने कहा कि हालांकि उन्होंने बाद में अपने पति से संपर्क किया। उन्होंने मंत्री से अपने पति के इलाज में मदद करने और उनके और उनके तीन नाबालिग बच्चों के लिए अमेरिका में उनके साथ शामिल होने के लिए यात्रा व्यवस्था में सहायता के लिए अनुरोध किया। वीडियो में घबराए मजाहिर अली ने उस दर्दनाक अनुभव का वर्णन किया जब उनके माथे, नाक और मुंह पर खून लगा हुआ था। मैं खाना लेकर सड़क पर जा रहा था, तभी चार लोगों ने मुझे पकड़ लिया और लात-घूंसों से पीटा। किसी ने मेरा फोन भी ले लिया। एक मीडिया हाउस को दिए साक्षात्कार के एक अन्य वीडियो क्लिप में उन्होंने कहा कि यह कुछ ऐसा है जिसे मैं भूल नहीं सकता। उसने मुझ पर बंदूक तान दी. मेरे सिर पर दो घाव हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि पड़ोसी के सीसीटीवी से निगरानी फुटेज के अनुसार, हमलावर कार से बाहर कूद गए और किसी पीड़ित का इंतजार करने लगे।

स्पेन में बढ़ती हुई कीमतों और करों के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान किसानों ने एपी हाइवे को जाम कर दिया।

भारत से केले और पपीता खरीदना चाहता है रूस, अमेरिका और इक्वाडोर की डील के बाद चर्चा हुई तेज

वाशिंगटन। भू-राजनीतिक तनाव के कारण व्यापार संबंधों में बदलाव के तहत रूस ने पहले उसके केला के आपूर्तिकर्ता इक्वाडोरके साथ मतभेद के बीच भारत से केले की खरीद शुरू की है। यह कदम संयुक्त राज्य अमेरिका से परिष्कृत हथियारों के लिए रूस निर्मित सैन्य उपकरणों का आदान-प्रदान करने के इक्वाडोर के फैसले के मद्देनजर आया है। जनवरी में रूस को भारत से केले की पहली खेप मिली, जिसकी डिलीवरी फरवरी के अंत में होनी थी। रूसी कृषि निगरानी संस्था, रोसेलखोज़्नादज़ोर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि रूसी बाजार में भारतीय केले के निर्यात की मात्रा बढ़ेगी, जो भारतीय केले के आयात पर बढ़ती निर्भरता का संकेत है। अपने पर्याप्त केले उत्पादन के लिए पहचाने जाने वाले भारत ने रूस को आम, अनानास, पपीता और अमरूद जैसे अतिरिक्त फल निर्यात करने की इच्छा भी दिखाई है। रोसेलखोज़्नदज़ोर ने हाल ही में कीट पाए जाने के कारण इक्वाडोर की पांच कंपनियों से केले का आयात रोक दिया है। हालाँकि, इक्वाडोर के खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण ने इसका विरोध करते हुए कहा कि रूस को भेजे गए शिपमेंट के केवल एक छोटे से हिस्से में कीड़े थे, जिससे कोई महत्वपूर्ण खतरा नहीं था। हालाँकि रूसी अधिकारियों ने भारत से केले आयात करने के निर्णय को सीधे तौर पर इक्वाडोर और अमेरिका से जुड़े राजनयिक घर्षण से नहीं जोड़ा है, लेकिन जिन देशों के साथ उसकी असहमति है, उनसे खाद्य आयात को सीमित करने का रूस का दृष्टिकोण अच्छी तरह से प्रलेखित है।

मुकदमों में छूट से इनकार करने वाले अपीलीय अदालत के आदेश को चुनौती देंगे ट्रंप

वाशिंगटन (एजेंसी)। पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपीलीय अदालत के उस फैसले के खिलाफ अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करने का फैसला किया है, जिसने उनके सभी राष्ट्रपति प्रतिरक्षा बचाव को खारिज कर दिया था। यह देखते हुए कि चुनाव सिर्फ 10 महीने दूर हैं, अपील अदालत ने देरी को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट में अपील के लिए एक समय सीमा निर्धारित की।

अपील अदालत की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए ट्रम्प शीघ्र ही शीर्ष अदालत में अपील कर रहे हैं। अभियान के प्रवक्ता स्टीवन चेउंग के एक बयान के अनुसार, पूर्व राष्ट्रपति इस फैसले से 'सम्मानपूर्वक असहमत' हैं। चेउंग ने कहा कि 'पूर्ण प्रतिरक्षा के बिना, अमेरिका का राष्ट्रपति ठीक से काम नहीं कर पाएगा।'

ट्रम्प सुप्रीम कोर्ट का रुख करेंगे, जहां वह उम्मीद कर सकते हैं कि रूढ़िवादी बहुमत - जिनमें से तीन सदस्य उन्होंने नियुक्त किए हैं - उनके पक्ष में फैसला सुनाएंगे।

संघीय अपील अदालत ने मंगलवार को आपराधिक आरोपों के चलते राष्ट्रपति की छूट हासिल करने की ट्रम्प की क्षमता को नकारने का फैसला सुनाया, जो पूर्व राष्ट्रपति के लिए नया कानूनी झटका है। भले ही वह 2024 के चुनाव में सबसे संभावित जीओपी उम्मीदवार बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, निक्की हेली के रूप में आखिरी महिला उसके सामने डटी हुई हैं।

डी.सी. सर्किट के लिए अमेरिकी अपील न्यायालय के तीन-न्यायाधीशों के पैनल द्वारा सर्वसम्मत निर्णय में कहा गया कि ट्रम्प 2020 के राष्ट्रपति चुनाव को पलटने के अपने प्रयासों और 6 जनवरी 2021 को कैपिटल (जहाँ अमेरिकी संसद स्थित है) में हिंसक विद्रोह से जुड़े आरोपों के खिलाफ बचाव के रूप में प्रतिरक्षा का आह्वान नहीं कर सकते।

मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि पैनल ने 'पूर्व राष्ट्रपतियों के संघीय आपराधिक मुकदमों के लिए एक स्पष्ट बचाव के रूप में और ट्रम्प के विशेष मामले में लागू होने पर' प्रतिरक्षा के लिए सभी तीन संभावित आधारों को खारिज कर दिया।

डीसी में अपील न्यायालय ने यह फैसला सुनाते हुए कि प्रतिरक्षा पर निर्णय लेना उसके अधिकार क्षेत्र में है, उन प्रमुख आधारों को खारिज कर दिया जिन पर ट्रम्प की कानूनी टीम ने अपना बचाव किया था, जिससे यह मुद्दा पूरी तरह से विफल हो गया।

अदालत की राय थी, 'अभियोग में आरोप लगाया गया है कि ट्रम्प ने सामान्य प्रयोज्यता के आपराधिक कानूनों का उल्लंघन किया है।'

'ट्रम्प के पास संघीय आपराधिक कानून की अवहेलना करने के लिए कोई कानूनी विवेकाधीन अधिकार नहीं है और वह अपने आचरण के लिए अदालत में जवाबदेह हैं।'

कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि ट्रंप के सामने दो विकल्प हैं। पहला विकल्प दोबारा सुनवाई के लिए कहने का है, और दूसरा डीसी में फुल सर्किट कोर्ट से मामले पर पुनर्विचार करने या सुप्रीम कोर्ट में अपील करने के लिए कहने का। ट्रम्प द्वारा प्रयोग किए जाने पर ऐसे विकल्प मामले को लटकाने में सफल होंगे। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि अपील पैनल ने उस संभावना पर विचार किया है और ऐसी देरी को रोकने के लिए कदम उठाया है।

अदन की खाड़ी में एक ही दिन में दो जहाजों पर हूती विद्रोहियों का ड्रोन अटैक, अमेरिका से आ रहा था भारत

वाशिंगटन (एजेंसी)। मध्य पूर्व के जल क्षेत्र में यात्रा कर रहे दो जहाजों पर संदिग्ध यमन समर्थित हूती विद्रोही ड्रोन द्वारा हमला किया गया। ब्रिटिश सेना के यूनाइटेड किंगडम मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस ने कहा कि पहला हमला लाल सागर के दक्षिणी हिस्से में, होदेइदा के यमनी बंदरगाह के पश्चिम में हुआ। जिसमें पुल पर जहाज की खिड़कियों को मामूली क्षति हुई। इसमें कहा गया है कि हमले से पहले एक छोटा जहाज जहाज के पास था। निजी सुरक्षा फर्म एंब्रे ने जहाज की पहचान बारबाडोस-ध्वजांकित, यूनाइटेड किंगडम के स्वामित्व वाले मालवाहक जहाज के रूप में की। कंपनी ने कहा कि जहाज पर सवार किसी को भी चोट नहीं आई।

यूकेएमटीओ ने बताया कि मंगलवार को यमन के दक्षिणी बंदरगाह शहर अदन के पास एक दूसरे जहाज पर हमला हुआ। एंब्रे ने इसकी पहचान मार्शल आइलैंड्स-ध्वजांकित, ग्रीक स्वामित्व वाले जहाज के रूप में की जो अमेरिका से भारत की ओर आ रहा था। एंब्रे ने कहा कि जहाज ने अपने स्टारबोर्ड की ओर से 50 मीटर दूर एक विस्फोट की सूचना दी। कोई चोट या क्षति की सूचना नहीं मिली। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के एक सैन्य प्रवक्ता, ब्रिगेडियर। जनरल याह्या सारी ने एक बयान में दावा किया कि विद्रोही बलों ने लाल सागर में दो अलग-अलग जहाजों, एक अमेरिकी और एक ब्रिटिश, पर हमला किया। उन्होंने दावे के समर्थन में कोई सबूत नहीं दिया।

हूतियों ने अदन के तट पर हमले के बारे में कोई दावा नहीं किया। द मॉर्निंग टाइड के मालिक, ब्रिटिश फर्म फुराडिनो शिपिंग ने एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि हमले में कोई भी हताहत नहीं हुआ और जहाज सिंगापुर की ओर आगे बढ़ रहा है। नवंबर के बाद से, हमास के खिलाफ गाजा में इजरायल के हमले को लेकर विद्रोहियों ने लाल सागर में जहाजों को बार-बार निशाना बनाया है। लेकिन उन्होंने अक्सर उन जहाजों को निशाना बनाया है जिनका इजराइल के साथ कमजोर या कोई स्पष्ट संबंध नहीं है, जिससे एशिया, मध्य पूर्व और यूरोप के बीच व्यापार के प्रमुख मार्ग में नौवहन खतरे में पड़ गया है।

अगर चुनाव विवादित रहे तो पाकिस्तान में उथल-पुथल मच जाएगी : रिपोर्ट

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में गुरुवार को होने वाले 10वें आम चुनाव से पहले इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप (आईसीजी) की एक रिपोर्ट में भविष्यवाणी की गई है कि चुनाव में चाहे कोई भी पार्टी जीते, उसकी वैधता को चुनौती मिलनी तय है। द न्यूज की खबर में रिपोर्ट के हवाले से बताया गया है कि प्रक्रिया में खामियों को दूर करने के अवसर तेजी से कम हो रहे हैं, इसलिए चुनाव के दिन मतदान पर विवाद हो सकता है। रिपोर्ट बताती है कि देश में गहरे ध्रुवीकरण के बीच उच्च न्यायपालिका ने यथोचित प्रतिस्पर्धी चुनाव के रास्ते में आने वाली कुछ बाधाओं को दूर कर दिया है, लेकिन दूसरी ओर, चुनाव आयोग के फैसले को सुप्रीम कोर्ट का समर्थन मिला है। पीटीआई को एक समान चुनाव चिह्न न दिए जाने से भयंकर विवाद छिड़ गया है। 'पाकिस्तान गहरे राजनीतिक ध्रुवीकरण और पूर्व प्रधान मंत्री इमरान खान की पीटीआई पर सैन्य कार्रवाई के माहौल में आम चुनाव करा रहा है। द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, आईसीजी एशिया के निदेशक हुआंग ले थू ने कहा, 'चुनाव आयोग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पीटीआई सहित सभी दल चुनाव लड़ें और सभी मतदाता, विशेषकर महिलाएं, अपना मतदान करने में सक्षम हों। एक विवादित मतदान आने वाली सरकार की वैधता को नुकसान पहुंचाएगा, जिससे 'राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता से निपटने के लिए उसके पास पर्याप्त संसाधन नहीं होंगे जिनका आना निश्चित है।' रिपोर्ट में कहा गया है, 'नकदी की कमी से जूझ रहे पाकिस्तान को बाहरी सहायता के निरंतर प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ एक नया, दीर्घकालिक समझौता महत्वपूर्ण होगा। लेकिन ऐसा समझौता राजनीतिक स्थिरता के अभाव में अर्थव्यवस्था को बचाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं होगा - कुछ ऐसा जो सत्ता के शांतिपूर्ण, विश्वसनीय हस्तांतरण के बिना यह छलावा होगा।'

आतंकियों ने थाने में घुसकर 10 पुलिसकर्मियों को उतारा मौत के घाट

करांची (एजेंसी)। आतंक की फैक्ट्री कहे जाने वाले पाकिस्तान में ही आतंकियों ने एक थाने में घुसकर दस पुलिस वालों को मौत के घाट उतार दिया। इस घटना में 6 लोग घायल हुए हैं। फिलहाल किसी आतंकी संगठन से हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।पाकिस्तान में पुलिसस्टेशन पर आतंकी हमला हुआ है। सोमवार को एक पुलिस थाने पर भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों ने लागातार गोलीबारी की और ग्रेनेड से हमला किया। इस हमले में 10 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई। वहीं अन्य 6 बुरी तरह घायल हो गए। घायलों का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है।

अभी तक किसी आंतकी संगठन से हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। मामले में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह हमला खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के डेरा इस्माइल खान जिले में दरबान तहसील के चोडवान पुलिस थाने में हुआ। अभी तक किसी भी संगठन ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। रिपोर्ट के अनुसार, हमला स्थानीय समायानुसार लगभग तीन बजे (भारतीय समयानुसार सुबह 3.30 बजे) हुआ। सबसे पहले आंतकियों ने निशाना लगाकर सिपाहियों को निशाना बनाया। इसके बाद वे पुलिस स्टेशन में घुस गए। जिसके बाद और अधिक सिपाहियों पर हमला किया।बता दें कि पाकिस्तान में 8 फरवरी को आम चुनाव होने वाला है। गोलीबारी की खबर से पाकिस्तान के लोग दहशत में हैं। मौके पर भारी फोर्स तैनात है।

मामले में पुलिस उपाधीक्षक मलिक अनीस उल हसन ने कहा, पुलिस स्टेशन की बिल्डिंग में घुसने के बाद आतंकवादियों ने बम का इस्तेमाल किया। जिससे अधिक संख्या में सिपाही घायल हुए। इतना ही नहीं बुधवार को खैबर-पख्तूनख्वा में एक नेशनल असेंबली उम्मीदवार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। उसी दिन बलूचिस्तान प्रांत में एक अन्य राजनीतिक नेता की उनकी पार्टी के चुनाव कार्यालय में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जिला पुलिस अधिकारी नासिर महमूद ने कहा, ''भारी हथियारों से लैस आतंकवादी पहले से घात लगाकर बैठे थे। हमले में हमने अपने 10 जवानों को खो दिया, जबकि छह अन्य घायल हो गए।''

हमास संघर्ष विराम पर राजी, इस्राइल को अमेरिका देगा कतर का संदेश

यरुशलम (एजेंसी)। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा है कि हमास संघर्ष विराम पर राजी हो गया है। अब इसकी जानकारी इस्राइल को देंगे। बता दें कि हाल ही ब्लिंकन ने युद्ध को स्थायी रूप से समाप्त करने की मांग करते हुए मध्य पूर्व का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल-थानी से मुलाकात की। बता दें कि हमास और इस्राइल के बीच जंग में अब तक दोनों पक्षों के हजारों लोगों की मौत हो गई है। जहां इस्राइल ने हमास को पूरी तरह खत्म करने का संकल्प लिया है। वहीं, अब एक अच्छी खबर आई है। कतर का कहना है कि हमास ने गाजा में युद्धविराम की ताजा योजना और बंधकों को छोड़े जाने के मुद्दे पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने हाल ही में युद्ध को स्थायी रूप से समाप्त करने की मांग करते हुए मध्य पूर्व का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल-थानी से मुलाकात की। मुलाकात के बाद थानी ने बताया कि हमास ने संघर्ष विराम प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

इधर हमास ने पुष्टि की कि उसने कतर और अन्य मध्यस्थों के बीच पेरिस में एक सप्ताह पहले किए गए

प्रस्तावों पर अपनी प्रतिक्रिया दी थी। गौरतलब है कि कतर ने लंबे समय से हमास के साथ मध्यस्थता की है। वह अमेरिका और मिस्र के साथ मिलकर संघर्ष विराम के लिए काम कर रहा है, जिसमें लड़ाई को लंबे समय तक रोकना और गाजा में अभी भी रखे गए 100 से ज्यादा बंधकों को छुड़ाना शामिल है। इधर पीएम थानी ने पत्रकारों को बताया कि हमें बंधकों के संबंध में समझौते को लेकर हमास से जवाब मिला है। जवाब में कुछ टिप्पणियां शामिल हैं, लेकिन सामान्य तौर पर यह सकारात्मक है।

इधर एंटनी ब्लिंकन ने पुष्टि की कि अधिकारियों को हमास की प्रतिक्रिया मिल गई है। वह बुधवार को इस्राइल के नेताओं को देश का दौरा करने पर जानकारी देंगे। अमेरिकी विदेश मंत्री ने दिन की शुरुआत में मिस्र के अधिकारियों से भी मुलाकात की और सोमवार को वह सऊदी अरब में थे। वह इस्राइल और हमास के बीच युद्धविराम के समझौते पर जोर देने के लिए यह दौरा कर रहे हैं। वहीं अब हमास ने बंधकों के समझौते पर आधिकारिक तौर पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। हालां?कि गाजा में लड़ाई रुकने में अभी समय लगेगा।

क्या है इद्दत....जिसकी नाफरमानी के कारण इमरान और बुशरा को हुई 7 साल की सजा

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान में गुरुवार को आम चुनाव हैं। इसके पहले पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को गैरकानूनी तरीके से शादी पर 7 साल की सजा सुनाई है। कोर्ट ने इमरान और उनकी पत्नी बुशरा के खिलाफ इद्दत मैरिज केस में फैसला सुनाकर कहा कि ये शादी गैर-इस्लामिक है। बात दें कि पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान को चुनाव से पहले एक के बाद एक तीन मामलों में सजा हो गई। ताजा केस अवैध शादी का है। मामले को खुद बुशरा के पूर्व पति खावर फरीद मानेका कोर्ट तक लेकर गए थे। उनका कहना था कि इमरान से रिश्ते के समय बुशरा का इद्दत का समय चल रहा था। दोनों ने इसी पीरियड में निकाह किया, जो पाकिस्तान पीनल कोड की धारा 496 के तहत अपराध की श्रेणी में आता है।

क्या है इद्दत

बात दें कि यह इंतजार की अवधि है। इसका पालन किसी महिला को तब करना होता है, जब उसके शौहर की मौत हो जाए। इस दौरान महिला एक निश्चित वक्त तक शादी नहीं कर सकती है। ये समय करीब 4 महीने लंबा होता है। तलाक के बाद भी ये वेटिंग पीरियड मानना जरूरी है। इस अवधि को कुरू कहते हैं, हालांकि बोलचाल में इद्दत ही कहा जाता है। दरअसल इद्दत का मुख्य उद्देश्य ये सुनिश्चित करना है कि इस दौरान महिला गर्भवती नहीं। अगर इद्दत का समय पूरा किए बगैर महिला शादी कर ले और इसके बाद प्रेग्नेंसी सामने आए तब ये हो सकता है कि बच्चे की वैधता पर शक हो। इसी शक को दूर करने के लिए इद्दत की अवधि लंबी रखी गई ताकि प्रेग्नेंसी (अगर हो तो) पता लग जाए। इसमें ये भी है कि गर्भवती होने पर महिला बच्चे के जन्म तक नई शादी नहीं कर सकती।

एफआईएच प्रो लीग से युवाओं को सर्वश्रेष्ठ टीमों की शैली का पता चलेगा: हरमनप्रीत

भुवनेश्वर ।

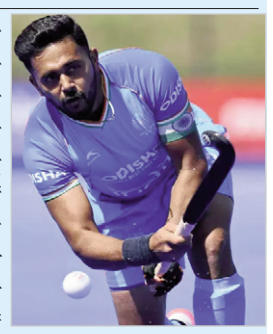

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा है कि दस फरवरी से शुरु हो रहे एफआईएच प्रो लीग चरण में खेलने का लाभ भारतीय टीम को मिलेगा। हरमनप्रीत के अनुसार इससे भारतीय टीम के युवा खिलाड़ियों को विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीमों की शैली का पता चलेगा। हरमनप्रीत ने कहा कि हम हाल ही में दक्षिण अफ्रीका के एक सफल दौरे से वापस लौटे हैं वहां हमें प्रो लीग से पहले फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और नीदरलैंड के खिलाफ खेलने से अपने खेल की समीक्षा का अवसर मिला था। उन्होंने कहा कि इस बार कुछ युवा खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया गया है और यह उनके लिए विश्व की कुछ सर्वश्रेष्ठ टीमों की खेल शैली को जानने का एक अच्छा अवसर होगा। उन्होंने कहा कि हम प्रो लीग पर काफी ध्यान दे रहे क्योंकि इसे जीतने से हमें एफआईएच हॉकी विश्वकप 2026 के लिए सीधे प्रवेश मिलेगा। इसके साथ ही यह आयोजन पेरिस 2024 ओलंपिक की तैयारी में भी अहम भूमिका निभाएंगे। भारतीय टीम प्रो लीग के इस सत्र के अपने पहले मैच में 10 फरवरी को स्पेन से, उसके बाद 11 फरवरी को नीदरलैंड से खेलेगी। भारतीय टीम इसके बाद 15 फरवरी को ऑस्ट्रेलिया और 16 फरवरी को भुवनेश्वर चरण के आखिरी मैच में आयरलैंड से खेलेगी।

नए अध्याय के लिए तैयार हैं डेनिएल कोलिन्स

नई दिल्ली।

अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी डेनिएल कोलिन्स ने इस सीजन के अंत तक पेशेवर टेनिस से संन्यास लेने के अपने फैसले के बारे में खुलकर बात की है। उन्होंने लगातार यात्रा की मांगों और खेल के साथ जुड़ी गतिविधियों से दूर अधिक सामान्य जीवन में लौटने की अपनी इच्छा भी जाहिर की। 30 वर्षीय डेनिएल कोलिन्स विश्व नंबर एक इगा स्विएटेक से दूसरे दौर में हार के बाद पिछले महीने ऑस्ट्रेलियन ओपन में घोषणा की थी कि 2024 डब्ल्यूटीए टूर सीजन दौरे पर उनका अंतिम वर्ष होगा। मंगलवार को अबू धाबी में नाओमी ओसाका के खिलाफ शुरुआती दौर में सीधे सेटों में जीत के बाद उन्होंने अपने फैसले के बारे में विस्तार से बताया। कोलिन्स ने डब्ल्यूटीए वेबसाइट को बताया, इस साल की शुरुआत में छुट्टियों के आसपास मैंने फैसला किया कि यह मेरा आखिरी सीजन होगा। मैं इसे लेकर बहुत खुश हूं और इसका इंतजार कर रही हूं। कुछ अन्य खिलाड़ियों की तुलना में, मैं इतने लंबे समय तक दौरे पर नहीं रही। कुछ मायनों में ऐसा लगता है कि मैंने थोड़े दिन पहले ही खेलना शुरू किया है, तो कभी ऐसा लगता है कि मैं बहुत समय से खेल रही हूं। कोलिन्स ने कहा कि करियर के दौरान कई बार चुनौतियां आईं। खासकर स्थिर घरेलू जीवन के आदी खिलाड़ी के लिए यह आम बात है। मैं निश्चित रूप से अपने खेल से प्यार करती हूं। यह मजेदार भावनाओं का एक रोलरकोस्टर रहा है। हालांकि, इस दौरान ऐसा समय भी आता है जो मुश्किल होते हैं। उन्होंने आगे कहा, इस समय मुझे लगता है कि मैं अगले अध्याय के लिए तैयार हूं। मैं इसे लेकर वास्तव में उत्साहित हूं। मुझे एक अंतिम तिथि की आवश्यकता थी और इससे मेरे परिवार और दोस्तों को कुछ अंतिम टूर्नामेंटों में मेरा समर्थन करने का समय मिलेगा। मुझे लगता है कि यह वाकई खास होगा।

संक्षिप्त समाचार

एसए20 लीग रही है सफल : ग्रीम स्मिथ

युवा क्रिकेटरों को हुआ है लाभ

केप टाउन ।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान और एसए20 लीग कमिश्नर ग्रीम स्मिथ ने कहा है कि इस क्रिकेट लीग को उम्मीदों से ज्यादा सफलता मिली है। ये लीग आईपीएल की तर्ज पर ही शुरु की गयी है। इस लीग में दक्षिण अफ्रीका के लगभग सभी बड़े खिलाड़ी खेल रहे हैं। स्मिथ ने कहा कि इस लीग के प्रति लोगों का जबरस्त रुझान देखा गया है। साथ ही कहा कि इस एसए20 लीग से युवा क्रिकेटरों को लाभ हुआ है और उन्हें अपने कौशल को निखारने के साथ ही पैसे कमाने का भी अवसर मिला है। इस लीग ने प्रशंसकों को उत्साहित करने और सभी उम्र के नए दर्शकों को अपनी ओर मोड़ने में भी अहम भूमिका निभाई है। इस पूर्व कप्तान ने कहा कहा, एसए20 लीग शुरू करते समय हमारा लक्ष्य दक्षिण अफ़्रीकी क्रिकेट में सकारात्मकता लाना और उभरती प्रतिभाओं को वैश्विक मंच पर अपने कौशल दिखाने के लिए एक मंच प्रदान करना था। हम चाहते थे कि लीग खेल और मनोरंजन का मिश्रण हो, जिससे प्रशंसकों को मौका मिले। एसए20 की सफलता ने सभी उम्मीदों को पार कर लिया है। सभी छह स्थानों पर स्टेडियम खचाखच भरे हुए हैं, जो अक्सर क्षमता के करीब पहुंच जाते हैं।लीग की वैश्विक अपील बढ़ी है, जिसने दुनिया भर से प्रशंसकों को आकर्षित किया है।

ऋषभ अब शायद ही विकेटकीपिंग कर पायें : फारूख इंजीनियर

मुम्बई ।

भारत के दिग्गज विकेटकीपर रहे फारुख इंजीनियर ने कहा है कि आक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत अब शायद ही विकेटकीपर की भूमिका निभा पायेंगे। ऋषभ कार हादसे के बाद से ही अब तक खेल से दूर हैं। उनके अगले माह आईपीएल 2024 सत्र से खेल में वापसी की उम्मीदें हैं। वहीं पूर्व विकेटकीपर फारुख का मानना है कि ऋषभ वापसी पर शायद ही विकेटकीपिंग कर पायें। उनके अनुसार कार हादसे में इस क्रिकेटर को कई गंभीर चोटें आई हैं, जिसके कारण अब उनके लिए दोबारा विकेटकीपिंग करना संभव नहीं रहेगा। साथ ही कहा कि इस चोट के कारण वह अपने सिक्स सेंस खो चुके हैं जबकि विकेटकीपिंग में इसका होना बहुत जरूरी है। गौरतलब है कि 85 वर्षीय इंजीनियर को हाल ही में बॉम्बे जिमखाना ने सम्मानित किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ऋषभ अब भी टीम इंडिया के लिए बल्ले से मैच विजेता साबित होगा पर वह शायद ही विकेटकीपिंग कर पाये। इस पूर्व विकेटकीपर ने कहा कि जब मैंने ऋषभ के साथ हुए हादसे की खबर सुनी थी तो मैं बहुत निराश था। उम्मीद करता हूं अब वह बेहतर हो गया है। मुझे नहीं लगता कि अब वह बतौर विकेटकीपर खेल पाएंगे क्योंकि जब आप पैनापन खो देते हैं और सिक्स सेंस कमजोर हो जाता है तो विकेटकीपिंग करना संभव नहीं होता। साथ ही कहा कि उनकी बल्लेबाजी क्षमताएं शानदार हैं। उनमें बल्लेबाज के तौर पर खेल का रुख बदलने की क्षमता अब भी है। बतौर बल्लेबाज उनका आत्मविश्वास देखते ही बनता है। बिल्कुल मेरी तरह उन्होंने कहा था कि स्पिनरों को खेल में हावी नहीं होने देना चाहिए।

एसएएफएफ अंडर19 : दूसरे हाफ के ब्लिट्ज में भारत की महिला टीम फाइनल में पहुंची

ढाका।

यहां मंगलवार को बीएसएसएसएम के स्टेडियम में अपने अंतिम राउंड-रॉबिन मैच में भारत ने नेपाल को 4-0 से हराकर दक्षिण एशियाई फुटबॉल महासंघ (एसएएफएफ) अंडर-19 महिला चैंपियनशिप के फाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया। भारत अब गुरुवार को खेले जाने वाले फाइनल में मेजबान और गत चैंपियन बांग्लादेश से भिड़ेगा। यंग टाइग्रेसेस ने इससे पहले अपना पहला मैच भूटान के खिलाफ 10-0 से जीता था, इसके बाद बांग्लादेश के खिलाफ 0-1 से हार मिली थी। पहला हाफ गोलरहित रहने के बाद भारतीय लड़कियों ने दूसरे सत्र में शानदार प्रदर्शन करते हुए चार गोल दागे। नेहा, सिबानी देवी और सुलंजना राउल की भारतीय फॉरवर्ड पंक्ति ने बार-बार अंतराल पर प्रतिद्वंद्वी रक्षा को तोड़ दिया, नेपाल को दूसरी फिउड खेलने के लिए मजबूर होना पड़ा। विंगर नेहा ने अच्छा प्रदर्शन किया, जिसमें दूसरे हाफ में दो गोल भी शामिल थे, जबकि सुलंजना राउल और स्थानापन्न खिलाड़ी सिंडी टेमरुतपुई कोलनी ने देर से दो गोल करके भारत की आसान जीत सुनिश्चित कर दी। युवा बाघिनों ने फ्रंटफुट पर शुरुआत की, उनके अधिकांश हमले बाईं ओर से आए, जहां नेहा ने बढ़त बनाने के लिए अपनी गति का इस्तेमाल किया। उनके क्रॉस नेपाल की रक्षा के लिए लगातार खतरा बने हुए थे, जिनसे निपटने के लिए उन्हें काफी पसीना बहाना पड़ा। नेपाल की गोलकीपर लीला जोशी की भारत के केंद्रों से निपटने में असमर्थता ने भी बॉक्स में सामान्य ओवरलोड में योगदान दिया, क्योंकि उन्होंने शुरुआती आदान-प्रदान में गेंद को तीन बार गिराया। सुलंजना राउल, सिबानी देवी और पूजा, जो तीन मौकों पर करीब थीं, मौकों का फायदा उठाने में नाकाम रहीं। नेपाल की दक्षिणपंथी सेनू परियार के पास दोपहर का एकमात्र मौका था, जब उन्हें भारतीय रक्षापंक्ति के पीछे लगाया गया था, लेकिन उनके पास गोली चलाने के इरादे से आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त कोण नहीं था; अंततः उसे बेदखल कर दिया गया।भारत 54वें मिनट में फिर से शुरू होने के बाद सफलता पाने में सफल रहा, जब सिबानी के बाएं पैर के क्रॉस ने नेहा को सुदूर पोस्ट पर पाया, क्योंकि उसने बेहद संकीर्ण कोण से स्कोर करने के लिए इसे कीपर के पीछे धकेल दिया। उस लक्ष्य ने भारत को बहुत आत्मविश्वास दिया, क्योंकि नेपाल के लक्ष्य पर अधिक हमले हुए। पूजा ने दाहिनी ओर से बॉक्स में प्रवेश करते हुए नेपाल के गोलकीपर जोशी को पीछे छोड़ा और नेहा को पास दिया, जो लक्ष्य से चूक गई। घंटे के निशान पर राउल के एक शॉट को दिव्या यास्माली मागर ने लाइन से बाहर कर दिया। जैसे ही गेंद क्रॉसबार से बाहर आई, नेहा ने बॉक्स के अंदर से एक ब्लास्ट किया और सिबानी ने रिबाउंड से उसके शॉट को स्टैंड में भेज दिया। नेहा की दृढ़ता का दूसरी बार फल मिला जब घड़ी में 10 मिनट का विनियमन समय शेष होने पर, उसे स्थानापन्न अरीना देवी से पास मिला, जिसने खुद अपने मार्कर को साइड-स्टेप करने के लिए अच्छा प्रदर्शन किया था। हालांकि, क्रॉस करने के बजाय, नेहा ने बॉक्स के बाहर से अपना प्रयास किया, क्योंकि गेंद शीर्ष कोने में घुस गई।राउल, जिनके पास पूरे मैच में काफी मौके थे, ने अंततः 85वें मिनट में खेल का तीसरा गोल किया। आंदोलन, हमेशा की तरह, नेहा क्रॉस के साथ शुरू हुआ, जो सिबानी को सुदूर पोस्ट पर मिला। उसने अपने पहले स्पर्श के साथ इसे गोल के सामने वापस भेज दिया।

आक्रामक शैली अपनाने के प्रयास में विफल हो रहे रुट : कुक

लंदन ।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलिस्टेयर कुक ने कहा है कि अनुभवी बल्लेबाज जो रूट इस सीरीज में तेजी से रन बनाने का प्रयास करने के कारण विफल रहे हैं। कुक के अनुसार रुट धीमी गति से खेलते हैं पर वह कप्तान बेन स्टोक्स और कोच ब्रैंडन मैक्कुलम की आक्रामक रणनीति में फिट होने के लिए अपना स्वाभाविक खेल नहीं खेलते हुए जरुरत से ज्यादा तेज खेलने का प्रयास कर रहे हैं। इसी दौरान वह अपने शॉट संतुलन नहीं कर पा रहे हैं। इसी कारण वह अब तक बड़े स्कोर नहीं बना पाये हैं। इंग्लैंड ने पिछले कुछ समय से आक्रामक रणनीति अपना रखी है। ये रणनीति कोच मैक्कुलम के खेलने की शैली से जुड़ी है। कुक की कप्तानी में ही इंग्लैंड की टीम ने साल 2012 में भारत में टेस्ट सीरीज जीती थी. इसके बाद से ही कोई भी विदेशी टीम भारतीय धरती पर टेस्ट सीरीज नहीं जीत पायी है।

कुक ने कहा कि रूट दूसरे टेस्ट मैच की दूसरी पारी में हर गेंद पर प्रहार करना चाहते थे। वह 10 गेंदों में 16 रनों की पारी के दौरान कभी सहज नहीं दिखे। कुक ने से कहा, 'वह सभी प्रारूपों में इंग्लैंड का अब तक के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से एक है पर वह आक्रामक शैली में ढ़लने के दौरान संघर्ष करता हुआ दिखता है।'

कुक ने कहा, 'वह टीम के दूसरे खिलाड़ियों को आक्रामक शॉट खेलते हुए देखते हैं, जो उन खिलाड़ियों की शैली के अनुरूप है पर रुट के नहीं। साथ ही कहा कि रूट ने टेस्ट में 11,500 से ज्यादा रन बनाए हैं। वह शानदार बल्लेबाज है। स्टोक्स और मैक्कुलम जो कर रहे हैं उसमें जगह बनाने की बेताबी में कभी-कभी वह आक्रामक और रक्षात्मक खेल का सही संतुलन नहीं बना पा रहे हैं।'

आने वाले मैचों में भारतीय बल्लेबाजों को बेहतर प्रदर्शन करना होगा : जहीर

शुभमन और यशस्वी के प्रयासों से जीते दूसरा टेस्ट

विशाखापत्तनम ।

पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान ने कहा है कि इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के आने वाले मैचों में भारतीय बल्लेबाजों को काफी प्रसास करने होंगे। जहीर ने कहा कि भले ही भारतीय टीम ने दूसरा टेस्ट जीत लिया है पर उसकी बल्लेबाजी ठीक नहीं कही जा सकती है। उसे ये जीत यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल की अच्छी बल्लेबाजी के कारण मिली है। यशस्वी और शुभमन ने जहां अच्छी बल्लेबाजी की। वहीं जसप्रीत बुमराह ने प्रभावी गेंदबाजी करते हुए मैच में कुल नौ विकेट लेकर भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। भारतीय टीम ने दूसरे टेस्ट को 106 रन से जीतकर पांच मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर पर ला दी है। जहीर ने कहा, 'जब आप टीम के प्रदर्शन को उम्मीद के अनुसार नहीं पाते हैं तो कुछ चिंताएं होना स्वाभाविक है। बल्लेबाजी एक ऐसी ही चीज है। हमने पूर्व में इन हालातों में इस तरह की पिचों पर भारतीय टीम को बेहतर प्रदर्शन करते हुए देखा है। उन्होंने कहा, 'आप अगर इंग्लैंड की दूसरी पारी पर ध्यान दें तो एक ही बल्लेबाज अर्धशतक लगा पाया था फिर भी उनकी टीम 300 रन के पास पहुंच गयी। वहीं भारतीय टीम की ओर से दूसरी पारी में शुभमन के शतक के बाद भी टीम 255 रन ही बना पायी। इस प्रकार देखा जाये तो सभी के प्रयासों से बड़ा स्कोर बनता है। इसको देखते हुए ये तय है कि अभी भारतीय बल्लेबाजों को और मेहनत करनी होगी।

बुमराह से निपटने का तरीका तलाशना होगा : मैकुलम

राजकोच ।

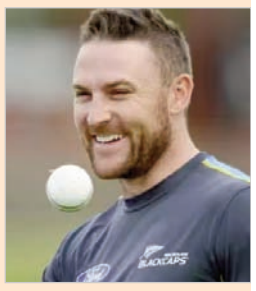

भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में शानदार गेंदबाजी करते हुए मेहमान टीम की बल्लेबाजी को ध्वस्त कर दिया था। बुमराह ने पहली पारी में 45 रन देकर छह विकेट लेकर मेहमान टीम को रक्षात्मक रुख पर मजबूर कर दिया था। भारतीय टीम ने इस प्रकार दूसरा टेस्ट जीतकर सीरीज में 1-1 से बराबरी हासिल कर ली है। इससे अब बचे हुए तीन मैचों के लिए इंग्लैंड टीम के कोच ब्रेंडन मैकुलम की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। मैकुलम का मानना है कि अब टीम को बुमराह से निपटने का रास्ता तलाशना होगा। बुमराह की घातक गेंदबाजी से ही इंग्लैंड की टीम पहली पारी में केवल 253 रन ही बना पायी। कोच ने कहा कि उनकी टीम सिद्धांतों पर विश्वास नहीं करती पर वे बुमराह को खेलने का तरीका ढूंढने की कोशिश करेंगे. मैकुलम ने कहा, '' हम वास्तव में सिद्धांतों पर काम नहीं करते हैं। हम यह तय कर रहे है कि हमारे खिलाड़ी मौजूदा समय में रहे और वे अपने तरीके पर भरोसा करे। वे इस मामले में मुझसे कहीं बेहतर हैं और वे इस पर काम करेंगे कि इससे निपटने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। इस बारे में उनका तरीका बिलकुल अलग हो सकता है। हम देखेंगे कि हम क्या हासिल कर पाते है। अभी के लिए हमें बुमराह की तारीफ करनी होगी और कहना होगा कि वह पहली पारी में काफी शानदार गेंदबाजी कर रहे थे।'' मैकुलम ने बुमराह के कौशल की तारीफ करते हुए कहा, ''उसके पास हर हालात में गेंदबाजी करने की क्षमत है। गेंद जब स्विंग होती है तो वह ज्यादा खतरनाक होता है। वह कमाल का गेंदबाज है। वह अपनी तरह का एकमात्र गेंदबाज है जो हवा से ही काफी स्विंग हासिल करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह बहुत अच्छा गेंदबाज हैं पर हमने भी काफी अच्छे गेंदबाजों का सामना किया है और उसी आधार पर हम आगे खेलने उतरेंगे।

दक्षिण अफ्रीका 20 लीग से बेहतर खिलाड़ी निकालना चाहते हैं स्मिथ

केपटाउन ।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ ने कहा कि वे भी आईपीएल की तरह ही दक्षिण अफ्रीका 20 लीग से भी राष्ट्रीय टीम के लिए हर प्रारूप के बेहतर खिलाड़ियों को तैयार करना चाहते हैं। स्मिथ इंग्लैंड के खिलाफ यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल जैसे युवा खिलाड़ियों के प्रदर्शन से बेहद प्रभावित दिखे। हर प्रारूप में खेलने वाले सबसे सफल खिलाड़ियों में रहे स्मिथ ने कहा, 'भारतीय क्रिकेट के पास काफी प्रतिभाएं हैं। साथ ही कहा कि यशस्वी और शुभमन की प्रतिभा आईपीएल से ही निखरी थी। इसके बाद से ही ये खिलाड़ी टेस्ट में भी अच्छा खेल रहे हैं। उन्होंने कहा, ' अब प्रतिभाएं कई मंचों से आ रही है और अगर आप में प्रतिभा है तो आप हर प्रारूप में खेल सकते हैं। स्मिथ का मानना है कि खेल के विकास और उसे आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिये टी20 जरूरी है। साथ ही कहा, 'मुझे टेस्ट क्रिकेट पसंद है और मैं चाहता हूं कि यह मजबूत रहे। टी20 क्रिकेट से खेल को नए दर्शक, नए खिलाड़ी और नए बाजार मिल रहे हैं।

दक्षिण अफीका क्रिकेट को मजबूत बनाने के लिये भी जरूरी है कि हमारी अपनी लीग बेहतर तरीके से काम करे। टीम के टेस्ट क्रिकेट में खराब प्रदर्शन से स्मिथ निराश हैं।

उन्होंने कहा कि हमारे पास अच्छे खिलाड़ी हैं पर किसी का भी 40 से ऊपर औसत नहीं है जबकि हमारे समय में छह खिलाड़ी ऐसे थे जिनका औसत 50 से ऊपर था। स्मिथ का मानना है कि टेस्ट क्रिकेट के सामने असल चुनौती आर्थिक ढांचा है। एमसीसी क्रिकेट समिति के सदस्य ने कहा, 'हर कोई शेड्यूल की बात करता है लेकिन असल में समस्या वित्तीय मॉडल है।

हम एमसीसी क्रिकेट समिति की बैठकों में भी बात करते हैं कि राजस्व साझा करने का मॉडल क्या होना चाहिये कि सभी देश आर्थिक रूप से इतने मजबूत हों कि टेस्ट क्रिकेट खेलना चाहें। वहीं खिलाड़ियों को लगता है कि टी20 में ज्यादा पैसा है और वे उसे अधिक महत्व देते हैं जिससे दूसरे प्रारूप प्रभावित होते है।

उदय सहारन को भारतीय टीम के अंडर-19 विश्वकप जीतने का भरोसा

जोहांसबर्ग ।

भारतीय अंडर19 टीम के कप्तान उदय सहारन को भरोसा है कि उनकी टीम अब 11 फरवरी को होने वाले खिताबी मुकाबले में जीत हासिल करेगी। भारतीय टीम ने इससे पहले एक रोमांचक सेमीफाइनल मुकाबले में मेजबान दक्षिण अफ्रीका को हराकर फाइनल में जगह बनायी है। इस मुकाबले में कप्तान उदय सहारन ने शानदार पारी खेलकर अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। अब अगर भारतीय टीम खिताब जीतती है तो ये उपलब्धि हासिल करने वाले सहारन छठे भारतीय कप्तान बन सकते हैं। भारतीय टीम का मुकाबला फाइनल में पाकिस्तान या ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले मैच की विजेता टीम से होगा। आईसीसी अंडर19 वर्ल्ड कप में अब तक पांच भारतीय कप्तानों को जीत मिली है। 36 साल पहले 1988 में पहला अंडर19 वर्ल्ड कप खेला गया था। तब से अब तक 14 बार यह टूर्नामेंट हुआ है। इनमें से 5 बार भारतीय टीम ने खिताब जीते हैं। वहीं अब भारतीय टीम के पास छठा खिताब जीतने का मौका भी है। अगर भारतीय टीम खिताब जीतती है तो सहारन, मोहम्मद कैफ के साथ उस एलीट क्लब के कप्तानों में शामिल हो जाएंगे, जिन्होंने भारतीय टीम को जीत दिलायी है। भारतीय टीम को पहली जीत मोहम्मद कैफ की कप्तानी में मिली थी। इसके बाद उसने विराट कोहली, उन्मुक्त चंद बने, पृथ्वी शॉ और यश धुल की कप्तानी में ये खिताब जीते हैं।

बुमराह की गति को नहीं समझ पाये हैं स्टोक्स : आर्थर्टन

विशाखापत्तनम ।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल आर्थर्टन ने कहा है कि टीम के वर्तमान कप्तान बेन स्टोक्स इस सीरीज में अब तक भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की गति को समझ नहीं पाये हैं। आर्थर्टन के अनुसार इसीलिए स्टोक्स अब तक बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं। आर्थर्टन के अनुसार स्टोक्स को इस सरीज में अब तक बुमराह की गति को समझने में परेशानी हुई है। उन्हें अब तक दो टेस्ट मैच की चार पारियों में दो बार बुमराह ने ही आउट किया है। आर्थर्टन ने कहा कि बुमराह की गति को समझना कठिन है और यही स्टोक्स के साथ हो रहा है। स्टोक्स तेज गेंदबाजी के खिलाफ बेहतर बल्लेबाज माने जाते हैं। इसके बाद भी वह बुमराह के खिलाफ रन नहीं बना पा रहे हैं। उन्होंने बुमराह को लेकर खेलने में जल्दबाजी की है। इसके साथ ही वह गति को समझने में भी असफल रहे हैं। जब उसने बुमराह को आउट किया तो ऐसा लगा कि गेंद नीची रही है पहले 2 टेस्ट में 15 विकेट लेने वाले बुमराह ने दूसरे टेस्ट की पहली पारी में 45 रन देकर छह विकेट लिए और उनकी गेंदबाजी का मुख्य आकर्षण ओली पोप को फेंकी गयी यॉर्कर गेंद थी। आर्थर्टन ने माना है कि इस प्रकार की गेंद पर कोई भी बल्लेबाज कुछ नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि यह शानदार यॉर्कर था। जिससे बल्लेबाज के पास विकल्प नहीं थे।

अपनी आलोचनाओं से तिलमिलाईं पूनम पांडे

सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरुक करने के लिए अपनी मौत की फर्जी खबर फैलाने को लेकर आलोचना का शिकार हो रही मॉडल और एक्ट्रेस पूनम पांडे ने एक बार फिर इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है और कहा मुझे मार डालो, मुझे सूली पर चढ़ा दो, मुझसे नफरत करो, लेकिन, जिसे तुम प्यार करते हो, उसे बचाओ। शबांग नाम की मार्केटिंग एजेंसी, जो पांडे के साथ मिलकर इस अभियान को चला रही थी, ने भी माफी जारी करते हुए कहा, हां, हम हाउटरफ्लाई के साथ मिलकर सर्वाइकल कैंसर के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए पूनम पांडे की पहल में शामिल थे। शुरुआत करने के लिए हम दिल से माफी मांगना चाहेंगे। विशेष रूप से उन लोगों के प्रति जो किसी भी प्रकार के कैंसर की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं या उनके प्रियजन कर रहे हैं।

हाउटरफ्लाई एक लाइफस्टाइल और एंटरटेनमेंट पोर्टल है, जो मिलेनियल विमेन को लक्षित करता है। नाटकीय घोषणा को समझाते हुए, जिसे कई लोगों ने सस्ते पीआर स्टंट के रूप में देखा, पांडे की एजेंसी द्वारा जारी बयान में कहा गया, हमारा एक्शन एकमात्र मिशन था कि सर्वाइकल कैंसर के बारे में जागरुकता बढ़ाना। साल 2022 में भारत में 1,23,907 सर्वाइकल कैंसर के केस और 77,348 मौतें दर्ज की गई। ब्रेस्ट कैंसर के बाद सर्वाइकल कैंसर भारत में मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं को प्रभावित करने वाली दूसरी सबसे ज्यादा घातक बीमारी है। आप में से बहुत से लोग अनजान हो सकते हैं, लेकिन, पूनम की अपनी मां ने कैंसर से बहादुरी से लड़ाई लड़ी है। इतने करीब से इसे देखने और पर्सनल लाइफ में इस तरह की बीमारी से लड़ने की चुनौतियों से गुजरने के बाद पूनम रोकथाम के महत्व और जागरुकता की गंभीरता को समझती हैं। खासकर जब वैक्सीन मौजूद हो। यह दावा करते हुए निष्कर्ष निकाला गया,इस देश के इतिहास में यह पहली बार है कि सर्वाइकल कैंसर शब्द 1,000 से ज्यादा हेडलाइन में है। यह दोहराते हुए कि इस पहल के कारण जिन लोगों को ठेस पहुंची है, उनसे वह माफी मांगती है, एजेंसी ने कहा, ‘हम समझते हैं कि हमारे तरीकों ने अप्रोच के बारे में बहस छेड़ दी होगी। हमें किसी भी परेशानी के लिए खेद है, लेकिन अगर इस कदम के बाद बहुत जरूरी जागरुकता फैलती है और मौतों को रोका जा सकता है, तो ये इसका वास्तविक प्रभाव होगा।

श्रद्धा कपूर ने शेयर किया फोटो दिया अपनी शादी का हिंट

साल 2024 की शुरूआत होते ही कई सेलेब्स की शादी की खबरें सामने आने लगी हैं। जहां एक तरफ रकुल प्रीत सिंह अपनी शादी को लेकर लाइम लाइट में बनी हुई हैं। तो वहीं इस लिस्ट में अब शक्ति कपूर की बेटी का नाम भी जुड़ने वाला है। श्रद्धा कपूर ने हाल ही में अपनी शादी की खबरों को हवा दी है। श्रद्धा कपूर अपनी दमदार एक्टिंग के लिए जानी जाती हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं और अकसर ही अपनी तस्वीरें और वीडियोज शेयर करती नजर आती हैं, जो देखते ही देखते वायरल हो जाती हैं। अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा कभी-कभी अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी चर्चा में आ जाती हैं। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी कुछ तस्वीरें शेयर की है और साथ ही एक सवाल भी पूछा है। जिसे देखने के बाद एक्ट्रेस की शादी की खबरें तेज हो गई हैं। एक्ट्रेस के आज के कैप्शन के बाद उनके फैंस अंदाजा लग रहे हैं कि एक्ट्रेस ने शादी का मन बना लिया है। दरअसल श्रद्धा कपूर ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। जिनमें वह बहुत ही सुंदर लग रही हैं। तस्वीरों में वह गुलाबी रंग की सूट पहने नजर आ रही हैं। उन्होंने सूट के साथ लंबे गोल्डन झुमके पहने हुए हैं और बिंदी भी लगाई हुई है। अपनी इस पोस्ट को शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा, ‘अच्छी लग रही हूं, शादी कर लूं?

श्रद्धा कपूर की फोटो पर एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा कि हां हां जरूर जल्दी-जल्दी। एक यूजर ने लिखा कि’ शादी के लिए पंडित चाहिए तो मुझे ही बुलाना।’ एक यूजर ने लिखा कि ‘ट्रैफिक जाम हो गया है, इस फोटो की वजह से।’ एक यूजर ने लिखा कि ‘मुझे 21 साल का तो होने दीजिए।’ एक यूजर ने लिखा ‘पापा शक्ति कपूर से पूछ रही हो या मुझसे। मैं तो तैयार हूं।’ श्रद्धा कपूर ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था कि मैं जब भी शादी करूंगी और जिससे भी करूंगी, मैं उस शख्स के साथ पूरी तरह क्रैक होने वाली हूं। श्रद्धा के वर्कफ्रंट की बात करें तो ‘तू झूठी मैं मक्कार’ के हिट के बाद श्रद्धा कपूर अपनी आगामी फिल्मों ‘स्त्री 2’ और ‘चंदू चैम्पियन’ की शूटिंग में बिजी हैं। ये फिल्में अगले साल तक रिलीज होंगी। अब फिल्मफेयर के करीबी सूत्रों की मानें तो श्रद्धा और राहुल मोदी की नजदीकियां बढ़ रही हैं। श्रद्धा के वर्क फ्रंट पर नजर डालें तो उनकी अगली फिल्म स्त्री 2 है, जिसमें वह राजकुमार राव के साथ नजर आएंगी। फिल्म की रिलीज डेट 31 अगस्त है। उनके पास नागिन और चालबाज जैसी फिल्में भी हैं। श्रद्धा की पिछली फिल्म पिछले साल रणबीर कपूर के साथ आई तू झूठी मैं मक्कार थी।

लापता लेडीज के लिए आमिर खान ने भी दिया था ऑडिशन

किरण राव फिल्म लापता लेडीज से 13 साल के बाद बतौर निर्देशक वापसी कर रही हैं। हाल ही में एक साक्षात्कार में किरण ने पर्दे के पीछे का एक दिलचस्प विवरण साझा किया। उन्होंने खुलासा किया कि उनके पूर्व पति आमिर खान ने फिल्म में रवि किशन की भूमिका के लिए ऑडिशन दिया था। हालांकि, उनके ऑडिशन टेप को देखने के बाद, किरण को लगा कि रवि इस भूमिका में आमिर से आगे निकल गए। जब आमिर से लापता लेडीज में एक विशेष भूमिका निभाने के बारे में पूछा गया, तो किरण ने स्वीकार किया कि उनके और आमिर के बीच इस बात पर बहुत चर्चा हुई थी कि क्या उन्हें रवि किशन द्वारा निभाया गया मनोहर का किरदार निभाना चाहिए। एक बातचीत में उन्होंने खुलासा किया कि आमिर ने इस भूमिका के लिए ऑडिशन दिया था और वे वास्तव में अच्छा था, लेकिन जब किरण ने उन्हें रवि किशन का ऑडिशन टेप दिखाया, तो आमिर इस बात पर सहमत हो गए कि किशन इस भूमिका के लिए उपयुक्त हैं।

किरण ने कहा, रवि किशन ने इस किरदार में पूरी तरह से आश्चर्यचकित कर दिया, क्योंकि आप नहीं जानते कि उनसे क्या उम्मीद की जाए। जब आमिर किसी भूमिका में होते हैं, तो वे अपने किरदार के लिए उम्मीदें स्थापित कर लेते हैं। आमिर उस फैसले पर पूरी तरह सहमत थे कि रवि इसे बेहतर तरीके से कर सकते हैं और शायद,वे इसके साथ पूरा न्याय नहीं कर पाए। किरण ने अपनी कास्टिंग पसंद और जानबूझकर फिल्म में कम जाने-पहचाने चेहरों को चुनने को लेकर भी विचार साझा किए। उन्होंने बताया, मैं वास्तव में भाग्यशाली थी, क्योंकि आमिर इस विचार का पूरी तरह से समर्थन किया था। उन्होंने यह भी दृढ़ता से महसूस किया कि कहानी को ऐसे चेहरों के साथ और प्रामाणिक बनाने की जरूरत है, जो इस ग्रामीण परिवेश में बहुत विश्वसनीय होने के लिए पर्याप्त ताजा हों और साथ ही इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश न करें। लापता लेडीज अनुभवी अभिनेताओं और नए चेहरों के मिश्रण के साथ एक ताजा सिनेमाई अनुभव देने का वादा करती है।

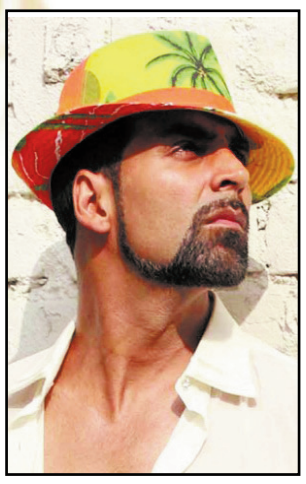

मैं लंबे समय से शिव भक्त हूं

अक्षय कुमार अपने यूजिक वीडियो शंभू के साथ एक शक्तिशाली अनुभव दिखाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं और उन्होंने कहा कि वह लंबे समय से शिव भक्त रहे हैं। 2023 की फिल्म ओएमजी 2 में भगवान शिव की भूमिका निभाने वाले अक्षय ने कहा- शंभू मेरे दिल में एक गहरी जगह से आता है, जो केवल जय श्री महाकाल के नाम से धड़कता है! मैं लंबे समय से शिव भक्त रहा हूं लेकिन हाल ही में उनके साथ मेरा संबंध और उनके प्रति भक्ति और भी गहरी हो गई है। एक्शन स्टार का कहना है कि भगवान शिव शक्ति हैं, प्रेम हैं और जरूरत पड़ने पर मदद भी करते हैं। अक्षय ने कहा, वह उद्धारकर्ता हैं, वह समर्पण हैं, जिसके प्रति हम सभी समर्पण करना चाहते हैं, वह सब कुछ हैं और अंत हैं। इस गीत के साथ, मैं बस उस अनंत चेतना को एक बूंद अर्पित करता हूं, जो शिव हैं! जय श्री महाकाल। शिव गान को बहुमुखी प्रतिभा के धनी अक्षय ने सुधीर यदुवंशी और विक्रम मॉन्ट्रोज़ के साथ गाया है। टाइस यूजिक के सीईओ मंदार ठाकुर ने कहा, हम इस दिव्य संगीत उद्यम में अक्षय कुमार के साथ सहयोग करके रोमांचित हैं।

संदीप को आमिर से आमने सामने करनी चाहिए बात

संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म एनिमल को लेकर हाल के दिनों में खूब विवाद हो रहा है। एनिमल साल 2023 की सबसे बड़ी हिट रही, फिल्म को दर्शकों ने खूब पसंद किया लेकिन फिल्म में महिला किरदार को लेकर कुछ लोगों ने इसकी आलोचना भी की। हाल ही में संदीप रेड्डी वांगा ने फिल्म की आलोचना करने को लेकर किरण राव पर प्रतिक्रिया दी थी। संदीप ने कहा था किरण राव को उनकी फिल्मों पर टिप्पणी करने से पहले आमिर खान के काम को देखना चाहिए। संदीप की इस प्रतिक्रिया का जवाब देते हुए किरण ने कहा, उन्होंने कभी भी उनकी किसी फिल्म का नाम नहीं लिया। किरण ने आगे कहा कि अगर संदीप को कुछ कहना तो उन्हें आमिर से आमने-सामने बात करनी चाहिए।

ड्रीम गर्ल बन दिलों पर राज करने को तैयार करिश्मा कपूर

बॉलीवुड अभिनेत्री करिश्मा कपूर जल्द ही मर्डर मुबारक के साथ अपना कमबैक करेंगी। सस्पेंस, कॉमेडी और रोमांस से भरपूर ये फिल्म 15 मार्च को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। आज नेटफ्लिक्स ने एक वीडियो साझा कर मर्डर मुबारक की घोषणा की है। निर्देशक होमी अदजानिया ने इसे निर्देशित किया है।

मैडॉक फिल्म्स द्वारा निर्मित इस फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। इसे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया जाएगा। मर्डर मुबारक अनुजा चौहान की किताब क्लब यू टू डेथ का स्क्रीन रूपांतरण है। मेकर्स आज फिल्म का एक वीडियो साझा किया है। यह वीडियो बेहद ही रोचक है। इसे देखने के बाद फिल्म का देखने का उत्साह और बढ़ गया है। करिश्मा कपूर के सथ इसमें इसमें सारा अली खान, विजय वर्मा, डिंपल कपाड़िया, संजय कपूर, टिस्का चोपड़ा और सुहैल नैय्यर जैसे बड़े कलाकार नजर आएंगे। ये सभी कलाकार फिल्म में कुशलतापूर्वक अपने किरदारों के गुप्त उद्देश्यों को छिपाते हैं। वहीं, पंकज त्रिपाठी भी इस फिल्म में अहम भूमिका में नजर आएंगे, जो एक गैर-पारंपरिक पुलिस वाले की भूमिका में नजर आएंगे। वह एक बाहरी व्यक्ति के रूप में उनकी दुनिया में कदम रखते हैं। वह जानते हैं कि वहां जो दिखता है उससे कहीं अधिक है। फिल्म के निर्देशक होमी अदजानिया ने कहा, मर्डर मुबारक उन अभिनेताओं का एक सिनेमाई मिश्रण है, जिन्हें विभिन्न शैलियों और पीढ़ियों से प्यार किया जाता है और मेरा विश्वास है कि उनमें से हर एक ने इन विलक्षण पात्रों को जीवन में लाने के लिए बहुत अच्छा काम किया है। इस फिल्म में वह जबरदस्त जादू है, जो इसे देखने के लिए बाध्य करता है। यह एक रंगीन हत्या का रहस्य है, जो आपको इसे दोबारा देखने पर मजबूर कर देगा। वहीं, मैडॉक फिल्म्स के निर्माता, दिनेश विजन ने कहा, यह छठा प्रोजेक्ट है जिसमें होमी और मैं काम कर रहे हैं और मैं एक अनोखी मनोरंजक कहानी ढूंढकर आगे बढ़ना चाहता था और फिर ऐसा हुआ। इसके अलावा, इस तरह के एक विविध समूह के साथ एक ऐसी स्क्रिप्ट को जीवंत करना, जो मेरे द्वारा पढ़ी गई सबसे विचित्र और अधिक मनोरंजक हत्या के रहस्यों में से एक है, मेरे लिए बहुत रोमांचक थी।

प्रभास की कल्कि 2898 एडी में खास भूमिका निभाएंगे जूनियर एनटीआर-नानी

नाग अश्विन के निर्देशन में बनी कल्कि 2898 एडी का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। प्रभास की यह फिल्म इस साल रिलीज होने के लिए तैयार है। फिल्म से जुड़ी छोटी से छोटी जानकारी फैंस का उत्साह बढ़ा देती है। फिल्म में प्रभास के साथ कई सितारे हैं और तमाम सितारों से सजी यह फिल्म दर्शकों को एक रोमांचक सिनेमाई अनुभव देने का वादा कर रही है। अब फिल्म में कुछ और अभिनेताओं के शामिल होने की खबर आ रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार, विजय देवरकोंडा फिल्म में अतिथि भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा ऐसी अटकलें हैं कि साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर और नानी की भी भूमिकाएं होंगी। यह अफवाह है कि जूनियर एनटीआर परशुराम का किरदार निभा सकते हैं, जबकि कहा जाता है कि नानी फिल्म के चरमोत्कर्ष से पहले कृपाचार्य की भूमिका निभाएंगे। अभिनेता विजय देवरकोंडा इवाडे सुब्रमण्यम में नाग अश्विन के साथ अपने पिछले सहयोग पर आधारित फिल्म में एक कैमियो कर रहे हैं। प्रशंसक बेसब्री से आधिकारिक पुष्टि का इंतजार कर रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि विजय की भूमिका कहानी में उत्साह बढ़ाएगी। इसके अतिरिक्त दुलकर सलमान के भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की अफवाह है। हालांकि, निर्माताओं की ओर से अभी तक इसकी पुष्टि नहीं की गई है। प्रभास के प्रशंसक कल्कि 2898 एडी में उनकी भूमिका का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जो समय यात्रा अवधारणाओं के साथ महाभारत महाकाव्य का एक विशिष्ट मिश्रण है। संतोष नारायणन ने संगीत का निर्देशन किया है। वहीं, अश्विनी दत्त और वैजयंती मूवीज के बैनर तले फिल्म का निर्माण हुआ है। यह फिल्म इस साल गर्मियों में सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

छत्रपति शिवाजी महाराज का रोल प्ले करेंगे शाहिद कपूर

2018 की हिस्टोरिकल ड्रामा फिल्म पद्मावत में राजा रावल रतन सिंह की बेहतरीन भूमिका निभाने के बाद शाहिद कपूर जल्द ही छत्रपति शिवाजी महाराज पर बन रही हिस्टोरिकल फिल्म में अहम किरदार निभाने वाले हैं। इस फिल्म को ओह माय गॉड 2 फिल्म के डायरेक्टर अमित राय डायरेक्ट करने वाले हैं। ये आने वाले दिनों की मेगा बजट फिल्मों में से एक होगी। हाल ही में आई रिपोर्ट के अनुसार, शाहिद कपूर, ओह माय गॉड 2 के डायरेक्टर अमित राय से इस प्रोजेक्ट पर चर्चा कर रहे हैं। ये हिस्टोरिकल फिल्म छत्रपति शिवाजी महाराज की जिंदगी पर आधारित होने वाली है, जिसे अश्विन वर्दे के बैनर वकाओ फिल्म्स द्वारा प्रोड्यूस किया जाएगा। दोनों के बीच पिछले कई दिनों से चर्चा जारी है, जो लगभग फाइनल स्टेज पर है। अमित राय की बात करें, तो उन्होंने 2023 में रिलीज हुई हिट फिल्म ओह माय गॉड 2 का डायरेक्शन किया है। इससे पहले उन्होंने एक हिंदी फिल्म रोड टू संगम का निर्देशन किया था। मराठी फिल्म तिंग्या के वे एसोसिएट डायरेक्टर रहे हैं। 2023 की पंजाबी फिल्म डियर जस्सी उन्होंने लिखी थी। छत्रपति शिवाजी महाराज पर बनी ये फिल्म अमित राय के निर्देशन की तीसरी फिल्म होगी।